॥ ॐ ॥

बुक बाईडिंग

(जिल्दसाज़ी)

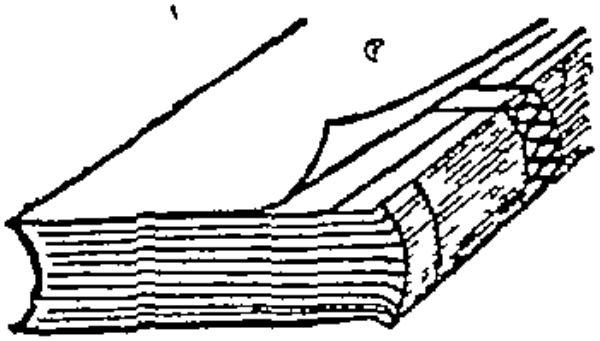

लेखक—

रामावतार 'वीर'

प्राप्ति स्थान —

टैकनिकल बुक डिपो

चावडी बाजार देहली ६

मूल्य ३) तीन रुपया

(सर्वाधिकार सुरक्षित हैं)

राजस्थान पुस्तक गृह

तीन सौ रुपया माहवार कमायें

घड़ी साज बन जाओ

अगर पुरानी घड़िया, टाईमपीस व क्लाको की मरम्मत करके दस पन्द्रह रुपया रोजाना कमाने की इच्छा रखते हो तो आज ही हमारी पुस्तक **प्रैक्टिकल घड़ी साजी** (लेखक—रामावतार 'वीर') मगवाकर घड़ी साज बन जाओ। और इन सब घड़ियों की मरम्मत शुरु कर दो, इस पुस्तक में घड़ी के हरएक पुर्जे व औजार का वर्णन चित्रों द्वारा समझाया गया है इस पुस्तक की मदद से मामूली लिखा पढ़ा मनुष्य भी हर प्रकार की घड़ी को खोलना, साफ करना, नये पुर्जे डाल कर चालू करना तथा क्लाकों रिस्ट-वाच टाईमपीस, जेब घड़ी आदि हर एक घड़ी की मरम्मत करके चालू कर सकता है, पढ़े लिखे आदमी भी फालतू समय में घर पर ही काम करके (१०) १५०) रुपया माहवार पार टाईम में ही कमा सकते हैं मूल्य ३॥) साढ़े तीन रुपया डाक खर्च ॥=) अलग।

मुद्रक—

यादव प्रिंटिंग प्रेस,

बाजार सीताराम, देहली।

दो शब्द

स्वतन्त्रता प्राप्त करने के पश्चात् सारा देश राष्ट्र निर्माण की ओर झुका हुआ है। जिसमे से खाद्य पदार्थों की उत्पत्ति और दूसरे शिल्प कला द्वारा देश की आवश्यकताओं की पूर्ति मुख्य है।

शिल्प-कला द्वारा उदर पूर्ति करना सर्व साधारण जनता के लिये एक सरल साधन है। इसलिये प्रत्येक युवक और युवती को शिल्प कला की ओर अवश्य ध्यान देना चाहिये। अन्य शिल्प कलाओं में से "Book Binding" अर्थात् जिल्दसाज़ी एक ऐसी कला है जो प्रत्येक नर नारी के लिए सीखने में सरल और अति लाभदायक है। स्त्रिया अपनी घर गृहस्थी के साथ २ घरों मे ही इस काम को सुविधापूर्वक कर सकती हैं और पुरुष तो भली प्रकार से इस कला द्वारा धन कमा ही सकते हैं। आज कल की इस स्थिति को देखते हुये परिवार के प्रत्येक व्यक्ति को कुछ न कुछ ऐसा कार्य करना चाहिए जिसके द्वारा परिवार को आर्थिक सहायता मिल सके और इस बेरोज़गारी के ज़माने में तो शिल्प कला का ज्ञान प्राप्त करना अति ही आवश्यक है।

जिल्दसाज़ी के काम के लिये न तो अधिक धन की ही आवश्यकता है और ना ही बड़ी दुकान की। केवल दस बीस रुपये में

ही यह धन्धा भली प्रकार चल सकता है और इस काम को किसी छोटी मोटी दुकान में या दुकान के थड़े पर ही चलाया जा सकता है। धीरे २ ज्यों ज्यों काम का बढ़ाव हो इसे भी बढ़ाया जा सकता है।

देश की स्थिति और बढ़ती हुई बेरोजगारी को दृष्टि में रखते हुए मैं "बुक बाईंडिंग" नामक पुस्तक लिखने पर प्रस्तुत हुआ हू। इस पुस्तक में जिल्दसाजी के प्रत्येक औजार प्रयोग करने, लई, सरेश आदि तैयार करने, और प्रत्येक प्रकार की जिल्दों के बनाने की विधि ऐसे सरल ढग से चित्रों सहित समझाई गई है कि एक सर्वधारण व्यक्ति भी इस पुस्तक को पढ़कर जिल्द बनाने की कला का भली प्रकार ज्ञान प्राप्त कर सकता है और थोड़े समय के अभ्यास से ही वह चार पाच रुपया प्रति दिन कमाने के योग्य हो सकता है।

जिल्दों के अतिरिक्त इस पुस्तक में सर्व प्रकार की कापियों, नोटबुकों, लिफाफे, फाइलों और डब्बे आदि बनाने की विधि भी भली भाति समझाई गई है। आशा है कि जनता इस पुस्तक से अवश्य लाभ उठा कर अपनी आर्थिक अवस्था को सुधारेगी और देश के बेरोजगारी रूपी भयानक रोग को दूर करके देश की उन्नति में सहायक होगी।

लेखक—

रामावतार 'वीर'

विषय-सूची

संख्या	विषय	पृष्ठ
१	कागज का इतिहास	५
२	जिल्द का इतिहास	६
३	जिल्द की आवश्यकता	६
४	जिल्दसाजी के लिए आवश्यक औजार	११
५	जिल्दसाजी के लिए आवश्यक सामान	२७
६	लई बनाना	२६
७	लई लगाने की विधि	३१
८	सरेश बनाना	३२
९	सरेश लगाने की विधि	३४
१०	जिल्दों के लिए सामान का चुनाव	३५
११	कागज गिनने की विधि	४२
१२	फारमों को मोड़ने की विधि	४३
१३	तह की हुई जुजों को इकट्ठा करने की विधि	४५
१४	फारमों मे चित्र और नक्शे लगाने की विधि	४६
१५	चित्रों को काटने की विधि	४७
१६	कट माऊन्ट लगने की विधि	४९
१७	पृष्ठों के अन्दर चित्रों को चिपकाना	४९
१८	नक्शे या चार्ट लगाना	५०
१९	सिलाई	५०
२०	तागे की सिलाई	५३
२१	सादी सिलाई	५३
२२	गाठ लगाने की विधि	५४

संख्या	विषय	पृष्ठ
२३	स्टिचिंग की सिलाई	५५
२४	बही खातों की सिलाई	६०
२५	जुजबन्दी	६१
२६	सादी जुजबन्दी	६४
२७	टक वाली सिलाई	६७
२८	जुजबन्दी का सिलाई में पत्ती का प्रयोग	६८
२९	डोरी वाली जुजबन्दी	७१
३०	तार की सिलाई	७५
३१	जाली या लपेट की सिलाई	७६
३२	तिर्छी सिलाई	७८
३३	कटाई	८०
३४	कागजों की कटाई	८०
३५	गत्तों की कटाई	८१
३६	शिकंजे में पुस्तकों की कटाई	८५
३७	मशीन द्वारा पुस्तकों की कटाई	८७
३८	जिल्द	९१
३९	जिल्दों की किस्में	९२
४०	स्टिच की सिलाई की जिल्द	९७
४१	मोटा टाइटल चिपकाना	९८
४२	पोस्तीन वाला टाइटल	९९
४३	पोस्तीन	१००
४४	सादी पोस्तीन	१०१

संख्या	विषय	पृष्ठ
४५	डबल पोस्टीन	१०१
४६	गत्ते की जिल्द बनाना	१०३
४७	बिना डोरी के जिल्द	१०६
४८	डोरी वाली जिल्द	११०
४९	जिल्द पर कोने लगाने की विधि	११४
५०	बन्नी वाली जिल्द	११८
५१	कापियों की सिलाई	१२०
५२	कापियों पर टाइटल लगाना	१२२
५३	बही खाते की सिलाई	१२३
५४	छोटी नोटबुक बनाने की विधि	१२६
५५	पुस्तकों की पीठ में गोलाई देने की विधि	१३२
५६	स्टिच की सिलाई में गोलाई देने की विधि	१३४
५७	सरेश द्वारा टेप चिपकाने की विधि	१३७
५८	टेप को गत्ते के अन्दर टक देकर चिपकाने की विधि	१३८
५९	गत्ते में डोरिया पिरोने की विधि	१४०
६०	फुल बाउन्ड पुस्तक बनाने की विधि	१४१
६१	चमडे का कवर चढ़ाने की विधि	१४२
६२	पृष्ठों के किनारे पर रग चढ़ाना	१४३
६३	जुज़बन्दी की कापिया	१४४
६४	बढ़िया प्रकार की नोटबुक	१४५
६५	बटुवे वाली नोटबुक	१४६
६६	लिफाफे	१४७

संख्या	विषय	पृष्ठ
६७	साधारण लिफाफे	१४८
६८	दफ्तरी लिफाफे	१४९
६९	दुकानदारी के लिफाफे	१५१
७०	बैंकों के लिफाफे	१५२
७१	माऊट लिफाफे	१५४
७२	नक्शे माऊट करने की विधि	१५५
७३.	परीक्षा के गत्ते बनाना	१५६
७४	आफिस फाइल	१५८
७५	डबल फाइल	१५९
७६	कानफिडैंशल फाइल	१६२
७७	कागज चिपकाने वाली फाईल	१६३
७८	कवर फाईल	१६५
७९	ब्लाटिंग पैड	१६६
८०	पूरे किनारे वाला ब्लाटिंग पैड	१७०
८१	फोल्डिंग ब्लाटिंग पैड	१७२
८२	राइटिंग पैड	१७५
८३	एलबम बनाने की विधि	१७७
८४	डबल कवर वाली एलबम	१७९
८५	स्लाईदार कवर वाली एलबम	१८०
८६	तसवीर मढ़ने की विधि	१८१
८७	डब्बे बनाने की विधि	१८४

बुक बाईंडिंग

जिल्द साज़ी

कागज का इतिहास

कागज का निर्माण कब और कैसे हुआ इस विषय में भारतवर्ष का इतिहास मौन है। कुछ लेखकों के विचार में पेपर (कागज) का नामकरण पेपरैस से हुआ। पेपरैस एक प्रकार का घास है जो नील नदी के किनारे के पास उत्पन्न होता है और मिश्र निवासी इसे कूट कर कागज बनाया करते थे। कुछ लेखक घास फूस और पत्तों से कागज बनाने वाला सबसे प्रथम मनुष्य तिसाईलून को मानते हैं। भारतवर्ष को कागज बनाने की विद्या चीन द्वारा प्राप्त हुई, ऐसा विचार भी कई स्थानों पर मिलता है और कई लोग तो चीन को ही कागज का निर्माता मानते हैं। उनका कथन है कि चीन ने सब से प्रथम पहली शताब्दी के आस पास पुराने चीथड़ों और गुदड़ियों से कागज तैयार किया। और चीन का तैयार किया हुआ कागज बाहर देशों में जाता रहा और कागज निर्माण की विधि को चीनियों ने सात सौ वर्ष तक छुपाये रखा। आठवीं शताब्दी में चीन के ऊपर अरबों ने आक्रमण किया और उस युद्ध में कई चीनी बन्दी बनाकर अरब

लाये गये। उन बन्दियों में से कुछ लोग कागज बनाने की विद्या का भली भांति जानते थे और उन्होंने बगदाद आदि देशों में कागज बनाने की विधि को फैलाया। धीरे धीरे यह विद्या कश्मीर और कश्मीर से सारे एशिया में फैली और उसके पश्चात् इस विद्या का प्रचार सारे यूरुप में हुआ। भारतवर्ष में सब से प्रथम कागज बनाने का कारखाना मध्यप्रान्त में बना। उस समय कागज हाथ से ही बनाया जाता था। धीरे धीरे वैज्ञानिकों ने कागज बनाने वाली मशीनों का भी निर्माण किया और आज मीलों लम्बे कागज मशीनों द्वारा तैयार होते हैं। भारतवर्ष में भी कागज बनाने वाली मशीनों का जाल बिछा हुआ है।

जिल्द का इतिहास

कागज की बनावट से पूर्व लोग अपने विचारों को भोजपत्रों, पत्थरों की शिलाओं, लकड़ी के तख्ता, पशुओं के चमड़े और रेशम के वस्त्र आदि पर लिखा करते थे। पत्थर की शिलाओं और लकड़ी के तख्तों को खोद कर लिखाई की जाती थी। लकड़ी के तख्तों को अन्दर से खोद कर उसमें मोम भर कर उसके ऊपर भी लिखा जाता था, ऐसा भी कई लेखकों ने लिखा है। भारतवर्ष का प्राचीन साहित्य अर्थात् सर्व प्रकार के धार्मिक ग्रन्थ भोजपत्रों पर ही लिखे गये थे और उन पत्रों को एक दूसरे के ऊपर रख कर उनके ऊपर और नीचे एक पट्टी रख दी जाती थी और कई बार उन भोजपत्रों के बीच में छेद करके उनमें तागा

पिरो दिया जाता था। जिस से उनका क्रम नहीं टूटता था और वह सुरक्षित भी रहते थे। वर्षों तक आश्रमों के विद्यार्थी इन्हीं पत्रों पर लिखे हुए श्लोकों को कण्ठस्थ किया करते थे। धीरे २ जब कागज का निर्माण हुआ तब कागजों पर लेखनी चलने लगी। पहले पहल कागज के पन्ने की चौड़ाई पर लकीरें लगाकर लिखाई की जाती थी और लिखाई पन्ने के एक ओर ही केवल होती थी और उस पन्ने को सुरक्षित रखने के लिए तीन प्रकार के साधन प्रचलित थे।

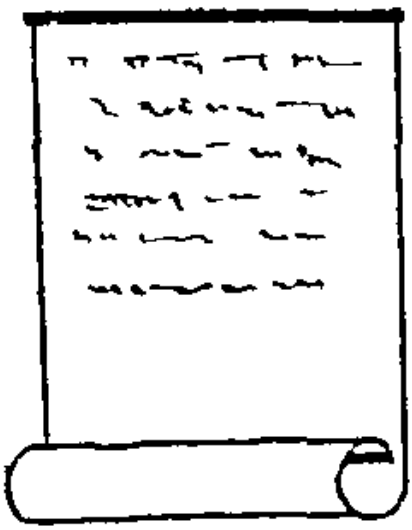

१ लम्बे कागद पर पिरोना

२ बांस की नलकी में कागज को रखना

(1) कागज गोल करके किसी बांस की नली में डाल कर नलकी के ऊपर लकडी की डाट लगा देना।

(2) किसी गोल लम्बी के रूल पर कागज को लपेट कर ऊपर से तागा बांध देना।

३ कागज को लकड़ी के ऊपर लपेट कर रखना

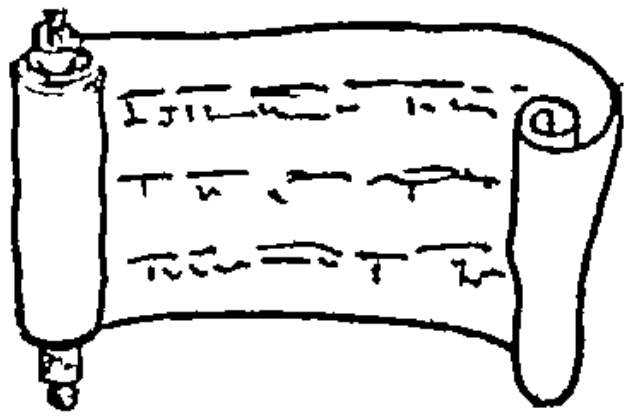

(3) कागज के ऊपर और नीचे लकड़ी की पट्टिया लगाकर उसे लपेट कर रख देना।

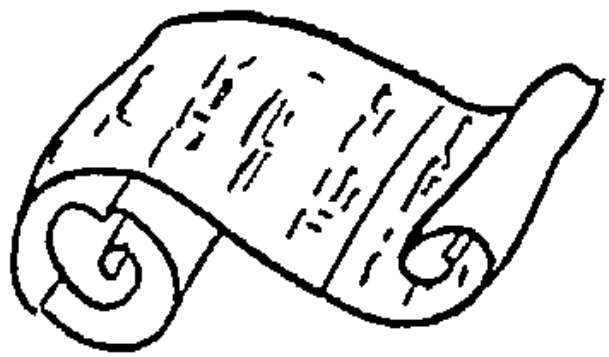

४ कागज के ऊपर नीचे लकड़ी की पट्टी लगाकर रखना

इसके पश्चात धीरे धीरे बड़े कागज
उन पर लोग लिखाई करने लगे और उन
भांति एक दूसरे पर रख पर
जानी थी। ज्यूं ज्यूं का
कागजों के दोनों ओर
कागज के ऊपर माने

रिवाज चल पड़ा और उन पन्नों को काटने के स्थान पर उन्हें मोड़ कर सुरक्षित रख दिया जाता था। कई बार उन मुड़े हुए कागजों को तागे द्वारा सीया भी जाता था और यह ही तह की हुई पन्नों की सिलाई ही आधुनिक जिल्दसाजी का मूल बीज है। इसके पश्चात् धीरे धीरे कागज मशीनों द्वारा तैयार होने लगा और कागजों के ऊपर छपाई होने लगी। जिल्द का पूरा समय निश्चित करना यदि असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। परन्तु कागजों की छपाई के बाद जिल्दसाजी का काम इतना बढ़ गया कि प्रत्येक पुस्तक के ऊपर जिल्द का होना आवश्यक समझा जाने लगा और जिल्दसाजों ने जिल्द बनाने के भिन्न भिन्न रूपों का अविष्कार किया और आज हमारे देश में पुस्तकों के ऊपर कई प्रकार की जिल्दें बाधी जाती हैं।

जिल्द की आवश्यकता

जिल्द का पुस्तक पर होना अति आवश्यक है। जिस प्रकार शिशरता उष्णता, धूप और धूल धक्का से बचाने के लिये शरीर को वस्त्रों द्वारा ढापा जाता है उसी प्रकार पुस्तक को चिरकाल तक सुरक्षित रखने के लिए उसके ऊपर जिल्द बनाई जाती है और जिस प्रकार शरीर ढापने के साथ साथ शरीर को सुन्दर बनाने और सजाने के लिये वस्त्रों से काम लिया जाता है और वस्त्रों की कढ़ाही भिन्न भिन्न प्रकार से की जाती है और बढ़िया से बढ़िया रंग बिरंगे और मुलायम वस्त्र प्रयोग में लाये जाते हैं, उसी प्रकार जिल्द भी

किताब के पन्नों को सुरक्षित रखने के साथ साथ पुस्तक की भी बढ़ाती है। जिल्द द्वारा सुरक्षित की हुई पुस्तकें आज सैकड़ों वर्ष पूर्व की लाइब्रेरियों में सुरक्षित रखी हुई हैं। पुस्तकों को देखने से ऐसा प्रतीत होता है जैसा कि आज ही छप कर आई हैं। पुस्तक की आयु बढ़ाने के लिये जिल्द का होना अति आवश्यक है और जिल्दसाज दर्जी की भांति पुस्तक को सुन्दर बनाने और सजाने का काम करता है और व्यापार की दृष्टि से भी पुस्तकों पर जिल्द का होना अति लाभदायक है और ग्राहक जिल्द वाली पुस्तकों को अधिक पसन्द करते हैं। जिल्द न की हुई पुस्तकों के पन्नों के कोने प्राय बल खाकर मुड़ जाते हैं और जल्दी फट जाते हैं। परन्तु जिल्द द्वारा सुरक्षित की हुई पुस्तक के कोने हमेशा सीधे रहते हैं और पन्नों के फटने का भय नहीं रहता। कई बार पुस्तक पर गीला मैला हाथ पड जाने से पुस्तक का रूप बिगड़ जाता है। परन्तु जिल्द की हुई पुस्तकों का असली रूप नहीं बिगड़ने पाता। बाहिर की जिल्द चाहे हाथ की रगड़ से खराब हो जाए परन्तु मूल पुस्तक की सुन्दरता वैसी ही रहती है। कई बार चिरकाल तक पडी हुई पुस्तकों को दीमक आदि लग जाती है और वह पुस्तकें सदा के लिये बेकार हो जाती हैं। दीमक आदि से भी बचाने के लिए पुस्तकों पर जिल्द का होना अति आवश्यक समझा जाता है। क्योंकि जितने समय में दीमक एक गत्ते को काटती है उतने समय में वह मूल पुस्तक को ही खा जाती है और यदि जिल्द करने वाली गई के अन्दर नीम

थोथा अधिक पडा हुआ हो तो दीमक गत्ते को नहीं चाटती जिस से पुस्तकें सुरक्षित रहती हैं।

जिल्दसाजी धन कमाने का एक विशेष साधन है और आज की सदी में जहाँ छापेखानों का जाल बिछा हुआ है और दिन रात के चौबीस घण्टों में धड़ाधड़ पुस्तकें छप छपकर तैयार हो रही हैं वहा जिल्द बाँधने वाले कारीगरों की भी अति आवश्यकता है। पढा लिखा या अनपढ व्यक्ति भी साधारण थोडे दिनों की मेहनत से पाच सात रु० रोज का कारीगर बन सकता है।

जिल्दसाजी के लिए आवश्यक औजार

प्रत्येक काम के लिए कुछ न कुछ विशेष प्रकार के औजार होते हैं जिनके द्वारा वह काम सुविधा पूर्वक हो सकता है। जिल्द साजी के लिए निम्नलिखित औजार आवश्यक हैं।

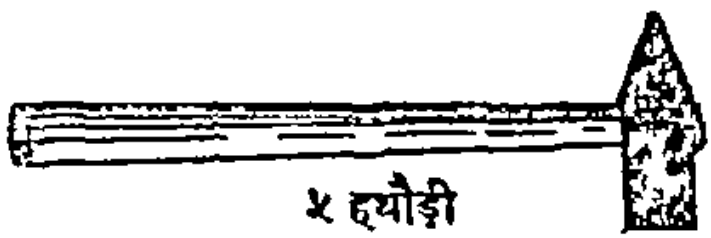

५ हथौड़ी

हथौडी

एक अच्छी मजबूत और आध सेर या तीन पाव वजन की हथौडी, जिसका एक भाग अधिक चपटा हो, जो आर और सूया आदि पर ठोकने के लिये अर्थात् पुस्तक में छेद करने के लिए होनी आवश्यक है।

सूये (आर)

पुस्तकों मे छेद करने के लिए दो सूये असल फौलाद के लोहे के बने हुये होने चाहिय जिनमें एक की बहुत बारीक और एक की नोक जरा मो होनी चाहिये।

६ आर

कैंची

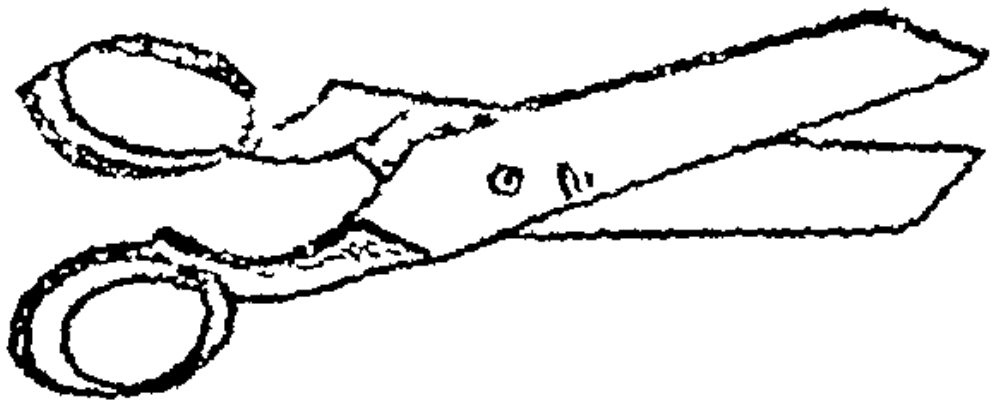

प्रत्येक कारीगर को दो प्रकार की कैंचिया रखनी चाहियें जि मे से एक छोटी कैंची अर्थात छः इंच ब्लेड वाली कागज काटने के लिए और दूसरी आठ नौ इंच ब्लेड वाली गत्ता काटने के लिए हो

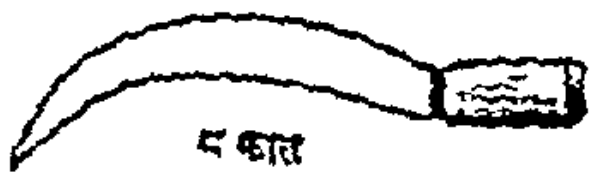

८ कात

कात

मोटे गत्तों को काटने के लिए दो प्रकार की कातों का होना आवश्यक है। एक कात बैंची की शक्ल की और दूसरी कात किसी फट्टे आदि पर लगी हुई हो। फट्टे पर लगी हुई कात द्वारा लम्बे और मोटे गत्ते सिधाई मे शीघ्र काटे जा सकते है। यह कात प्राय फट्टे के या किसी चौकी के कोने के सहारे लगी हुई होती है।

६ सूई

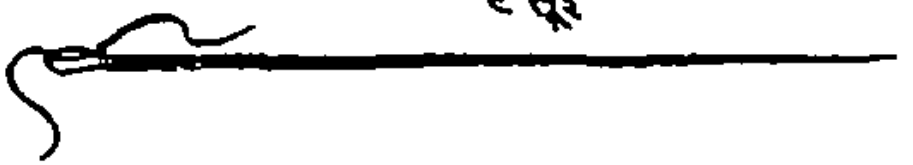

सुई

जिल्दसाज़ी के लिए विशेष प्रकार की सुईयाँ बाजारों मे मिलती है जो बढ़िया प्रकार के लोहे की बनी हुई होती हैं और उनका छेद काफी खुला होता है। ऐसी दो या तीन सुईयें लम्बाई के आधार पर एक दूसरे से छोटी बड़ी अवश्य रखनी चाहियें ताकि बड़े से बड़ी और छोटे से छोटी जिल्द को सीने के अतिरिक्त जुज़बन्दी करने के काम भी आ सकें।

तागा

जिल्दसाज़ी मे चार प्रकार का तागा प्रयोग किया जाता है।

(1) मोटी जिल्दों और बहीखातों को सीने के लिये जो तागा प्रयोग किया है वह अधिक मोटा और सूत का बना हुआ होता है।

(2) मजबूत रील का तागा जो जुजबन्दी की सिलाई के काम आता है।

(3) सिल्की या रील से मोटा मजबूत तागा जो साधारण पुस्तकों को सीने के काम आता है।

(4) सिल्की या सूती तागा जो जुजबन्दी के अन्दर पत्ती के रूप मे लगाया जाता है।

जिल्द साजी के अन्दर जो तागे प्रयोग किये जायें वह कागज की शक्ति के अनुसार होने चाहियें। कई बार जुजबन्दी करते समय बहुत बारीक तागा कागज को काट कर निकल जाता है। ऐसी अवस्था में तागा जरा मोटा प्रयोग करना चाहिये और कागज की शक्ति के साथ साथ उसकी जुजा का भी ध्यान रखना चाहिये।

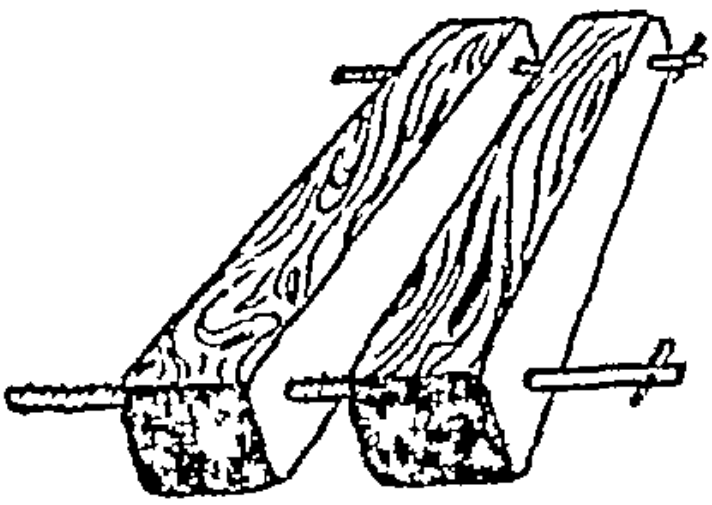

१० शिकंजा

शिकजा

जिल्दों की पुश्तों पर सरेश देने या पुस्तक को काटने के लिये एक लकडी का बना हुआ शिकजा होता है। यह शिकजा दो चार इंच मोटी और छ इंच चौड़ी तथा ढाई फुट लम्बी लकडियों के टुकड़ों को रन्दा करके उसके अन्दर के दोनों भागा को आपस में बिल्कुल मिला दिया जाता है और उसकी दोनों ओर डेढ़ इंच या दो इंच गोलाई के छिद्र करके एक लकडी के छिद्रों के अन्दर चूड़िया बना दी जाती हैं और डेढ़ इंच गोल मोटे और एक फुट लम्बे दो टुकडों पर चूडिया बनाकर उस चूड़ी वाले छिद्र मे फिट कर दिए जाते हैं। उन दोनों डडों को दायें और बायें घुमाने से शिकजा खुलता और बन्द होता है। प्रत्येक जिल्दसाज के पास ऐसे शिकजे का होना अति आवश्यक है। और पुस्तक को काटने के लिये दराती के आकार की एक लम्बी लोहे की कात सी होती है जो शिकजे के अन्दर कसी हुई पुस्तक के फालतू भाग को काट कर साफ कर देती है। शिकजा पक्की लकड़ी का बना हुआ होना चाहिये।

कटाई की मशीन

आज कल पुस्तको, कापियों और कागजों आदि को काटने के लिए मशीनें मिलती हैं। और जितना समय शिकजे मे एक पुस्तक को काटने में लगता है उतने समय मे मशीन के अन्दर सौ पुस्तक की कटाई हो सकती है। बडे काम के लिए ऐसी मशीन का होना अति आवश्यक है।

स्टिचिंग मशीन

छोटी पुस्तकों और कापियों को सीने के लिए आजकल स्टिचिंग मशीन अति उपयोगी सिद्ध हुई है यह मशीन लोहे की तार द्वारा कापियों और पुस्तकों को सी देती है।

फट्टा या चौकी

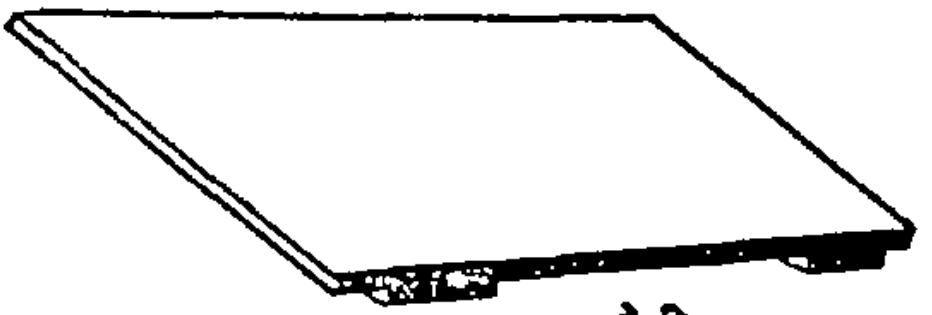

११ चौकी

पुस्तकों को सीने के लिए दो इंच या ढाई इंच मोट फट्टे की बनी हुई पाच इंच ऊची एक चौकी होनी चाहिये जिसकी लम्बाई चौड़ाई कम से कम 3 फुट × 2 फुट हो और जो हथौड़ी की ठोकर को सह सके।

पतीला

लई पकाने के लिए एक पतीले का होना अति आवश्यक है और लई पकाने के लिये पतीला वह रखना चाहिए जिसके नीचे वाला भाग अधिक पतला न हो।

सरेशदानी

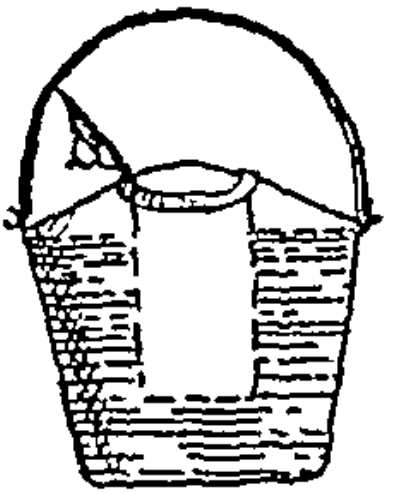

१२ सरेशदानी

सरेश पकाने के लिए एक सरेश दानी होनी चाहिए। जिल्दसाजी मे सरेश का प्रयोग जुज़बन्दी के अन्दर काफी किया जाता है। सरेशदानी विशेष तौर पर जो सरेश पकाने के लिये बनाई जाती है वह ही लेनी चाहिए। क्योंकि उसमे एक तो सरेश जलती नहीं और दूसरे काफी देर तक गर्म रहती है। क्योंकि उस सरेश-दानी के दो भाग होते हैं—एक भाग मे सरेश पानी डाल कर रखी जाती है और नीचे के भाग मे पानी भर दिया जाता है। आग की गर्मी से पानी उबलने लगता है और पानी की तपश से सरेश पिघलती रहती है। इसलिये सरेश आग की गर्मी से जलती नहीं और देर तक गर्म रहती है।

नम्बरिंग मशीन

रसीदों, सिनेमा आदि की टिकटों और कैशमीमो आदि पर नम्बर लगाने के लिये एक बढ़िया प्रकार की नम्बरिंग मशीन रखनी चाहिये।

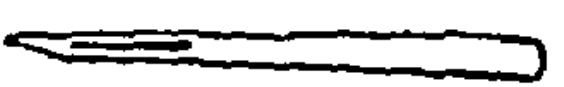

१३ छेद करने वाला सुम्बा

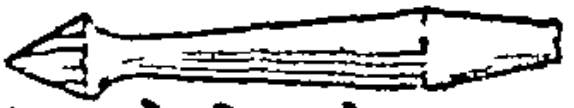

१४ आइलेट फिट करने वाला सुम्बा

सुम्बे

फाइला के अन्दर या गत्ता के अन्दर टैग आदि डालने के लिए भिन्न भिन्न मोटाईयां के सुम्बे रखने चाहियें।

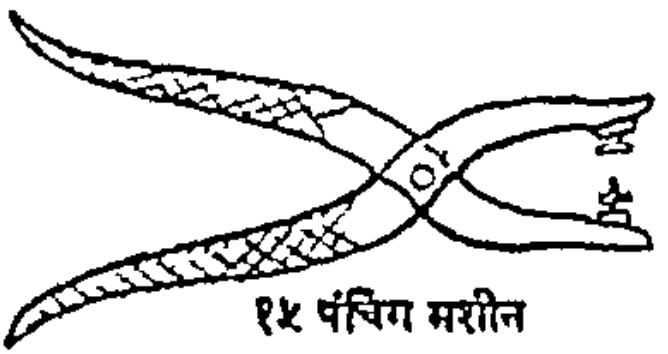

१५ पंचिंग मशीन

पचिंग मशीन

कापियों और नोटबुका के अन्दर डालने वाले कागजों मे छेद करने के लिए एक पचिंग मशीन अवश्य ही रखनी चाहिए।

१६ ब्रुश

ब्रुश

दो ब्रुश तीन इंच चौड़े एक लई लगाने के लिये और एक मरेश लगाने के लिए रखने चाहियें। ब्रुश न तो अधिक सख्त हों और ना ही अधिक नर्म। बीच वाली शक्ति के ब्रुश ही प्रयोग मे लाने चाहिये।

गुणिया

लोहे का फुटा जो दर्जी वस्त्र की कटाई के समय प्रयोग करते हैं यह गत्ते को मापने और सीधा काटने के लिए रखना चाहिये।

चाकू

१७ चाकू

एक बड़ा चाकू और एक लम्बी छुरी कागज काटने के लिए होनी चाहिये।

कम्पास

एक बड़ी कम्पास जो गत्तों के ऊपर छेद कराई के निशान लगाने के लिये होनी चाहिये।

१८ होलपंच

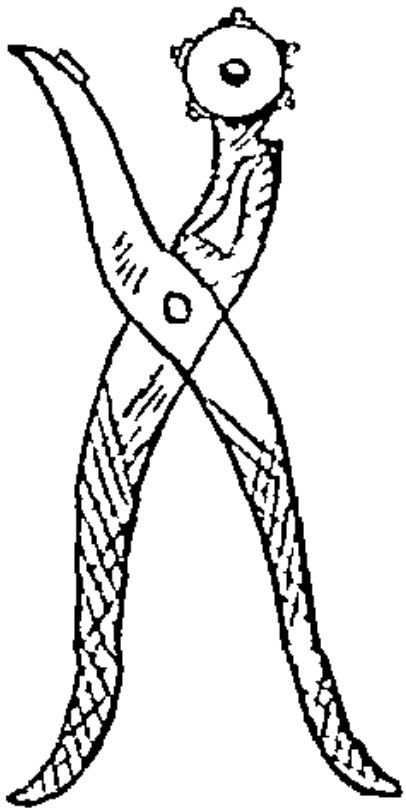

होलोपच

गत्तों और कागजों के अन्दर छेद करने के लिए होलोपच का होना अति आवश्यक है।

आइलेटपंच

गत्ते के अन्दर पीतल के रिंगों को फिट करने के लिए आइलैट पंच भी होना चाहिये।

संगमरमर की सिली

एक 15 × 30 साइज की संगमरमर या अन्य किसी बढ़िया प्रकार के पत्थर की सिली जो पुस्तकों को ठोकने, सैट करने और चमड़े को रापी से तराशने के लिए होनी चाहिये।

पेपर कटर या कोतडरज़

यह हाथी दांत की बनी हुई लम्बी छुरियों के आकार की होती हैं और कागज को मोड़ने, उनकी तह बिठाने के काम आती है।

बैकिंग बोर्डज़

बैकिंग बोर्ड या गुटके जो पुस्तक की पीठ की गोलाई निकालने के लिए जो पुस्तक के साथ शिकंजे के अन्दर कसे जाते हैं और जिनके सहारे पुस्तक के पीठ के दोनों किनारे दबे रहते हैं उन गुटकों को अंग्रेजी भाषा में बैकिंग बोर्ड कहते हैं।

कटिंग बोर्ड

यह भी बैकिंग बोर्ड के गुटकों की तरह शिकंजे के अन्दर पुस्तक को काटते समय लगाये जाते हैं और पुस्तक को काटने वाली कात उन्हीं गुटकों के ऊपर बढ़े हुए पुस्तक के भाग को काट देती है।

टीन की पत्तिया

कुछ साफ और भिन्न भिन्न साइज की टीन की पत्तिया जो गत्ते और पुश्ते के अन्दर या पुश्ते के दोनों पन्नों के बीच में जिल्द बाधने के पश्चात् रखी जाती है, होनी चाहिए। यह पत्तिया पुस्तक पर दबाव पड़ने से पुश्ते और गत्ते को या दोनों पुश्तों को आपस मे चिपकने से बचाती हैं और दूसरे गत्ते के ऊपर दोनों ओर से दबाव एक जैसा पड़ता है। यह पत्तिया यदि जस्त की पानर की हों तो अच्छी रहती हैं, क्योंकि जस्त को जिंगाल नहीं लगता। पत्तियों का साईज जिल्द वाली पुस्तकों के आधार पर होना चाहिए।

गत्ता काटने की दस्ती मशीन

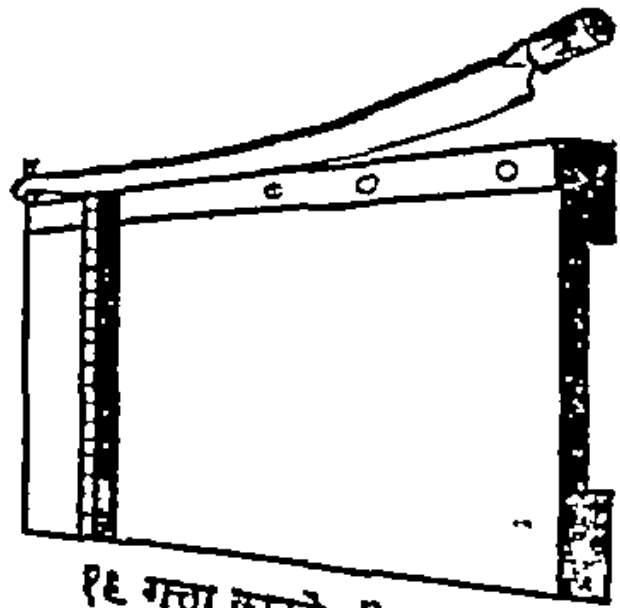

१६ गत्ता काटने की दस्ती मशीन

यह एक बड़ी चौकी के किनारे पर लोहे की पट्टी लगा कर और उस लोहे की पट्टी के एक सिरे पर एक नट द्वारा तिर्छी

कात कस दी जाती है और नट के साथ ही एक स्प्रिंग लगा हुआ होता है जो उस कात को उठाये रखता है। उस चौकी के ऊपर नट वाले किनारे पर एक लम्बी पट्टी जिसके ऊपर इञ्चों के निशान बने हुए होते हैं लगी रहती है। गत्ते को काटने के लिए चौकी के ऊपर लगी हुई पट्टी के सहारे लगा कर काटने वाले भाग को लोहे के किनारे से आगे बढ़ा दिया जाता है और ऊपर से उठी हुई कात के हैण्डल को पकड़ कर नीचे दबाया जाता है, जिस से पत्ती के आगे बढ़ा हुआ भाग कट जाता है और कात फिर लौट कर अपने स्थान पर चली जाती है। कई कारीगर किनारे वाली पत्ती के साथ चौकी के ऊपर एक अन्य लम्बी पत्ती भी लगा देते हैं जो कटने वाले गत्ते आदि को अपने स्थान पर दबाये रखती है।

आरी

२० आरी

जुजों की पीठ पर टक देने के लिये एक दरम्याने साइज की आरी अवश्य होनी चाहिये। यह टक पुस्तक की जुजों पर इस लिये दिये जाते हैं कि सब जुजों की सिलाई एक ही सीध में हो। आरी के दांत बहुत बड़े और खुले नहीं होने चाहियें। बारीक दांतों वाली आरी से ही टक देने चाहियें।

रापी

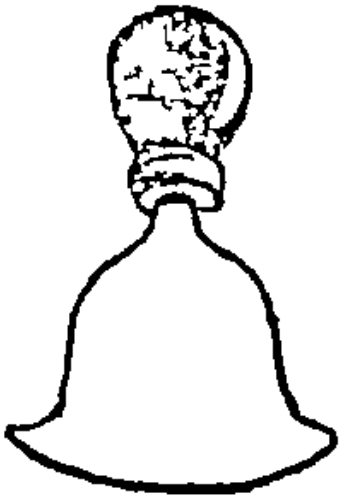

२१ रापी

यह एक लोहे की बनी हुई होती है जो आगे से चौड़ी और उसके पीछे लगा हुआ एक दस्ता होता है। चमड़े के किनारों को छीलने के लिए प्रयोग में लाई जाती है। रापी का प्रयोग प्राय सभी मोची किया करते हैं। रापी द्वारा ही जिल्द पर चढ़ाने वाले चमडे को छील कर पतला किया जाता है, ताकि किनारे गत्ते के साथ भली प्रकार से जुड़ जायें। बिना छीले चमडे का किनारा जल्द पर उभरा रहता है और उसके उखड़ने का भय रहता है। रापी बढ़िया प्रकार के लोहे की होनी चाहिये और उसके आगे का भाग अर्थात् चमड़ा काटने या छीलने वाला भाग साफ़ और तेज होना चाहिये।

दाब की मशीन

पुस्तकों, कापियों, गत्तों और जिल्दों को दबाने के लिए दो प्रकार की दाब की मशीनें होती हैं। एक लोहे की और एक लकड़ी की।

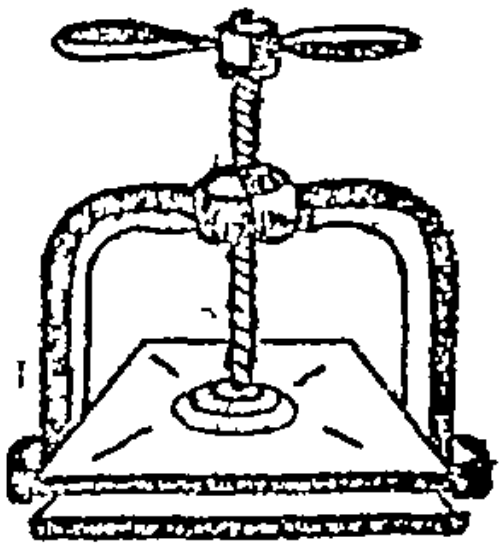

२२ दाब की मशीन छोटी

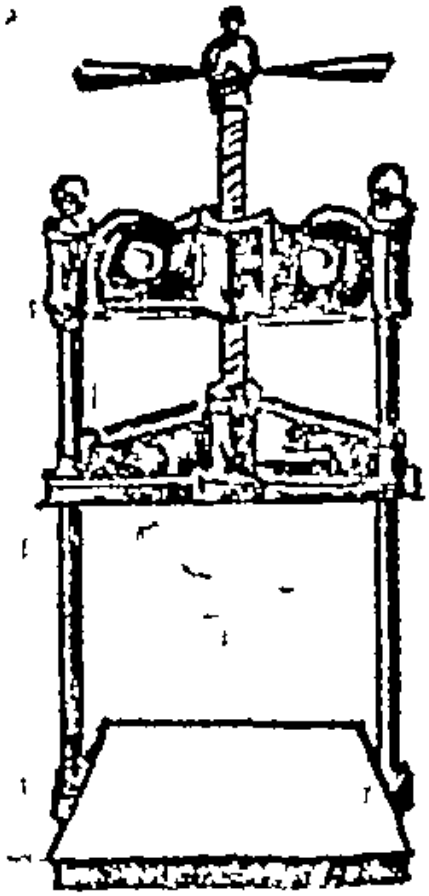

२३ दाब की मशीन बड़ी

लोहे की दाब की मशीन

लोहे की बनी हुई दाब की मशीन टेढ़े गत्ते को सीधा करने, दो या तीन गत्तों को आपस में जोड़ने आदि के काम आती है। इस में थोड़ी सी पुस्तकें भी दबाई जा सकती हैं। इस मशीन के दो भाग होते हैं एक नीचे वाला भाग जिसके ऊपर गत्ते आदि रखे जाते हैं और दूसरे दबाने वाला भाग जो ऊपर और नीचे ऊपर लगे हुए हैंडल द्वारा होता रहता है। इस मशीन के ऊपर एक हैंडल होता है और उस हैंडल के बीच में एक लम्बा गा

जिसके ऊपर चूड़िया पड़ी होती हैं जिसका सम्बन्ध एक ओर से दबाने वाली प्लेट के साथ और दूसरी ओर से ऊपर वाले हैंडल के साथ होता है और वह राड की गोलाई के अन्दर से होकर दबाने वाली प्लेट के साथ जुड़ा रहता है। ऊपर के हैंडल को बाईं ओर घुमाने से नीचे वाली प्लेट ऊपर को उठ जाती है।

लकड़ी की दाब की मशीन

२४ लकड़ी की दाब की मशीन

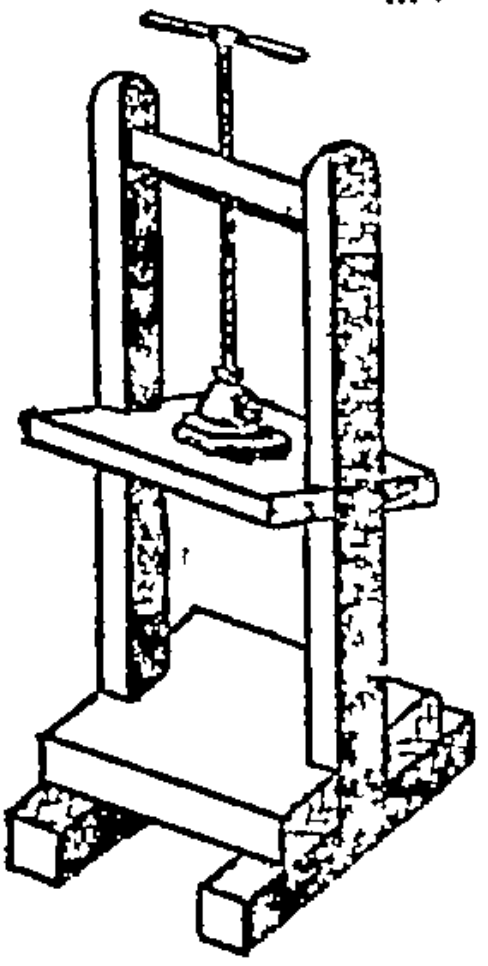

लकड़ी की बनी हुई दाब की मशीन की बनावट लोहे की मशीन के प्रकार ही होती है। केवल आकार में लोहे वाली मशीन से बड़ी होती है और इसके दबाने वाले फट्टे का और नीचे वाले फट्टे के बीच का अन्तर भी लोहे वाली दोनों प्लेटों के अन्तर से अधिक होता है। इसलिये लोहे वाली मशीन की अपेक्षा इसमें बहुत ज्यादा पुस्तकें एक साथ दबाई जा सकती हैं। इसके ऊपर भी लोहे वाले प्रकार का एक हैंडल होता है जिसके घुमाने से दाब

का फट्टा ऊपर और नीचे होता है। यदि पुस्तकें थोड़ी हों तो
के नीचे या ऊपर एक और फटा रख कर उस फटे के ऊपर
के गुटके रख कर पुस्तकों को दबा देना चाहिये।

सिलाई की मशीन

२४ सिलाई की मशीन

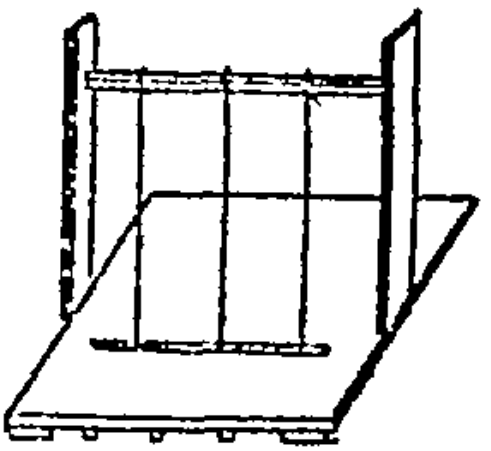

कई पुस्तकों की जुज़
की सिलाई करने के लिये
मशीन का प्रयोग किया जाता
यह मशीन जुज़ों के साथ लग
वाली वत्ती डोरी या फीते
को लगाने के काम आती है
इसकी बनावट इस प्रकार हो
है। इसके नीचे एक 3 ×
फुट की माइज़ का फट्टा, जिसके किनारों के नीचे दो चार इंच
गुटके लगे रहते हैं। और उसके दोनों किनारों दायें और ब
दो लम्बी लकड़िया लगी रहती हैं और इन दोनों लम्बी लकड़ि
के ऊपर एक लकड़ी लगा दी जाती है। कई कारीगर ऊपर लग
वाली लकड़ी को दायें और बायें वाली लकड़ी के अन्दर गरी द
इस प्रकार लगाते हैं कि यह लकड़ी आवश्यकतानुसार ऊपर ना
की जा सकती है। नीचे के फट्टे के नीचे की ओर कुछ कील
रिंग से लगे रहते हैं जिन के साथ डोरी का एक सिरा बांध दि
जाता है। सिलाई के अन्दर जितनी डोरियां जितने अन्तर प

देनी होती हैं उतनी डोरिया और उतने ही अन्तर पर ऊपर की लकड़ी और नीचे के फटे के साथ सीधी बाध दी जाती हैं और फिर उन डोरियों के सामने टफ दी हुई जुर्जों को रख कर सिलाई की जाती है। यह मशीन अधिक काम अर्थात् एक ही साइज और एक ही जैसी बहुत सी पुस्तकों की सिलाई के लिए प्रयोग में लाई जाती है। साधारण एक दो या चार पुस्तकों के लिए हाथ से ही सिलाई कर ली जाती है।

स्टेटएज

यह एक लोहे की पत्ती, दो फुट लम्बी तीन इच चौड़ी और $\frac{1}{8}$ इच होती है। इसके किनारे बिल्कुल सीधे और साफ होते हैं। स्टेटएज का प्रयोग चाकू द्वारा पुस्तकों, कापियों और गत्तों को काटने के समय किया जाता है।

२६ फुट्य

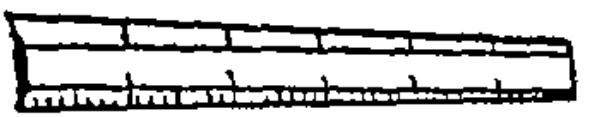

जिल्द साजी के लिये आवश्यक सामान

कारीगर का काम सामान और औजारों के ऊपर निर्भर है। यदि सामान अच्छा और आवश्यकतानुसार होगा और औजार कारीगर की इच्छानुसार होंगे तो काम अधिक सुन्दर और अच्छा तैयार होगा। जहा कारीगर को काम करने के लिए औजारों की आवश्यकता होती है वहा सामान का होना भी अति आवश्यक

है। बिना सामान के केवल कारीगरी और बिना कारीगर के केवल सामान किसी काम का नहीं होता। इसलिये औजारों के साथ साथ सामान का स्टाक करना भी प्रत्येक जिल्दसाज के लिये आवश्यक है और व्योपार की दृष्टि से भी थोक माल खरीदने मे अधिक लाभ रहता है। निम्नलिखित चीनों के सर्व प्रकार के रूप रखने चाहियें और सामान का प्रयोग करते समय यह बात ध्यान मे रखनी चाहिये कि कागज कपड़ा और गत्ता आदि इस विधि से काटा जाये जिससे कतरन बहुत कम निकले। कागज और गत्ते के बचे हुए छोटे छोट टुकड़ों को भी सभाल कर रखना चाहिये और छोटी नोटबुकों की जिल्दों के लिए उन्हीं कतरों को प्रयोग में लाना चाहिए और अधिक छोट गत्तों और अबरी के टुकड़ों से आभूषण रखने की डिबिया और बच्चों के खिलौने आदि तैयार कर लेने चाहियें। सब से उत्तम कारीगर यही है जो अपने सामान से पूरा २ लाभ उठा सके। कपड़े का प्रयोग करते समय कपड़े की काट अच्छी तरह देख भाल कर अर्थात पुश्तों और कोनों के साइन के गत्तों को काट कर कपड़े के ऊपर भिन्न भिन्न रूपों से रख कर देख लेने चाहियें। जितने अधिक टुकड़े एक साल से निकल सकें उतने ही निकाल लेने चाहियें। बचे हुए टुकड़ों में से जुजबन्दों के लिये पट्टियां और छोट टुकड़ों की डोरियां निकाल लेनी चाहियें। पोलीन आदि के लिये यदि पेकिंग पेपर के अतिरिक्त कोई अन्य कागज लगाना हो तो यह कागज उसी माप का लेना चाहिये जिस साईज पर

पुस्तक छपी हुई हो। क्योंकि ऐसा करने से कागज व्यर्थ नहीं जाता और पोस्तीन के टुकड़े स्वय ही उसकी साईज के बन जाते हैं।

(1) गत्ते—हर साईज के।

(2 अबरी—हर प्रकार की।

(3) पैकिंग पेपर—पोस्तीन के लिये।

(4) मराकू—हर रग का।

(5) बाईंडिंग क्लाथ—हर प्रकार तथा हर रग का।

(6) चमडा—बढ़िया प्रकार का।

(7) तागा—बारीक, दरम्याने तथा मोटे साइज का।

(8) डोरी—जुजों के पीछे देने के लिये।

(9) तार—स्टिचिंग करने के लिये।

(10) मच्छी सरेश।

11) मैदा।

(1') आटा सरेश।

(13) नीला थोथा।

(14) कपड़ा—मलमल या जाली का पुस्तक की पीठ पर लगाने के लिये।

(15) रिंग—गत्ते और फाइलों के छिद्रों में डालने के लिये।

(16) टैग—फाइलों मे डालने के लिए।

लई बनाना

जिल्दसाजी के काम में सब से आवश्यक बात लई का बनाना है। देखने मे तो यह साधारण सी बात दिखाई देती है

परन्तु बहुत थोडे कारीगर ऐसे हैं जो शुद्ध रूप में लई बनाते हैं। लई बनाने के लिए जो बर्तन प्रयोग मे लाया जाये वह अन्दर से कलई किया हुआ होना चाहिये। जिस बर्तन में लई बनानी हो उसमें एक पाव मैदा डाल कर बीच मे छः माशे नीलाथोथा और एक माशा सुर्ख फाइ को पीस कर डाल देना चाहिये। फिर आध सेर पानी डालकर हाथ से मैदे को खूब हल कर लेना चाहिये। जब मैदा पानी म खूब हल हो जाये फिर एक सेर पानी और डाल कर थोड़ी देर के लिये उसे यों ही रख देना चाहिये। उसके पश्चात् अग्नि जला कर उस बर्तन को आग पर रख देना चाहिये और एक लकड़ा की खुरपी से हिलाते रहना चाहिये। ताकि मैदा या लई बर्तन के निचले भाग में जलकर साथ न लग जाये। आग अधिक तेज नहीं होनी चाहिये। जब लई पकने लगे तो उसमें एक खिचाव सा पैदा हो जाता है और लई को यदि अगूठा और पहली उंगली के बीच मे ले कर दबाया जाये तो वह चपकने लगती है। उस समय लई का रंग भी नीला सा हो जाता है। जब लई अच्छी गाढ़ी बन जाये तब उसे थोड़ी देर तक हिलाते रहना चाहिये। लई को सुरक्षित रखने के लिये उस बर्तन मे से निकाल कर किसी मिट्टी के बर्तन मे डाल देना चाहिये और फिर आवश्यकतानुसार उसका प्रयोग करना चाहिये। इस लई को चूहा दीमक और टिड्डी आदि नहीं खाती। क्योंकि इसके अन्दर नीलाथोथा और सुर्खताइ पड़ा हुइ है। लई हमेशा सख्त बनानी चाहिये और बाद म आवश्यकतानुसार उसमें पानी मिलाकर लई

को पतला कर लेना चाहिये। गर्मियों के दिनों मे लई के ऊपर गीला वस्त्र डाल देना चाहिये ताकि जल्दी सख न जाये।

लई लगाने की विधि

पुश्ते फोने और पोस्तीन के किनारे चिपकाने के लिये गाढ़ी लई का प्रयोग करना चाहिये। और मरानू अबरी और पोस्तीन को गत्ते के साथ चिपकाने के लिये पतली लई का प्रयोग करना चाहिये। लई को पतला करने के लिए गाढ़ी लई को किसी बारीक कपडे मे डाल कर उस कपडे के एक ओर के दोनों सिरे किसी खूटी के साथ बाध देने चाहियें और दूसरी ओर के सिरों को बायें हाथ से थाम कर कपडे को खेंच कर रखना चाहिये और फिर लई के अन्दर थोड़ा सा पानी डाल कर दायें हाथ से लई को मल कर छान लेना चाहिये। लई वाले कपडे के नीचे कोई पतीला या चिलमची आदि रख लेनी चाहिये ताकि छनी हुई लई उसमें गिरती रहे। लई में पानी आवश्यक्तानुसार मिला लेना चाहिये। पुश्ते फोने और पोस्तीन के किनारों पर लई लगाने के लिए दायें हाथ की पहली उगली से काम लेना चाहिये। लई को दायें की उंगली से उठा कर जिस पुश्ते पर लई लगानी हो उसकी बाइ ओर से लइ लगाना आरम्भ करना चाहिये। पुश्ते के दोनों सिरों को बायें हाथ के अगूठे और उगली से दबाये रखना चाहिये। और पुश्ते के किनारे पर लई लगाने के पश्चात् उगली को लम्बा और तिरछा करके बाई ओर से दाइ ओर इस प्रकार लगाना

चाहिये कि उगली सारे पुरते पर लई लगाती हुई फालतू लई को बाहिर ले आये। पतली लई को लगाने के लिये दायें हाथ का पंजा और हथेली काम में लानी चाहिये। पतली लई ब्रुश द्वारा भी लगाई जा सकती है। थोड़े काम के लिये अकेला मनुष्य काम कर सकता है परन्तु अधिक काम के लिए दो आदमियों का होना अति आवश्यक है। एक आदमी उन पन्नों को चिपकाता जाये। ऐसा करने से बड़ी आसानी रहती है। क्योंकि बार २ लई लगाने के पीछे जो हाथ पोंछने पड़ते हैं एक तो यह समय बच जाता है और दूसरा लई पन्नों पर लगी हुई सूखने भी नहीं पाती। चमड़े की जिल्द बनाते समय गाढ़ी लई का ही प्रयोग करना चाहिये। और यदि ऊपर का टाइटल मोटा हो या अन्दर की पास्तीन मोटे कागज की हो तो उसे भी गाढ़ी लई से ही चिपकाना चाहिये। केवल पतले और हल्के कागजों को चिपकाने के लिए पतली लई का प्रयोग करना चाहिये। पकी हुई लई में से आवश्यकतानुसार थोड़ी सी लई को ही पानी डाल कर पतला करना चाहिये। क्योंकि पानी द्वारा पतली की हुई लई अधिक समय तक नहीं रहती। इस प्रकार की बची हुई लई दूसरे दिन काम में नहीं लाना चाहिये।

सरेश का बनाना

जुजबन्दी की पुस्तकों के पुश्ता पर लगाने के लिए सन्दी सरेश का प्रयोग किया जाता है। सन्दी सरेश बनाने के लिए जो सरेशदानी बाजार में मिलती है उसी का प्रयोग करना चाहिए।

क्योंकि उस सरेशदानी मे सरेश पकाने से एक तो सरेश जलती नहीं और दूसरे बहुत देर तक गर्म रहती है। सरेश दानी के दो भाग होते हैं एक बाहरी भाग और एक अन्दर का भाग। बाहरी भाग केतली की तरह होता है और अन्दर का भाग एक गोल डब्बे की तरह का होता है। यह सरेश दानी लोहे की बनी हुई होती है। केतली वाले बडे भाग मे पानी डालकर उसमें अन्दर वाले भाग को रख देना चाहिए और अन्दर वाले भाग मे बढिया प्रकार की मच्छी सरेश एक छटाक डालकर एक पाव पानी डाल देना चाहिये और उसे कम से कम दो घण्टो के लिये इसी तरह पड़ा रहने देना चाहिये। उसके पश्चात् उस केतली को आग पर रख देना चाहिये। जब पानी जोश खाने लगेगा तो उसकी गर्मी से अन्दर के डब्बे मे पड़ी हुई सरेश भी गलने लगेगी। किसी लकड़ी की डडी से इस सरेश को हिलाते रहना चाहिये और जब सब सरेश गल जाये तो सरेश के खिचाव को देख लेना चाहिए। सरेश जितनी गाढी होगी उतनी उसमें चिपकाने की शक्ति अधिक होगी और सरेश जितनी पतली होगी उतनी उसमे चिपकाने की शक्ति भी कम होगी। परन्तु पुश्तों पर लगाने के लिये दरम्याने दाने की और कागज आदि चिपकाने के लिये अधिक पतली सरेश का प्रयोग करना चाहिये। अधिक गाढ़ी सरेश लकडी आदि को जोड़ने के काम आती है। सरेश का प्रयोग करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिये कि सरेश अधिक ठडी न हो जाये।

सरेश लगाने की विधि

जिल्द साजी में सरेश का प्रयोग भी अधिक होता है। सरेश पुस्तक की पीठा को सीधा या गोलाई में रखने के लिये अधिक प्रयोग में लाई जाती है और विशेष रूप से जुजबन्दी की पुस्तकों के लिये सरेश का प्रयोग करना अति आवश्यक है। क्योंकि जुजबन्दी की सिलाई के पश्चात् जुजों को मिलाने का काम सरेश ही करती है। सरेश को पकाने के पश्चात् ब्रुश द्वारा जुजों के ऊपर लगाना चाहिये। जुजों पर लगाने के लिए सरेश न तो बहुत गाढ़ी और न बहुत पतली होनी चाहिये। पतली सरेश का प्रयोग पुश्ते काने अबरी और पोस्तीन आदि चिपकाने के लिये ही प्रयोग करना चाहिये। यद्यपि लई से सरेश की शक्ति अधिक होती है फिर भी जिल्दसाजी के लिए लई का अपना स्थान है और विशेष रूप से हमारे देश के जिल्द साज तो 90 प्रतिशत लई का ही प्रयोग करते हैं। मराकू और बाईंडिंग क्लाथ को गत्तों के साथ चिपकाने के लिए सरेश का ही प्रयोग करना चाहिए। क्योंकि दानेदार मराकू और बाईंडिंग क्लाथ की आकृति नहीं बिगड़ती और लई द्वारा लगाने से कई बार उनकी आकृति बिगड़ जाती है और उनके दाने बैठ कर गत्ते के साथ चिपक जाते हैं। सरेश का प्रयोग चमड़े पर नहीं करना चाहिए। क्योंकि सरेश सूखने पर चमड़े को अकड़ा देती है और कई बार अधिक अकड़ाव होने के कारण चमड़ा रुखड़ जाता है। जुजों की पीठों

पर सरेश लगाते समय उंगली द्वारा सरेश को तह को बिठाना चाहिये।

जिल्दों के लिए सामान का चुनाव

सिलाई के लिये तागों का चुनाव

पुस्तकों की सिलाई के लिए तागों का चुनाव करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि तागा मजबूत और साफ हो और तागे की मोटाई पुस्तकों की मोटाई के आधार पर होनी चाहिये। जैसे साधारण छोटी पुस्तकों के लिए साधारण रील का तागा दोहरा या चौहरा प्रयोग किया जा सकता है। जुजबन्दी के लिए इकहरे तागे का ही प्रयोग करना चाहिये। मोटे रजिस्टरों और बडी पुस्तकों को सिलाई के लिए मोटी रील का तागा जो विशेष रूप से बाइंडिंग के लिए ही तैयार किया जाता है प्रयोग करना चाहिए। जुजबन्दी के अन्दर देने वाली डोरिया विशेष कर पटसन या सूत की होनी चाहिये। बढ़िया प्रकार की जिल्दों को सीने के लिए कई कारीगर रेशम के तागे का भी प्रयोग करते हैं। अन्य तागों से रेशम का तागा अधिक मजबूत होता है। बहीखाते आदि की सिलाई के लिए सूत की मोटी डोरी का प्रयोग किया जाता है। भिन्न भिन्न मोटाई की रीलें पुस्तकों की सिलाई के लिए दुकानों मे मिलती हैं। पुस्तकों की मोटाई के आधार पर और आवश्यकतानुसार चुनाव कर लेना चाहिए।

जिल्दों के लिये गत्तों का चुनाव

साधारण स्कूलों की छोटी पुस्तकों के लिए बारह औंस, एक पौंड और डेढ़ पौंड के गत्ते का ही प्रयोग किया जाता है और बड़ रजिस्टरों, फाइलों और बैंक की लैजरों के लिए दो पौंड से चार पौंड तक के गत्ते का प्रयोग भी किया जाता है। गत्ता हमेशा साफ और बढ़िया प्रकार का ही लेना चाहिये। सड़ा हुआ गत्ता अर्थात जिस को जरा दबाव देने से टूट जाये ऐसे गत्ते का प्रयोग नहीं करना चाहिए। जिल्दों के लिए वह गत्ता अच्छा होता है जिसमे मोटाइ के अनुसार थाड़ी सी लचक हो।

पोस्तीन का चुनाव

जो कागज पुस्तक के और गत्ते के बीच मे लगाया जाता है उसे पोस्तीन या रक्षक या अन्दरसा कहते हैं। इस कागज को पुस्तक के ऊपर फोल्ड करके अर्थात पुश्ते के साथ चिपका दिया जाता है या पुस्तक के साथ जुजबन्दी द्वारा सी दिया जाता है और फिर उसका एक पन्ना जिल्द वाले गत्ते के साथ अन्दर की ओर से चिपका दिया जाता है। इस कागज की मजबूती पर ही जिल्द की मजबूती निर्भर है। यदि पोस्तीन का कागज घटिया प्रकार का या कम शक्ति वाला लगा दिया जाये तो पुस्तक शीघ्र ही फट जाती है। साधारण पुस्तकों के लिए पैकिंग पेपर और बड़े रजिस्टरों और मोटी जिल्दों के लिए मोटा खाकी कागज प्रयोग करना चाहिए। लैजरों और रजिस्टरों के अन्दर पोस्तीन

लगाते समय पोस्तीन की अन्दर वाली तह के नीचे में वाइंडिंग क्लाथ का तीन इंच चौड़ा और रजिस्टर की लम्बाई के आधार पर लम्बा टुकड़ा काट कर लई से चिपका देना चाहिए और उस टुकड़े को पोस्तीन पर चिपकाते समय इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिये कि वाईंडिंग क्लाथ पोस्तीन के दोनों पन्नों पर एक जैसी चौड़ाई पर लग जाये और फिर उस पोस्तीन को पुस्तक के साथ जुजबन्दी की सिलाई के आधार पर सी देना चाहिये। इस पोस्तीन का एक पन्ना जिल्द वाले गत्ते के साथ और दूसरा पन्ना रजिस्टर के पन्ने के साथ चिपका देना चाहिये और अन्दर की ओर से वाईंडिंग क्लाथ के किनारे के ऊपर थोड़ी सी चढ़ा कर दोनों पन्ने के साथ चिपका देनी चाहिये। मोटी जिल्दों के लिए बैंक पेपर की पोस्तीन भी लगाई जाती है। कई पब्लीशर्ज (पुस्तक विक्रेता) छपी हुई पोस्तीनों का भी प्रयोग करते हैं। पोस्तीन चाहे छपी हुई हो या न हो परन्तु उसका कागज अच्छा और बढ़िया प्रकार का होना चाहिये। पोस्तीन एक प्रकार से पुस्तक की रक्षा करती है। इसलिये इसको रक्षक भी कहा जाता है।

जिल्दों के लिये चमड़े का चुनाव

बढ़िया प्रकार की पुस्तकें जिन्हें चिरकाल तक सुरक्षित रखने की आवश्यकता होती है उन पर चमड़े की जिल्दें बनाई जाती हैं। कुरान शरीफ और बाइबल आदि पर भी चमड़े की जिल्दें बांधी जाती हैं। चमड़ा जो जिल्दों के काम आता है वह बकरे की खाल,

बछड़े की खाल या भेड़ आदि की खाल का होता है। बड़े पशु का चमड़ा अर्थात मोटा चमड़ा जिल्दों के काम नहीं आता। चमड़ा जितना मुलायम और अच्छा पकाया हुआ होगा उतनी ही जिल्द मजबूत और खूबसूरत रहेगी। विदेशी चमड़ा जो बछड़े की खाल का पुस्तकों की जिल्दों के लिए प्रयोग में लाया जाता है वह मराको, लीवेंट, नाइगर और ओ ऐसज होता है। इन चमड़ों में से 'नाइगर' सब से श्रेष्ठ माना जाता है और बछड़े का चमड़ा जो जिल्दों पर लगाया जाता है और विदेश से आता है वह काफ लैदर के नाम से पुकारा जाता है। यह बढ़िया पक्का और बहुमूल्य होता है और बढ़िया पुस्तकों पर ही चढ़ाया जाता है। भारतवर्ष में प्राय भेड़ और बकरे की खाल का जिल्दों पर प्रयोग किया जाता है। चमड़े का प्रयोग करते समय यह देख लेना चाहिये कि जो टुकड़ा जिल्द के ऊपर लगाया जा रहा है उसके अन्दर कोई छिद्र, टक या कोई ऐसा कमजोर भाग तो नहीं जो शीघ्र ही खींचने से ही फट जाये और इस बात का भी विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिये कि चमड़ा कच्चा न हो और सड़ा हुआ न हो तथा अधिक पतला भी न हो। चमड़ा हमेशा अच्छा धुला हुआ और बढ़िया प्रकार का ही लगाना चाहिये।

रंगे हुये चमड़ों की जिल्दें बनाने का भी रिवाज अधिक है। रंगे हुये चमड़े दो प्रकार के होते हैं। एक तो साधारण चमड़ा को किसी रंग से रंग कर तैयार करना और दूसरे किसी बढ़िया

फैक्ट्री का रग किया हुआ चमडा। आजकल कई रंगों के चमडे बाजार में मिलते हैं। रगों का चुनाव अपनी इच्छानुसार करना चाहिये। बैंक लैजरों और रजिस्टरों के लिये बिने रगे हुए चमडे का प्रयोग भी अच्छा रहता है।

बाईंडिंग क्लाथ का चुनाव

बाईंडिंग क्लाथ दो प्रकार का होता है एक तो जिसकी सतह बिल्कुल साफ होती है और दूसरी वह सतह जिसके ऊपर दाने दाने से उभरे हुये होते हैं। सादी सतह वाले बाईंडिंग क्लाथ मे घटिया और बढ़िया प्रकार की कई किस्मे होती हैं और दानेदार बाईंडिंग क्लाथ में भी घटिया और बढ़िया प्रकार की कई किस्में होती हैं। दोनों प्रकार के बाई डिंग क्लाथ कई रगो में मिलते हैं। रगों का चुनाव और कपड़े का चुनाव इच्छा और आवश्यकतानुसार कर लेना चाहिये। मामूली साधारण पुस्तकों के लिये घटिया और बहुमूल्य पुस्तकों के लिए बढ़िया प्रकार का बाई डिं। क्लाथ ही प्रयोग मे लाना चाहिए। केवल यह बात ध्यान मे रखनी चाहिये कि बाई डिंग क्लाथ सड़ा हुआ न हो अर्थात् जरा खेंचने काटने से कटता जाये। ऐसे कपडे का लगाना हानिकारक है क्योंकि पुस्तक के ऊपर जिल्द बाधने के पश्चात् उस जिल्द को दिन मे कई दफा उल्टा पुल्टा जाता है। यदि बाई डिंग क्लाथ सडा हुआ होगा तो उस में चीर आ जायेंगे और जिल्द टूट जायेगी।

अबरी का चुनाव

जिल्द पर लगाने के लिये अबरी तीन प्रकार की होती है।

(1) रोगनी अबरी ।

(2) जापानी अबरी ।

(3) मराकू ।

रोगनी अबरी

यह अबरी फुलस्केप साइज की होती है और इसके ऊपर बेल बूटे या धारियें बनी रहती हैं। सब से प्रथम इसी अबरी का प्रयोग किया जाता था। यह अबरी देखने में सुन्दर और मुलायम होती है। परन्तु महंगी होने के कारण आज कल इस का प्रयोग बहुत कम हो गया है।

जापानी अबरी

यह अबरी पूरे बड़े कागज के साईज अर्थात् 20" × 30" पर बनी हुई होती है। पहले पहल यह अबरी जापान से आया करती थी इसी कारण इसका नाम जापानी अबरी पड़ा। आजकल यह अबरियां भारतवर्ष में भी बनने लगी हैं। साधारण जिल्दों पर आजकल यही अबरी प्रायः लगाई जाती है। कापियों और रजिस्टरों पर भी इसी अबरी का प्रयोग किया जाता है। यह छींट की तरह छपी हुई होती है और भिन्न भिन्न रंगों में मिलती है।

मराकू

मराकू जिल्दों के लिए बढ़िया प्रकार का कागज समझा जाता है और बड़े रजिस्टरों तथा अधि० मूल्य वाली किताबों पर

अबरी के स्थान पर मराकू लगाया जाता है। मराकू कई रगों का मिलता है जैसे काला, लाल, हरा, नीला आदि। और चमकीले रग के साथ साथ उसके ऊपर दाने दाने भी होते है जो देखने मे अति सुन्दर प्रतीत होते हैं।

अबरी के रगों का चुनाव करते समय बाईंडिंग क्लाथ जो पुश्ते और कोनों पर लगा हुआ है उसके रग के आधार पर अबरी का चुनाव करना चाहिये, ऐसा न हो कि जिस रग के पुश्ते और कोने लगे हु। उसी रग की अबरी या मराकू लगा दिया जाये। मराकू बढ़िया प्रकार की पुस्तकों पर लगाते समय यदि दोनों रग एक जैसे ही होगें तो भद्दे लगेंगे। इसलिए यदि बाईंडिंग क्लाथ का रग अधिक गहरा हो तो अबरी या मराकू का रग हल्का उसी रग से मैच करता हुआ लगाना चाहिये। और बाईंडिंग क्लाथ का रग हल्का हो तो मराकू या अबरी का रग गहरा होना चाहिये। रगों का मेल इस प्रकार भी नहीं होना चाहिये कि काले कपडे के ऊपर सफेद, लाल के ऊपर पीला, या पीले के ऊपर नीला लगा दिया जाये। रग वही और जरा हल्का गहरा होना चाहिए।

जापानी अबरी के रग प्राय हल्के ही होते हैं और वह सभी प्रकार के कपड़े के रगों के मेल खा जाते हैं। परन्तु मराकू का मेल मिलाने के लिये विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए।

दफ्तरी या जिल्दसाज के लिए सबसे प्रथम और आवश्यक काम कागजों को गिनना और कागजों की तह करना अर्थात्

इनकी जुज़ें बनाना होता है। इन दोनों कामों के पश्चात् जिल्दों का बाधना आदि शुरू होता है।

कागजों को गिनने की विधि

२७ कागज गिनने की विधि

बाजारों में जो बधे हुये रिम मिलते हैं वह पाँच सौ पन्नों के या चार सौ अस्सी पन्नों के होते हैं। क्योंकि रिम बीस दस्तों का होता है और दस्ते में दो दर्जन अर्थात चौबीस कागज होते हैं। परन्तु विदेशी फर्म पच्चीस पन्नों का दस्ता और पाच सौ पन्ना का रिम देती हैं। पन्नों को गिनने के लिए दायें हाथ की चुटकी अर्थात अगूठ और साथ वाली उगली के आखिरी भाग से कागजों के नीचे वाले कोने को थाम कर अगूठे को इस प्रकार अन्दर की ओर मोड़े कि कागजों का दूसरा कोना फैल कर ऊपर को उठ जाये और फिर बायें हाथ के अगूठे से कागजों को गिन लेना चाहिये। कागजों को गिनते समय चार या पाच पन्नों का एक भाग कर के गिनना चाहिये। जैसे यदि

मने एक रिम मे से सौ पन्ने निकालने हैं तो कागजों के पाँच
ाच पन्नों के भाग बनाकर बीस भाग गिन लें, तो सौ कागज हो
ायेंगे। इस प्रकार गिनती करने से समय भी कम लगता है और
ागजों की गिनती भी ठीक रहती है कागजों को गिनने का ढग
चित्र मे देखिये।

फार्मों को मोडने की विधि

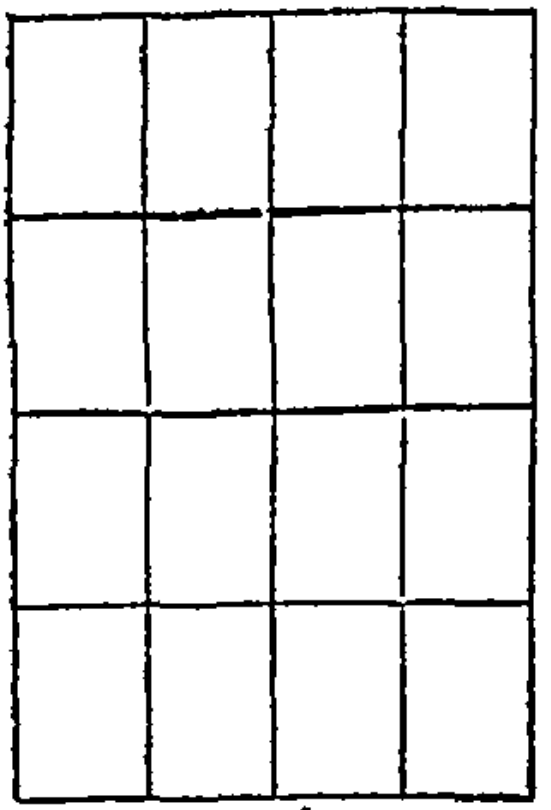

१६ फार्म

पुस्तकों के छपे हुये कागजों को फार्म या मिसल कहते हैं।
ार्म मे चार, आठ, सोलह या बतीस तक पृष्ठ होते हैं। फार्मों
ो अपने सामने रखकर आलती पालती मार कर बैठ जाना
ाहिये और दायें हाथ से पन्ने को एक ओर से उठा कर बायें

हाथ के अगूठे के नीचे दोनों सिरों को मिलाकर अर्थात् बा और बायें कोने को मिलाकर दायें हाथ के अगूठे की दाब से बी में तह दे देनी चाहिये। और फिर ह वाले भाग को अपनी ओर रख कर फिर दायें हाथ से कोने को उठा कर बायें हाथ साथ मिला कर अगूठे की दाब से दूसरी तह लगा देनी चाहिये फिर नई तह वाला भाग अपनी ओर करके दाईं ओर के कोने को बाईं ओर के कोने से मिला कर तीसरी तह दे देनी चाहिए फार्म को रखते समय उपरोक्त चित्र के आधार पर रखना चाहिये। फर्मों को तह करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिये। कि प्रष्ठों के बीच का अन्तर दोनों ओर से एक जैसा रहे। अर्थात जहा से तह लगानी हो वह दोनों प्रष्ठों के अन्तर के मध्य में लगानी चाहिये ताकि मिलाई के समय पुस्तक के पृष्ठ टेढ़े मेढ़े न हों। तह करने के पश्चात् तह करने वाली छुरी जो लकड़ी या हाथी दात की बनी हुई होती है से सब जुजों की तहों के ऊपर फेर कर तह को बिठा देना चाहिये। तह करने वाली छुरी को तहों पर फेरने समय बीस तीस जुजों को अपने सामने इस ढंग से रखें कि जुजों की पीठ अपनी ओर रहे। फिर बायें हाथ में सब जुजों की पीठ को चौकी से उठा कर एक एक को धीरे धीरे चौकी पर फेंकते जाना चाहिये और उतने समय में कि पिछले समय में दूसरी जुज पहली जुज के ऊपर आकर पड़े छुरी को दायें से बायें और बायें से दायें ओर शीघ्रता से जुज के ऊपर इतने दबाव से फेरना चाहिये कि जुज की तह अच्छी तरह बैठ जाये।

तह की हुई जुजों का इकट्ठा करना

जब सब फार्म तह हो जायें तो उन्हें क्रम वार अपने सामने रख लेना चाहिये अर्थात दायें हाथ की ओर पुस्तक के दस फार्म रख लेने चाहिए। कई दफ्तरी बाईं ओर की बजाय फार्मों का क्रम दाईं ओर से आरम्भ करते हैं। ऐसा करने में भी कोई आपत्ति नहीं। तह की हुई फार्मों के गठों का सामने रखने का क्रम इस प्रकार रखना चाहिये—एक से सोलह पृष्ठ तक पहला, सत्रह से बत्तीस पृष्ठ तक दूसरा तेंतीस से अड़तालिस पृष्ठ तक तीसरा और उनचास से चौंसठ पृष्ठ तक चौथा, इसी प्रकार आगे के फार्म की पृष्ठ वार रखते जाना चाहिए। मुड़े हुये फार्मों के पृष्ठों की छोटी संख्या नीचे की ओर से होनी चाहिये जैसे पहले फार्म की पृष्ठ संख्या एक से सोलह तक है। अब फार्मों को रखते समय सोलहवां पृष्ठ ऊपर और पहला पृष्ठ नीचे होना चाहिए। यदि चार पृष्ठ का फार्म या आठ पृष्ठ का फार्म हो तो चार की संख्या या आठ की संख्या ही ऊपर होनी चाहिए। और यदि पुस्तक के फार्म अधिक हों तो दो आदमी एक साथ बैठ कर फार्मों को उठा उठा कर पुस्तक की पृष्ठ संख्या बराबर करके ऊपर नीचे रखते जायें। पुस्तकों के ऊपर नीचे रखने का ढङ्ग इस प्रकार होना चाहिए कि प्रत्येक पुस्तक अलग अलग रहे अर्थात् आड़ी तिर्छी पुस्तकें रखकर ऊपर से किसी पत्थर आदि से दबा देना चाहिए। कई दफ्तरी सब पुस्तकों को सीधे रख कर रस्सी से बांध देते हैं। परन्तु पुस्तकों की सिलाई करते समय फिर दोबारा इन फार्मों को एक

दूसरे से भिन्न करके रखना पड़ता है। परन्तु आड़ी तिर्छी पुस्तकें रखने में यह सुविधा रहती है कि प्रत्येक पुस्तक अलग अलग होती है और सिलाई करते समय पुस्तकों को सुलझाने की कठिनाई नहीं होती। तह की हुई जुज़ों को इकट्ठा करने के पश्चात् जुज़ों के पिछले भाग पर अर्थात् पुश्ते पर दबाव देना चाहिये या हथौड़ी की ठोकर से उन तहों को बिठा देना चाहिए ताकि जुज़ें ऊँची उठी न रहें। जुज़ों की तह बिठाने के लिये हाथी दांत की लकड़ी की या लोहे की एक छुरी सी होती है जो तहों पर दबा कर फेरने से तह बैठ जाती है। यह छुरियें बिलकुल साफ और मुलायम होनी चाहियें ताकि तह पर फिरते समय कागज को फाड़ न दें। तह बिठाने की विधि चित्र में देखिये।

फार्मों में चित्र और नक्शे बनाना

फार्मों को तह कर चुकने के पश्चात् उनमें लगाने वाले चित्र और नक्शों को अपने अपने पृष्ठ के साथ रख देना चाहिये। चित्र और नक्शे जो पुस्तक में रखे जायें वह इस प्रकार रखने चाहियें कि वह पुस्तक खुलते ही सीधे हाथ दिखाई दें। यदि उनका लेख किसी ऐसे पृष्ठ पर आकर पड़ता है कि जिससे तसवीर को उल्टा लगाना अति आवश्यक हो तब लगाना चाहिये नहीं तो हमेशा चित्रों को सीधा ही रखना चाहिये कि पृष्ठ के खुलते ही चित्र और नक्शे दायें हाथ पड़े।

पुस्तक में रखने वाले चित्रों को काटने की विधि

पुस्तकों में तीन प्रकार से चित्र लगाये जाते हैं।

(1) पहली प्रकार के वह चित्र हैं जो फार्म के ऊपर ही छपे हुए होते हैं। ऐसे चित्रों को मोड़ने तोड़ने की आवश्यकता नहीं होती। वह फार्म के मुड़ते ही स्वय अपने स्थान पर मुड़ जाते हैं।

(2) दूसरी प्रकार के वह चित्र हैं जो आर्ट पेपर पर छपे हुए होते हैं और उनको निश्चित पृष्ठों के नीचे रखकर पुस्तक को सी दिया जाता है। ऐसे चित्रों को रखते समय यह देख लेना चाहिए कि चित्र का जो भाग जुज्ज के साथ मिलाया जा रहा है वह अधिक बड़ा या अधिक छोटा तो नहीं। यदि यह भाग बड़ा हो तो उसका थोड़ा सा किनारा कैंची से काट कर पृष्ठों के भीतर रखना चाहिये और यदि वह किनारा बहुत छोटा हो तो ऐसे चित्रों को जुज्ज से जरा हटाकर रखना चाहिए। ताकि सिलाई के समय चित्र सिलाई में न आ जाये। इसके अतिरिक्त यह भी देखना चाहिए कि चित्र बिल्कुल सीधे लगें वह टेढ़े मेढ़े या आड़े तिर्छे न हों। जिस तरफ से भी चित्र का फालतू कागज बढ़ा हुआ हो उसी तरफ से उसे तराश कर पुस्तक में लगाना चाहिये। यदि जुज्जबन्दी की पुस्तकों में चित्र लगाने हों तो चित्रों के किनारे पर लई या गोंद लगाकर चित्र को अपने निश्चित पृष्ठ के साथ

चिपका देना चाहिये। स्टिचिंग की सिलाई में चित्रों को चिपकाने की आवश्यकता नहीं होती।

(३) तीसरे प्रकार के वह चित्र होते हैं जिन्हें माऊंट पेपर के ऊपर लगाया जाता है। ऐसे चित्रों को लगाते समय चित्रों के फालतू कागज चित्र के किनारे से काट देने चाहियें और पुस्तकों के अन्दर माऊंट पेपर या जिस कागज के ऊपर वह चित्र चिपकाये जाते हैं उन कागजों को निर्दिष्ट पृष्ठों के भीतर रख कर पुस्तक की सिलाई करके और जिल्द बाधने के पश्चात् उन में लगने वाले चित्रों को उन पुस्तकों के अन्दर लगे हुये कागजों के ऊपर चित्र के ऊपर वाले किनारे के साथ साथ सरेश लगा कर चित्र को उस पृष्ठ के मध्य में रख कर चिपका देना चाहिए। सारे चित्र पर लेई लगाकर नहीं चिपकाना चाहिए। लेई केवल चित्र के ऊपर के किनारे पर ही लगे, बाकी का चित्र वैसा ही पृष्ठ पर लटका रहे। कई बार ऐसे चित्रों को लगाने के लिए जो कागज प्रयोग में लाये जाते हैं उन कागजों पर हाशिया और कुछ लेख आदि छपा रहा है जो चित्र के भाव को दर्शाता है। ऐसे पृष्ठों पर चित्र चिपकाते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि चित्र हाशिये के अन्दर रहे और टेढ़ा या तिर्छा न लगे। कई बार तसवीर को मापने के लिए पतला गुद्दी का कागज भी उस माऊंट पेपर के साथ ही पुस्तक में रखा जाता है। ताकि वह चित्र को बिगड़ने न दे। इस प्रकार के चित्र प्रायः बढ़िया प्रकार की पुस्तकों में ही लगाये जाते हैं। साधारण पुस्तकों में केवल पहले और दूसरे प्रकार के चित्र ही लगाये जाते हैं।

कट माऊंट लगाना

कट माऊट उसको कहते ह कि जो माऊट चित्र के ऊपर ाया जाता है। चित्र के मुख्य भाग को दर्शाने के लिए माऊट र मे मशीन द्वारा कुछ गोल छिद्र या दूसरे प्रकार की कटिंग ये जाते है। चित्र के मुख्य भाग या मुख्य पात्र उस माऊट के ट हुए गोल चक्करों मे से दिखाई देते हैं, अन्य चित्र ढका ता है। इस प्रकार के चित्रों को लगाते समय माऊट पेपरों की ठ पर चित्रों को रख कर पहले उसके मुख्य पात्रों को या मुख्य ागों को माऊट पेपर के गोल चक्करों के मध्य मे इस प्रकार ना चाहिये कि वह चेहरे या चित्र या सीनरी दिखाई दे। र तसवीर के ऊपर बायें किनार पर सरेश या लई लगाकर से माऊट पेपर के साथ चिपका देना चाहिये और फिर उस ाऊट पेपर को पहली विधि अनुसार निश्चित पृष्ठों के बीच मे कर पुस्तक की सिलाई करनी चाहिए। जुजबन्दी की पुस्तकों माऊंट पेपर को भी पृष्ठ की पीठ के किनारे के साथ चिपका ना चाहिये। यदि माऊट पेपर और चित्र के बीच में पतला इज पेपर या गुद्दी कागज देना हो तो पतले कागज का टुकड़ा ाटकर माऊट पेपरके कटे हुए भागके पीछे चिपका देना चाहिये।

पृष्ठों के अन्दर चित्रों को चिपकाना

कई बार पृष्ठों के अन्दर छपाई के बीच में थोड़ा सा स्थान त्र चिपकाने के लिये रख दिया जाता है। वह स्थान उस

समय छोड़ा जाता है कि जब रंगीन चित्र छोटे से भाग में लगाना हो। ऐसी अवस्था में चित्र को काट कर उस छोड़े हुये स्थान के आधार पर सैट कर लेना चाहिये। फिर उस चित्र के एक भाग को पृष्ठ के साथ चिपका कर बाकी भाग को पृष्ठ के साथ चिपकाना चाहिये। सारे चित्र पर लई नहीं लगानी चाहिये क्योंकि सारे चित्र पर लई लगाने से जिस पृष्ठ के ऊपर चित्र को चिपकाया जाता है वह चित्र सुख जाता है और उसमें सिलवटें पड़ जाती हैं। छोटे चित्रों को चिपकाते समय विशेष रूप से इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि चित्र कहीं उल्टे न लग जायें।

पुस्तक में नक्शे या चार्ट लगाने की विधि

पुस्तक में लगने वाले चार्ट और नक्शे तीन प्रकार के होते हैं

(1) पुस्तक के पृष्ठ के साईज के मुताबिक। अर्थात् जितना लम्बा चौड़ा पृष्ठ हो उतना ही चार्ट या नक्शा हो।

(2) पुस्तक के पृष्ठ से दुगना चार्ट या नक्शा।

(3) पुस्तक की लम्बाई और चौड़ाई से अधिक लम्बा या चौड़ा चार्ट।

(1) पुस्तक के साइज के नक्शे पृष्ठों के अन्दर सिलाई से पहले रख देने चाहियें और जुजबन्दी वाली पुस्तकों के अन्दर चित्रों की तरह नक्शों के किनारे सरेश द्वारा पृष्ठों के साथ चिपका देने चाहियें। नक्शे का मार्जन (हाशिया) चारों ओर से एक जैसा रखना चाहिए।

(2) पुस्तक के पन्ने से दुगने चौड़े नक्शे या चार्ट लगाते समय उनको पुस्तक के पृष्ठ की चौड़ाई से ½ इंच कम एक मोड़ देकर नक्शे को पृष्ठों के अन्दर रखना या चिपकाना चाहिए। यदि नक्शे का मोड़ (फोल्ड) बिल्कुल नीचे वाले पन्ने के बराबर हो या उससे बढ़ा हुआ हो तो उस नक्शे के मोड़ वाले भाग में एक और मोड़ उल्टा देकर नक्शे को फोल्ड करना चाहिए। नक्शे का दूसरा मोड़ पुस्तक की सिलाई वाले भाग के हाशिये तक होना चाहिए और पहला मोड़ भी पुस्तक के बाहिर वाले हाशिये तक ही रखना चाहिये ताकि पुस्तक की कटाई के समय नक्शा या चार्ट कट न जाये और पृष्ठ को खोलते समय नक्शे के ऊपर वाले मोड़ के किनारे को पकड़ कर खोलने से नक्शा पूरा सीधा खुल जाना चाहिये। मोड़ टेढ़ा नहीं होना चाहिये। यदि नक्शे या चार्ट एक मोड़ से भी अधिक चौड़े हों तो उसी प्रकार मोड़ के ऊपर दूसरा और दूसरे के ऊपर तीसरा मोड़ देकर नक्शे या चार्टों को फोल्ड करके लगाना चाहिए। एक से अधिक मोड़ यदि देने हों तो प्रत्येक मोड़ पहले मोड़ के ऊपर ही देना चाहिये।

(3) जो नक्शे या चार्ट लम्बाई और चौड़ाई दोनों ओर से पुस्तक के आकार से बड़े हों तो ऐसे नक्शों को पुस्तक के अन्दर चिपकाने से पहले पुस्तक की लम्बाई से बड़े हुये चार्ट या नक्शे को नीचे से ऊपर की ओर अर्थात् अन्दर की ओर मोड़ना चाहिये और यह मोड़ पुस्तक के ऊपर और नीचे वाले हाशिये की लाइन के बराबर होना चाहिए।

नीचे का मोड दे चुकने के पश्चात् फिर पुस्तक की चौड़ाई की ओर से दूसरी विधि के अनुसार नक्शे को मोड़ कर चिपका देना चाहिए। बड़े नक्शों को फोल्ड करते समय पहला मोड़ पुस्तक की लम्बाई की ओर से ही देना चाहिए। उसके पश्चात् चौड़ाई वाले मोड मोडने चाहिए। यदि चौड़ाई वाला मोड़ एक मोड़ से अधिक हो तो उसका दूसरा मोड़ पुस्तक के हाशिये से देकर नक्शे को बाहिर की ओर उल्टा देना चाहिए।

ऐसे नक्शों को पन्नों के अन्दर लगाते या चिपकाते समय लम्बाई के मोड को जो पृष्ठ के साथ सिलाई के पास दिया हुआ है को तिर्छा मोड कर पुस्तक के नीचे वाले हाशिये की ओर से त्रिकोन की शक्ल का दे देना चाहिए। ताकि नक्शे के मोड का सिरा भी सिलाई के अन्दर न आ जाए। पुस्तक के अन्दर दिए हुए मोड़ इतने छोटे होने चाहिए कि पुस्तक में से उभरी हुई दिखाई देने लगें।

सिलाई

पुस्तकों, कापियों, रजिस्टरों, तथा बही खातों पर जो सिलाई की जाती है। यह दो प्रकार से की जाती है—एक तागे से दूसरी तार से। दोनों प्रकार की सिलाईयां आम प्रचलित हैं। तागे और तार की सिलाई भी कई प्रकार से की जाती है। जिसका विस्तृत वर्णन आगे दिया गया है।

तागे की सिलाई

तागे की सिलाई करने के लिये निम्नलिखित सामान और औजारों की आवश्यकता होती है।

सूई	आर (सूया)
तागा	हथौड़ी
मोटी डोरी	कैंची
फीता	सिलाई का शिकना

तागे की सिलाई के तीन रूप प्रचलित हैं।

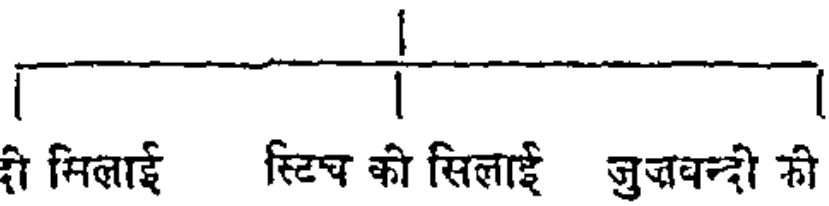

सादी सिलाई

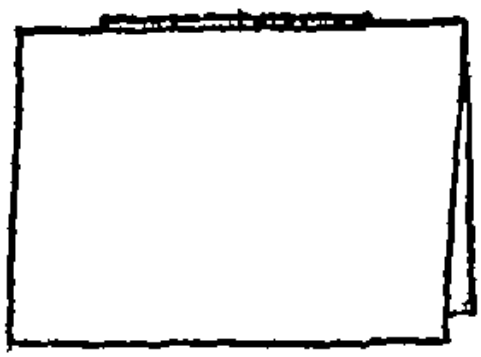

२६ सादी सिलाई

जो सिलाई कापियों के बीच मे छेद करके अर्थात् एक जुज्ज के अन्दर से की जाती है उसे सादी सिलाई कहते हैं। यह सिलाई प्राय छोटी कापियों, नोटबुकों और एक जुज्ज के बही खातों मे की जाती है।

मिलाई करने की विधि

दोहरे किये हुए पन्नों को खोल कर उनके बीच में तीन छेद सुये और हथौड़ी द्वारा कर लने चाहियें। दोनों किनारों से डेढ़ डेढ़ इंच अन्दर की ओर हट कर छेद करने चाहियें और मध्य छेद से दोनों दायें और बायें छेद का अन्तर एक जैसा होना चाहिये। शुरू शुरू मे छेद करने के स्थानों पर पैंसिल से निशान लगा लेने चाहियें। छेद करने के पश्चात् सूई मे तागा डाल कर सूई को अन्दर की ओर से छेद न० एक मे डाल कर बाहिर निकाल लें फिर सुई को छेद न० दो में बाहिर की ओर से डाल कर अन्दर की ओर से खेंच लें और फिर सूई को छिद्र न० तीन में अन्दर की ओर से डाल कर बाहिर से खींच कर छिद्र न० एक मे बाहिर की ओर से खेंचिये। इसके पश्चात सारे फालतू तागे को खेंच कर तागे का पिछला सिरा दो इंच छिद्र न० एक के पास रख कर उसके साथ दूसरे तागे की गाँठ दे दें। गाँठ देते समय इस बात का ध्यान रखें कि छिद्र के पास छोड़ा हुआ तागा और सूई वाला तागा बीच वाली सिलाई के आस पास रहे।

गाठ देने की विधि

सिलाई के बीच में गाठ देने के लिए सूई वाले तागे को बायें हाथ से पकड़ कर बायें हाथ के अंगूठे और पहली उंगली से उस तागे म मोड़ देकर दूसरे छोड़े हुए दो इंच तागे को उस मोड़

३० सादी सिलाई में गाठ

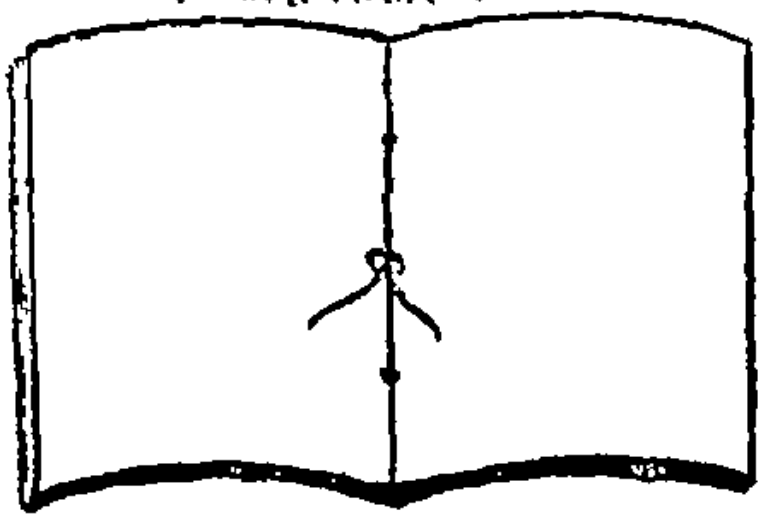

मे से गुजार कर फिर बायें हाथ से उस ¹ इंच तागे के सिरे को पकड़ लें और दायें हाथ से तागे को खेंचें। दायें हाथ वाले तागे को खचने से वहा एक गाठ पड़ जायेगी। इसी प्रकार दो या तीन गाठें लगा देनी चाहियें। गाठ लगाने के पश्चात् फालतू तागे को कैंची द्वारा काट लेना चाहिये। गाठ देने की विधि चित्र में देखें।

छोटी नोट बुकों में ²े छेद करके भी सिलाई की जाती है और लम्बे रजिस्टरों मे तीन और चार छेद करके सिलाई की जाती है। सिलाई करने से पहले यदि टाइटल चढ़ाना हो तो टाइटल को सिलाई वाले पत्रों को साथ रख कर सिलाइ कर लेनी चाहिये।

बही खाते की सादी सिलाई उपरोक्त विधि से ही होती है। परन्तु कइ बही खातों की सिलाई करते समय तागे को किनारे

वाले छेदों में डालने के पश्चात् तागे को किनारे से मोड़ कर फिर दोबारा दायें और बायें छेद में से गुजारा जाता है। यह खाते की सिलाई के लिए मोटा डोरी का प्रयोग किया जाता है। और गाठ देने के पश्चात् उसके साथ कुछ लम्बी डोरी पेंसिल आदि बाधने के लिये छोड़ दी जाती है।

स्टिचिंग की सिलाई

साधारण पुस्तकों पर जो साधारण जिल्दें बनाई जाती हैं उनके लिये केवल जुज़ के पिछले पुश्ते के पास अर्थात पुस्तक के पिछले किनारे से दो या तीन सूत हट कर छेद करके सूई तागे से सिलाई कर दी जाती है। ऐसी सिलाई को स्टिचिंग की सिलाई कहते हैं। स्टिच की सिलाई स्कूलों की पुस्तकों, मासिक पत्र, और साधारण पुस्तकों पर की जाती है।

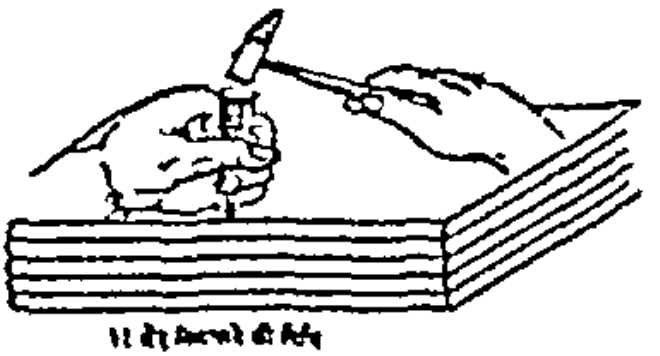

सिलाई करने की विधि

पुस्तक की जुज़ों को क्रम वार इकट्ठा करके उनके अन्दर जो चित्र या नक्शे आदि रखने हों उनको निश्चित स्थान पर रख कर सारी जुज़ों के पुश्ते को मिला कर उसके किनारे सीधे कर लेने चाहियें। इसके पश्चात् पुश्ते से दो सूत हट कर तीन छेद करने चाहियें। एक छेद मध्य में और दो छेद दायें और बायें। दायें बायें वाले दोनों छेद किनारे से कम से कम एक इंच के अन्तर पर होने चाहियें। छोटी साइज की पुस्तकों की सिलाई करते समय यह अन्तर और भी कम हो सकता है। तीनों छेदों का आपस का अन्तर एक जैसा रहना चाहिये। छेद बारीक सुये और हथौड़ी की ठोकर से करने चाहियें। बहुत मोटा सुआ प्रयोग में नहीं लाना चाहिए। छेद करते समय इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए कि छेद बिल्कुल सीधा हो। आड़ा और तेढ़ा न हो। साधारण पुस्तकों के लिये बढ़िया प्रकार की रील का तागा प्रयोग में लाना चाहिये जो बहुत मोटा न हो और दोहरे तागे से सिलाई करनी चाहिए।

इकट्ठी की हुई जुज़ों में जो तीन छिद्र किये हुये हैं उन में प्रथम सूई को छिद्र न० एक अर्थात् बीच वाले छिद्र में ऊपर की ओर से नीचे ले जायें और फिर बाईं ओर के छिद्र न० दो में से सूई को नीचे की ओर से डाल कर ऊपर की ओर खींच लें और फिर छिद्र न० तीन अर्थात् दायें हाथ वाले छिद्र में ऊपर

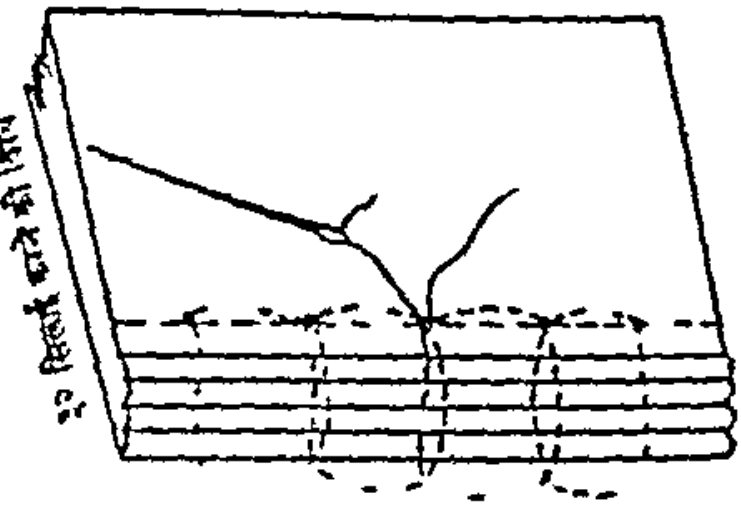

३३ गठ लगाने की विधि

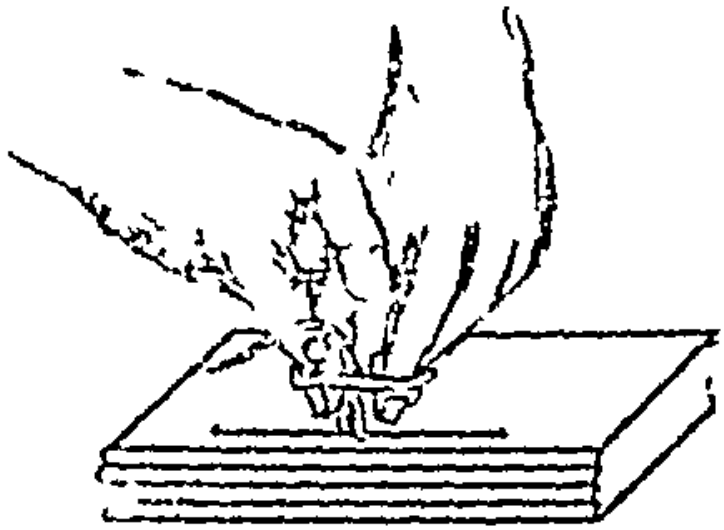

३४ सिलाई करने के पश्चात्

से सूई को डाल कर नीचे से निकाल लें और अन्त में छिद्र न० एक अर्थात् बीच वाले छिद्र मे सूई को नीचे से डाल कर ऊपर खेंच लें और तागे को गांठ दे दें। तागे की गाठ देने की विधि साधारण सिलाई वाले अध्याय में देखें।

तार की सिलाई के लिये एक लोहे की मशीन होती है। जिस के ऊपर तार का गोला चढ़ा दिया जाता है और तार को मशीन के अन्दर पिरो दिया जाता है। मशीन के नीचे एक पुस्तक रखने के लिये स्थान बना हुआ होता है और पाव से दबाने के लिए एक ब्रैकट नीचे या हाथ से दबाने के लिये एक हैंडल ऊपर

३६ तार की सिलाई का दूसरा रूप

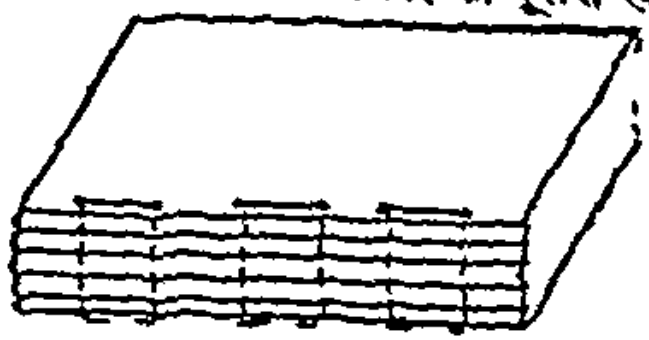

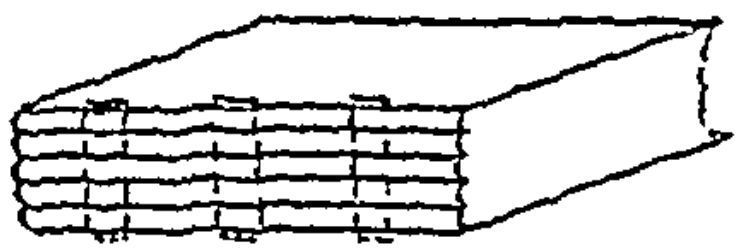

३५ तार की सिलाई

लगा रहता है। कापियों पुस्तकों और रजिस्टरों आदि की सिलाई तार द्वारा भी की जाती है। तार द्वारा तीनों प्रकार की अर्थात सादी स्टिचिंग और जुजबन्दी की सिलाई हो सकती है। जिस पुस्तक, कापी या रजिस्टर पर तार की सिलाई करनी हो उसको मशीन के ऊपर इस प्रकार रखना चाहिये कि उसके सिलाई करने वाला स्थान ऊपर स्टिच लगाने वाले स्थान के बिल्कुल नीचे हो। पुस्तक को निश्चित स्थान पर रखने के पश्चात् हैंडल को दबाते ही पुस्तक के अन्दर एक लोहे की तार का टांका लग जाता है। यदि दूसरा या तीसरा टांका लगाना हो तो पुस्तक को दूसरे टांके वाला स्थान दबाव वाले पुर्जे के नीचे रख देना चाहिए और फिर मशीन के हैंडल को दबा कर दूसरा टांका लगा लेना चाहिए।

हाथ की सिलाई से यह सिलाई बहुत जल्दी होती है और सस्ती भी पड़ती है।

बहीखातों में स्टिच की सिलाई

बहीखातों पर ऊपर की स्टिच की सिलाई की जाती है परन्तु इसकी सिलाई में एक तो धागे के स्थान पर मोटी डोर का प्रयोग किया जाता है और दूसरे तीन छेदों से सिलाई करने के पश्चात धागे वाले किनारे से भी घुमाकर डोरे को फिर नये छेदों और उन्हीं तीन से दोबारा पिरोया जाता है और यह बार किताब से पुश्त के पीछे भी डोरी को घुमाकर सिलाई की जाती है।

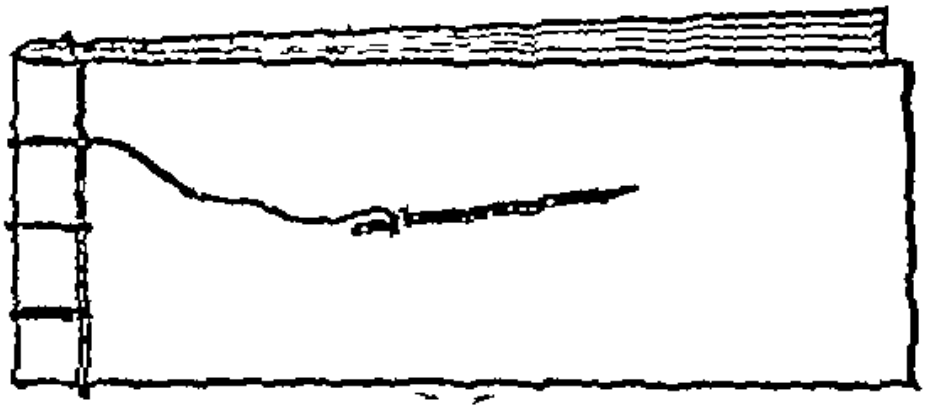

२७ बही खातों की सिलाई

जुजबन्दी की सिलाई

- सादी जुजबन्दी
  - पत्ती वाली जुजबन्दी
  - डोरी वाली जुजबन्दी
    - उभरी हुई डोरी
    - कट के अन्दर डोरी
- लपेट की जुजबन्दी
- तिर्छी जुजबन्दी

२८ जुजबन्दी की जिल्द

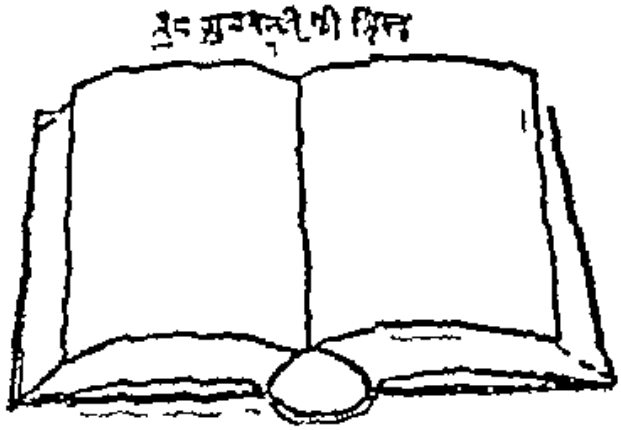

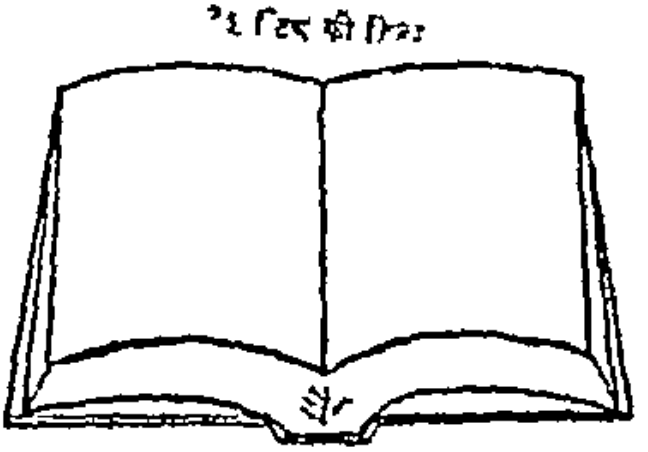

बढ़िया प्रकार की पुस्तकों पर जुजबन्दी की जिल्दें बनाई जाती हैं। जुजबन्दी की जिल्दें स्टिच की सिलाई की अपेक्षा खुलने में अधिक फैलाव रखती हैं अर्थात् पुस्तक पूरी खुल जाती है और दूसरे इसकी जिल्द भी स्टिच की सिलाई वाली जिल्द से अधिक सुन्दर होती है। क्योंकि इसकी पीठ गोल हो जाती है और आगे से पुस्तक का रूप अर्ध चन्द्रिका के समान होता है जुजबन्दी की सिलाई करने से पहले मुड़े हुये फार्मों के अन्दर चित्र या नक्शे आदि नहीं लगाने चाहियें। पुस्तक की सिलाई कर चुकने के पश्चात् नक्शों चित्रों और पाटों को निश्चित पृष्ठों के साथ सरेस द्वारा चिपका देना चाहिये। फार्मों को मोड़ने और तह करने की की विधि उसी प्रकार है जैसा कि पहले हम लिख चुके हैं।

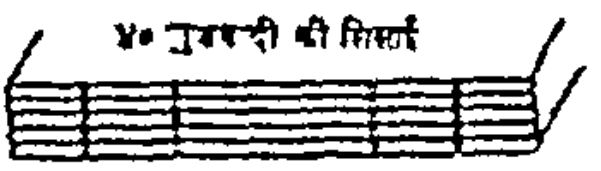

जुजबन्दी की सिलाई का मूल नियम पुस्तक को जुजों की पृथक पृथक सिलाई करके आपस मे चेन या गाठ द्वारा जोडना है। इस सिलाई मे सुये और हथौडी से काम नहीं लिया जाता केवल सूई तागे से ही इस प्रकार की सिलाई हो जाती है। प्रत्येक पृथक जुज का सम्बन्ध आपस मे इस प्रकार होता है कि पुस्तक की सब जुजें एक दूसरे के साथ तागे के साथ जजीर की कड़ी की तरह जुडी रहती हैं और इसके अतिरिक्त जुजों के अन्दर जो फीते बत्तिया और डोरिया दी जाती हैं वह भी प्रत्येक जुज को आपस में मिलाये रखने के काम आती हैं।

जुजबन्दी की सिलाई के तीन रूप प्रचलित हैं। एक सादी जुजबन्दी दूसरी लपेट की जुजबन्दी और तीसरी तिर्छी जुजबन्दी। इनमें से सादी जुजबन्दी का प्रयोग अधिक होता है। सादी जुजबन्दी भी दो प्रकार की होती है एक बत्ती वाली और दूसरी डोरी वाली। जुजबन्दी के भी दो प्रकार हैं एक उभरी हुई डोरी अर्थात् जो डोरी पुश्त के ऊपर लगी रहे और दूसरे कट के अन्दर डोरी जो पुश्ते के ऊपर उभरी हुई दिखाई न दे।

लपेट की जुजबन्दी और तिर्छी जुजबन्दी में भी बत्ती और डोरी का प्रयोग किया जाता है। परन्तु उनमें डोरिया और बत्तिया देने का नियम साधारण जुजबन्दी की अपेक्षा कुछ कठिन और भिन्न है।

सादी जुजबन्दी की सिलाई करने की विधि

जिस पुस्तक पर जुजबन्दी की सिलाई करनी हो उसकी तह की हुई जुजों को क्रम वार रख कर उन सब का पुश्ता एक साथ मिला लेना चाहिये और पुस्तक की जुजों को दाई और बाई ओर ठोक कर सीधा कर लेना चाहिये ताकि कोई जुज बिखरी न रहे। जुजों के पुश्ते मिलाने के पश्चात पुश्तों पर पैंसिल से सिलाई के लिए चार निशान लगा देने चाहियें। यह निशान दोनों कोनों से एक एक इच हट कर लगाने चाहियें। और बीच के दो निशान मध्य में एक इच के या पौन इच के अन्तर पर करने चाहियें। अर्थात् कोने वाले निशान से मध्य वाले निशान का अन्तर साधारण पुस्तकों अर्थात् 20 × 30 × 16 का है। इससे बड़ी या छोटी पुस्तकों की सिलाई के लिए अन्तर घटाया बढ़ाया भी जा सकता है।

निशान लगा चुकने के पश्चात् जुजों को दायें हाथ सिलाई करने वाली चौकी के पास उल्टा रख देना चाहिये अर्थात पुस्तक का अन्तिम पृष्ठ ऊपर हो।

जुजबन्दी की सिलाई के लिए बढ़िया प्रकार की रील का इकहरा तागा प्रयोग में लाना चाहिये। जुजबन्दी के लिए तागा जितना बारीक और मजबूत हो उतना ही अच्छा रहता है और सूई में एक साथ दो तीन लम्बे तागे डाल लेना चाहिए।

सिलाई करने की विधि

चौकी के साथ रखी हुई रील उल्टी जुजों पर से अन्तिम जुज को उठा कर उल्टा करके चौकी पर रख देना चाहिये अर्थात् पुस्तक का अन्तिम पृष्ठ चौकी के साथ नीचे लगा रहे और जुज का पुश्ता दायें हाथ की ओर होना चाहिये। दायें हाथ से जुज के मध्य भाग को खोल कर बाया हाथ मध्य भाग पर टिका देना चाहिये और फिर सूई को बाहिर से छिद्र के निशान न० 1 में

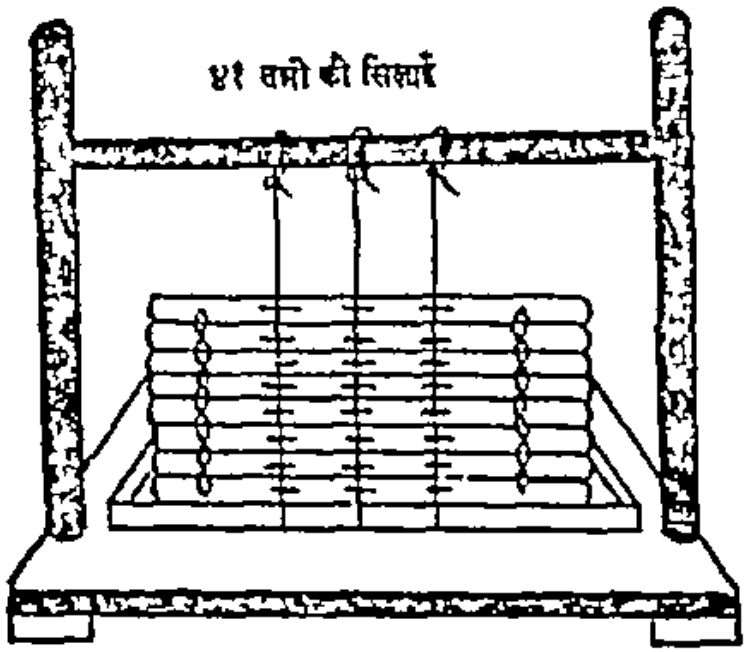

४२ सिलाई की हुई जुज

डाल कर छिद्र के निशान न० दो में सूई को बायें हाथ से पकड़ कर अन्दर की ओर से बाहिर की ओर निकाल दें। फिर सूइ को दायें हाथ से पकड कर छिद्र के निशान न० तीन मे बाहिर की ओर से अन्दर की ओर डालें और फिर सूइ को बायें हाथ से पकड छिद्र के निशान न० चार मे अन्दर की ओर से टाल कर बाहिर निकालें और फिर उस जुज के ऊपर दूसरी जुज को रखकर सिलाइ का वैसा क्रम आरम्भ करें। दूसरी जुज मे सूई प्रथम छिद्र न० चार वाले निशान में बाहिर की ओर से अन्दर की ओर डाली जायेगी और क्रम वार सिलाइ करते हुये जब सूई छिद्र न० एक मे से अन्दर की ओर से बाहिर निकाली जाये तो सारे तागे को खेंचकर जुज न० एक के साथ छोड़े हुये एक इच तागे के साथ एक गाँठ लगा के फिर जुज न० तीन को उसके ऊपर रख कर जुज न० एक की प्रकार सिलाई शुरू कर देनी चाहिये। सिलाई करते समय इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिये कि पृष्ठों का क्रम न बिगड़े और दूसरे सिलाई लगे हुये निशानों के ऊपर ही हो। जब सारी जुजों की सिलाई हो जाये तो तागे की दो तीन गाठें नीचे वाली जुज के साथ देकर फालतू तागे को कट्ट देना चाहिये।

लम्बे रजिस्टरों म चार स्थानों पर सिलाई की अपेक्षा छः और आठ निशान लगा कर भी सिलाई की जाती है। यदि लम्बे रजिस्टरों में या कापियों में बत्ती या डोरी का प्रयोग न करना हो

तो सूई तागे से ही बीच वाली सिलाईयों को आपस मे जकड़ देना चाहिये, ताकि जुजें बीच मे से खुल न जायें।

टक वाली सिलाई

इकट्ठी की हुई जुजों की पीठ पर पैन्सिल के निशान लगाने के पश्चात् आरी का टक देकर भी सिलाई की जाती है। टक देने से जुजों के अन्दर सिलाई करने के स्थानों पर छेद हो जाते हैं और सिलाई करते समय काफी सुविधा होती है। सिलाई करने की विधि उपरोक्त विधि के अनुसार ही है।

टाका लगाने की विधि

पुस्तक की जुजों को शिकजे के अन्दर इस प्रकार रखना चाहिये कि शिकजे से जुजों का पुश्ता दो या ढाई सूत बाहिर रहे और फिर शिकजे को अच्छी तरह कस कर जहा जहा आरी के

४३ टक देने की विधि

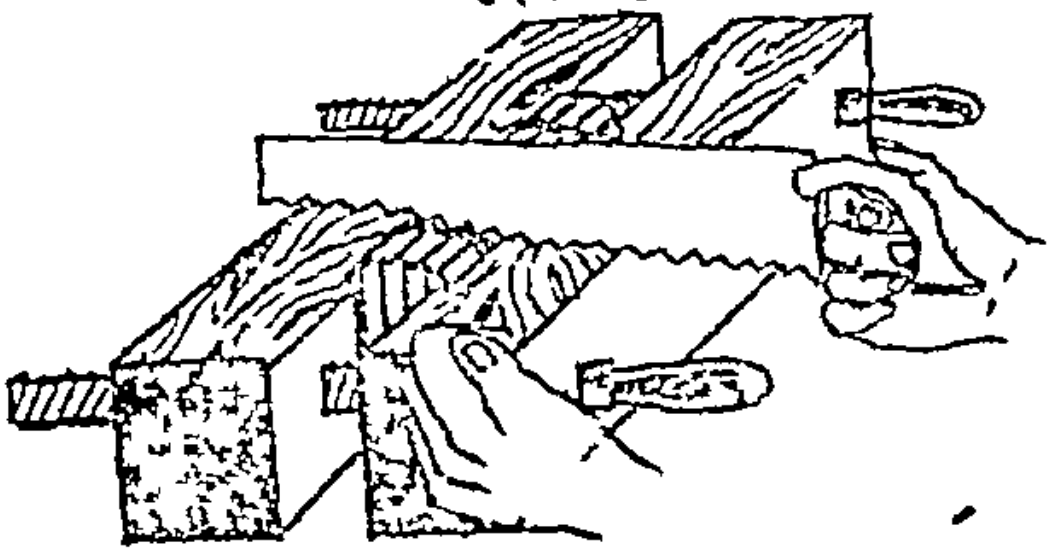

टक लगाने हों वहां पेंसिल के निशान लगा देने चाहियें और फिर मोटी आरी द्वारा इन निशानों पर आरी को चला कर टक लगा देने चाहियें। टक इतना गहरा होना चाहिए कि जुज के अन्दर तक छेद हो जाये। यदि डोरिया न लगानी हों तो टक बारीक आरी से देने चाहियें और पुश्ते पर टक सीधे लगाने चाहियें। जब सारे टक लग चुकें तो शिकंजे को खोल कर पुस्तक की जुजों को इसी प्रकार एक तरफ रख देना चाहिये। शिकंजे में चार चार और छ छ पुस्तकों की जुजें एक साथ कसी जाती हैं और उनपर टक भी एक साथ ही लगाये जा सकते हैं। जुजों को शिकंजे में देते समय क्रम वार और सीधा रखना चाहिये।

जुजबन्दी की सिलाई में पट्टी का प्रयोग

४४ जुजबन्दी में पट्टी का प्रयोग

उपरोक्त विधि से जुजों की सिलाई करते समय यदि बाइंडिंग क्लाथ एक इंच चौड़ा और पुस्तक की मोटाई से दो इंच लम्बा टुकड़ा लेकर उसका एक इंच भाग पहली जुज के छिद्र नं० दो और नं० तीन के बीच में रखकर सिलाई की जाये और सिलाई के समय छिद्र नं० दो से नं० तीन में तागा पिरोते समय उस टुकड़े के ऊपर से ले जाया जाए तो उसे पट्टी वाली सिलाई कहेंगे। बाइंडिंग क्लाथ के स्थान पर फीता या चमड़े का टुकड़ा भी प्रयोग

किया जा सकता है और वही बाईंडिंग क्लाथ का टुकडा जो एक इंच दोनों ओर पुस्तक के साथ बचा रहेगा वह पुस्तक के ऊपर वाली जिल्द के साथ लग कर पुस्तक का सम्बन्ध गत्ते से जोड़ देगा। इस सिलाई मे केवल एक बत्ती का प्रयोग किया जाता है। यदि एक से अधिक बत्तियों का प्रयोग करना हो तो निम्नलिखित विधि अनुसार सिलाई करनी चाहिये। एक से अधिक बत्ती वाली सिलाई का प्रयोग लम्बे रजिस्टरों या बडी जिल्दों में किया जाता है।

दो बत्तियों की जुजबन्दी

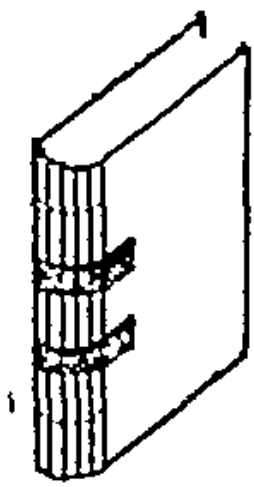

४२ जुजबन्दी में दो बत्तियों का प्रयोग

जुजबन्दी मे दो बत्तिया लगाने के लिए जुजबन्दी की सिलाई करने से पहले पुस्तक की जुजों को छ टक लगाने चाहियें और एक बत्ती छिद्र न० दो और न० तीन के बीच मे और छिद्र न० चार और न० पाच के बीच में रख कर सिलाई आरम्भ करनी चाहिए। सिलाई करने की बिधि ऊपर बताई गई है। केवल छिद्र अधिक होने से सूई तीन बार बाहिर से और तीन बार अन्दर से ले जानी होगी और सिलाई का आरम्भ छिद्र न० एक मे बाहिर की ओर से ही होगा और जुजों की गाठ भी उसी प्रकार टाली जायेगी। दो बत्ती वाली जिल्द एक बत्ती वाली जिल्द की अपेक्षा अधिक मजबूत होती है।

तीन बत्ती वाली जुज़बन्दी

तीन और चार बत्ती की जुजबन्दी प्राय बैंकों के बड़े रजि
स्टरों में की जाती है। तीन बत्ती की जुजबन्द के लिए रजिस्टरों पर
आरी से आठ टक लगाने चाहिए और सिलाई का आरम्भ छिद्र
न० एक में बाहिर की ओर से ही करना चाहिए। बत्तियों का
प्रयोग छिद्र नं० दो और तीन, छिद्र न० चार और पाँच छिद्र न०
छ और सात के बीच बीच में करना चाहिए। छिद्र न० एक और
आठ मे उपरोक्त विधि से गाठ लगाते रहना चाहिए।

चार बत्ती की जुज़बन्दी

चार बत्ती की जुजबन्दी के लिये रजिस्टरों के पुस्तों पर दस
टक लगाने चाहिए और सिलाई का आरम्भ छिद्र न० एक में
बाहिर की ओर से करना चाहिये और बत्तिया छिद्र न० दो और
तीन, चार और पाच, छ और सात, आठ और नौ के बीच
में रखकर सिलाइ कर देनी चाहिए। छिद्र न० एक और छिद्र न०
दस पर सिलाई की गाठ लगाते रहना चाहिए।

डोरी वाली जुजबन्दी

४७ डोरी वाली जुजबन्दी

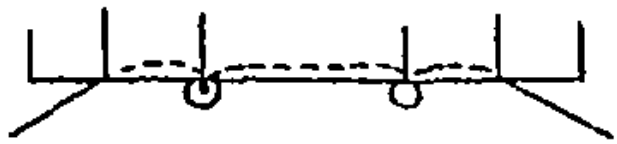

जिस प्रकार जुजबन्दी की सिलाई में बत्तियों का प्रयोग किया जाता है उसी प्रकार बत्तियों के स्थान पर डोरी का प्रयोग भी किया जाता है। बत्ती की सिलाई की अपेक्षा डोरी की सिलाई आसान है और मजबूती की दृष्टि से दोनों सिलाइयां मिलती जुलती ही हैं। जुजबन्दी के अन्दर डोरियां दो प्रकार से रखी जाती हैं—एक उभरी हुई डोरियां और दूसरे टक के अन्दर फंसी हुई डोरियां। डोरी वाली सिलाई करने के लिए सिलाई वाली फ्रेम पर जितनी डोरियों का प्रयोग करना हो उतनी डोरियां सीधी खेंच कर बांध देनी चाहिए और डोरियां जुजों के पुश्त पर लगे हुए निशानों के अन्तर पर ही बांधनी चाहिये ताकि जुज को डोरियों के साथ लगाते समय डोरियां स्वयं ही जुज के निशानों के सामने आ जायें और डोरियों को सीधा खेंच कर बांधना चाहिए ताकि सारी जुजों की सिलाई सीधी आये। डोरियां फ्रेम पर बांधने की विधि फ्रेम वाले अध्याय में लिख दी गई है।

इकट्ठी पुस्तकों की डोरी वाली सिलाई सिलाई वाली मशीन पे ऊपर ही करनी चाहिए। और यदि एक आध पुस्तक की सिलाई करनी हो और सिलाई वाला शिकंजा या फ्रेम

पास न हो तो उस समय पुस्तक की जुर्जों को
रख कर शिकंजे के अन्दर कस देना चाहिये और आरी
मोटे टक लगाकर जुर्जों को शिकंजे में से निकाल लेना चाहिए।
और फिर इन जुर्जों की सिलाई इस प्रकार करनी चाहिए कि
न० एक में सूई को बाहिर की ओर से अन्दर की ओर डाल
छिद्र न० चार में से अन्दर की ओर से बाहिर निकाल
चाहिए और फिर उसके ऊपर दूसरी जुज रख कर और उस
के छिद्र न० चार में सूई को बाहिर की ओर अन्दर डाल
छिद्र न० एक में अन्दर की ओर से बाहिर की ओर निकाल
चाहिए और फिर पिछले सिरे के बचे हुये तागे के साथ
देकर इसी विधि से अन्य जुर्जों को सिला कर लेनी चाहिए औ
साथ साथ छिद्र न० एक और छिद्र न० चार के पास गाठ लगा
जाना चाहिये। जब सारी जुर्जों की सिलाई हो चुके तो सू
चार गुना तागा डाल कर उसको छिद्र न० दो में ऊपर से नी
की ओर निकालकर दोनों ओर दो दो इंच धागा छोड़कर का
देना चाहिए। इसी प्रकार छिद्र न० तीन में ऊपर से नीचे
ओर सूई को डाल कर दो दो इंच तागा दोनों ओर रख क
फालतू तागा काट देना चाहिये। सूई को पिरोते समय इस बा
का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिये कि सूई प्रत्येक जुज
अन्दर वाले तागे के अन्दर से हो कर निकले। अर्थात् जुर्जों
सिलाई वाले सारे तागे सूई के बाहिर की ओर पुस्तक के सा
रहें। कोई तागा अलग न रहे।

उभरी हुई डोरियां

४८ उभरी हुई डोरिया

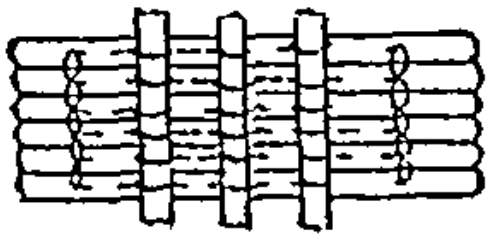

४९ डोरी के साथ सिलाई

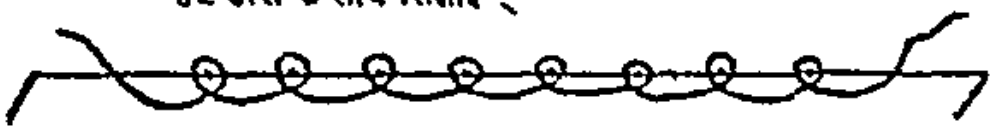

५० पत्ती के साथ सिलाई

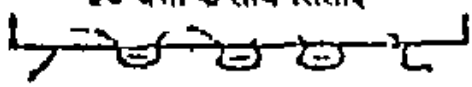

जुजों पर आरी का टक देकर जब डोरिया लगाई जाती हैं तो डोरियाँ जुजों के अन्दर पीठ के बराबर फिट हो जाती हैं और यदि हम जुजों के अन्दर आरी का टक न दें और डोरी को जुजों को पीठ के ऊपर रख कर जुजों की सिलाई करें तो पीठ पर डोरिया उभरी रहती हैं। चमडे की जिल्दों में इस प्रकार की डोरिया लगाने से जिल्दों की पीठ अति सुन्दर दिखाई देती है। इस प्रकार की डोरियों की सिलाई करने के लिए जुजों को सिलाई वाली मशीन के ऊपर जितनी डोरिया लगानी हों उतनी डोरियां बाध कर सिलाई करनी चाहिये। उदाहरणार्थ यदि तीन डोरिया लगानी हों तो पाच छिद्रों में से सुई गुजारनी होगी और डोरी

वाले छिद्रों में सूई दो बार गुजारनी पड़ती है। एक बार अन्द
की ओर से सूई को वाहर लाकर फिर तागे के ऊपर से घुमा
उसी छिद्र में से सूई को अन्दर की ओर ले जाना पड़ता।
जैसे छिद्र न० एक में सूई बाहिर की ओर से अन्दर की ओर
जाकर फिर छिद्र न० दो मे से अन्दर की ओर से सूई को बा
ले आओ और फिर तागे को डोरी के ऊपर से घुमाकर ि
न० दो में सूई को बाहिर की ओर से अन्दर की ओर
जाओ। फिर सूई को छिद्र न० तीन में से अन्दर की ओर
बाहिर की ओर लाकर तागे को डोरी के ऊपर से घुमाकर ि
न० तीन में से सूई को वाहिर की ओर से अन्दर की ओर
ले जाओ। फिर सूई को छिद्र नं० चार में से अन्दर की ओर
बाहिर की ओर ले जाओ। फिर तागे की डोरी के ऊपर से घुम
छिद्र न० चार मे बाहिर से अन्दर की ओर ले जाओ। इ
पश्चात सूई को छिद्र न पाच में अन्दर की ओर से बाहि
जाओ और फिर इसके ऊपर दूसरी जुज रख कर इसी प्र
सिलाई कर लो। अब दूसरी जुज में सूइ पहले छिद्र न०
मे बाहिर की ओर से अन्दर की ओर जायेगी और इसी
लौटती हुई छिद्र न० एक पर पहुँच कर पहली जुज के साथ
हुए तागे के साथ गाठ दे देनी चाहिए और फिर तीसरी
छिद्र न० एक से शुरू करनी चाहिये। यदि किनारे वाले
सिलाइयों के साथ भी डोरी लगानी हो तो हर सिलाई के
एक तागे का घुमाव डोरी क ऊपर देकर फिर दूसरी जुज
सिलाइ शुरू करनी चाहिये।

टक दी हुई जुज़ों की सिलाई मशीन पर

आरी से टक दी हुई जुजों की सिलाई भी यदि मशीन पर करनी हो तो जितनी डोरिया लगानी हों उन डोरियों को जुजों के टक के सामने रख कर उपरोक्त विधि अनुसार सिलाई कर लेनी चाहिये। टक के अन्दर डोरिया देते समय इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिये कि जिन छिद्रों मे डोरिया देनी हों वह छिद्र या टक डोरियों के आधार पर खुले होने चाहियें। सिलाई के पश्चात् डोरिया पुस्तक के दोनों ओर दो दो इंच गत्तों के साथ लगाने के लिए फालतू रखनी चाहियें।

तार की सिलाई की जुजबन्दी

लम्बे रजिस्टरों की जुजबन्दी करते समय कई बार तार की सिलाई की जजबन्दी की जाती है। तार की जुजबन्दी करने के लिये आध इंच चौड़ी बत्ती टेप या चमडे की कतरन का प्रयोग किया जाता है। जितने टेप लगाने हों उतने टेपों के स्थान एक जुज की पुश्त पर निश्चित कर लेने चाहियें अर्थात् जुज की पुश्त पर पैंसिल से निशान कर लेने चाहियें और फिर जुज की तार वाली स्टिचिंग मशीन के ऊपर कापी की स्टिचिंग के आधार पर रख कर स्टिच कर लेना चाहिये। जुज को स्टिच करते समय इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए कि तार का मोड डोरी के ऊपर बाहिर की ओर हो। अर्थात् सिलाई कापी से उल्टी होनी चाहिये। जिस प्रकार तार का मोड़ कापी के अन्दर होता है

और तार का सीधा भाग बाहिर की ओर होता है, उसी प्रकार तार का सीधा भाग जुज के अन्दर और मोड़ वाला भाग जुज के बाहर टेप के ऊपर होना चाहिये। जितने टेप लगाने हों उतने ही स्विच एक जुज पर टेप रख कर लगा लेने चाहियें। उसके पश्चात उसके ऊपर दूसरी जुज रख कर उसके भी स्विच लगा लेने चाहियें। इसी तरह जितनी जुजें रखनी हों उन सबको स्टिचिंग द्वारा फीते के साथ जोड़ लेना चाहिये। पुस्तक की दोनों ओर पहली प्रकार से दो दो इंच फीता गत्ते के साथ लगाने के लिए फालतू रखना चाहिये।

जाली या लपेट वाली सिलाई

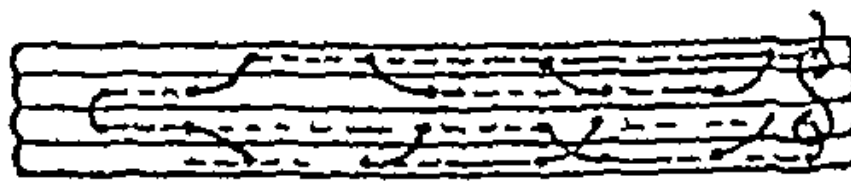

२१ लपेट की सिलाई

जालीदार सिलाई या लपेट की सिलाई का अन्तर दूसरी जुज्बदी की सिलाई से थोड़ा सा विभिन्न है। अन्य सारी विधि उसी प्रकार ही है। इस में पहली दो जुज़ों की सिलाई के पश्चात अन्य बीच वाली जुज़ों को ऊपर नीचे बारी बारी से की जाती है और अन्त की दो जुज़ा की सिलाई फिर पहली सिलाई की भांति ही कर दी जाती है। सिलाई के छिद्र डोरियों के आधार पर रख जाते हैं।

सिलाई करने की विधि

दो जुजों की सिलाई करने के पश्चात् तीसरी जुज की सिलाई करते समय छिद्र न० एक मे बाहिर की ओर से सूई को अन्दर ले जाकर फिर छिद्र न० दो मे से सूई को अन्दर की ओर से बाहिर की ओर ले आयें। इसके पश्चात उसके ऊपर चौथी जुज को रख कर उस चौथी जुज के छिद्र न० तीन म सूई को बाहिर की ओर से अन्दर की ओर ले जायें और फिर छिद्र न० चार मे से सूई को अन्दर की ओर से बाहिर की ओर निकाल दें। उसके पश्चात जुज न० तीन के छिद्र न० पाच मे सूई को बाहिर की ओर से अन्दर ले जायें और छिद्र न० छः मे से अन्दर की ओर से बाहिर की ओर ले आयें। इसके पश्चात जुज न० चार के छिद्र न० सात में सूई को बाहिर की ओर से अन्दर की ओर ले जायें और छिद्र न० आठ मे से सूई को अन्दर की ओर से बाहिर निकाल दें और फिर जुज न० तीन मे छिद्र न० नौ में बाहिर की ओर से ऊपर की ओर डाल कर छिद्र न० दस में से अन्दर की ओर से बाहिर निकाल दें। फिर जुज न० चार के छिद्र न० ग्यारह मे सूई को बाहिर की ओर से डाल कर छिद्र न० बारह में से बाहिर निकाल लें और इसके पश्चात् जुज न० पाँच को ऊपर रख कर इसी प्रकार सिलाई शुरू कर दें और अन्त की दो जुजों की सिलाई फिर पहली दो जुजों की सिलाई के आधार पर करके छोड़ दें और जुजों के किनार के अन्त

जो बचे हुए हैं अर्थात जिनकी गाठ एक दूसरे के साथ नहीं पड़ी जैसे कि जुज न० दो और न० चार के बीच में न० तीन जुज खाली है, ऐसे स्थान पर एक तागे की कडी लगा कर उनको आपस में मिला लेना चाहिये और डोरियों को दोनों ओर से डेढ़ डेढ़ इच रख कर अन्य डोरी काट देनी चाहिये।

तिर्छी सिलाई

यह सिलाई अलग अलग पत्रों वाली पुस्तक पर जिल्द बनाते समय की जाती है। यह सिलाई टिच की सिलाइ से भिन्न होती है। परन्तु इस सिलाई मे भी सुये से टिच की सिलाई की भाति छेद निकाल कर सिलाई की जाती है। परन्तु टिच की सिलाई की अपेक्षा यह खुलने मे जुजबन्दी की सिलाई की पुस्तकों के प्रकार ही खुलती है। फटी हुई जुजों या दो दो पत्रों की जुजों की जिल्द बनाते समय भी इसी प्रकार की सिलाई की जाती है।

सिलाई की विधि

सब पत्रों को इकट्ठा करके ठोक कर पुश्ता बराबर कर लेना चाहिए फिर पुश्ते से दो सूत हट कर एक सीधी रेखा पैंसिल से खेंच लेनी चाहिए और उसके ऊपर इच इच या डेढ़ डेढ़ इच के अन्तर पर बारीक सुये द्वारा छेद कर लेने चाहिए। इसके पश्चात् पुस्तक के पत्रों को धीरे से खेंच कर चौकी या फटे के किनारे से बढ़ा कर रख लेना चाहिये ताकि छेदों वाला स्थान फटे से बाहर रहे। फिर सूई को छिद्र न० एक मे ऊपर से डाल कर नीचे

से निकाल लें और तागे के पिछले सिरे के साथ नीचे एक गाठ लगा दें फिर सूई को छिद्र न० दो में ऊपर से नीचे की ओर ले जायें और फिर इसी प्रकार छिद्र न० तीन चार आदि में ऊपर से नीचे ले जाकर अन्त के छिद्र मे दो बार घुमा कर फिर उन्हीं छिद्रों मे ऊपर से नीचे की ओर सिलाइ करते हुए अन्त में पहले स्थान पर आकर पहली गाठ के साथ दूसरी गाठ लगा दें। इस सिलाइ मे पहली बार तागा बाई ओर से दायीं ओर तिर्छा चलेगा और उल्टी सिलाई मे तागा दायीं ओर से बाई ओर तिर्छा चलेगा और पुस्तक की पीठ पर तिर्छे क्रास बन जायेंगे।

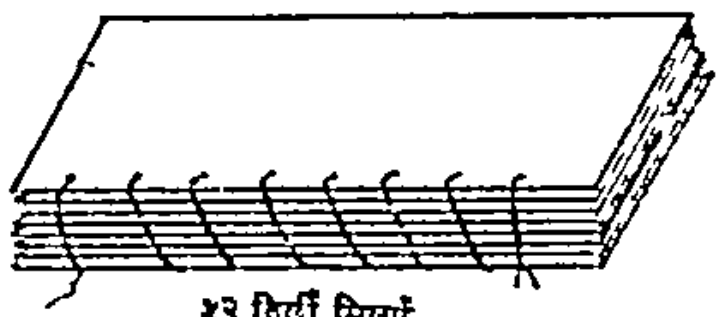

५२ तिर्छी सिलाई

५३ तिर्छी सिलाई का दूसरा रूप

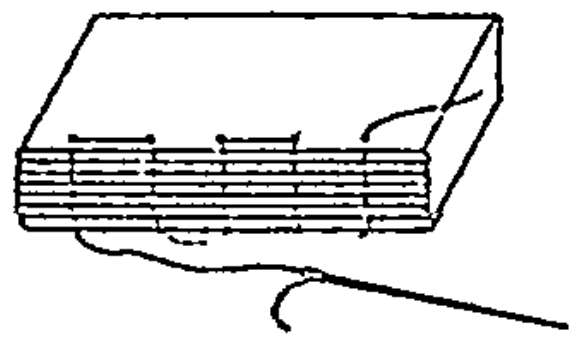

कटाई

सर्व प्रकार की कटाई करने के लिए आवश्यक बातें

1 कटाई सीधी होनी चाहिए। अर्थात् कटाई समकोन हो चाहे वह कागजों की, गत्तों की या पुस्तकों की हो। आड़ी औ तिर्छी कटाई पुस्तकों की आकृति को बिगाड़ देती है।

2 पुस्तकों की कटाई मार्जन लाईन से $\frac{1}{8}$ इंच या $\frac{1}{16}$ इंच हट कर करनी चाहिए और पुस्तक के तीनों ओर से मार्जन एक जैसा ही रहना चाहिये।

3 पुस्तक का कोई छपा हुआ अक्षर या पृष्ठ संख्या आदि कटने न पाये।

4 पुस्तक की कटाई करते समय सब से प्रथम ऊपर वाले भाग की कटाई करनी चाहिये।

5 पुस्तक की कटाई सिलाई के पश्चात् और गत्तों व कागजों की कटाई सिलाई से पहले करनी चाहिये।

कागजों की कटाई

कागजों की कटाई छुरी, चाकू या मशीन द्वारा की जाती है। आम तौर पर कागजों की कटाई बड़े कागज के साइज के $\frac{1}{2}$ $\frac{1}{4}$ $\frac{1}{8}$ या $\frac{1}{16}$ के हिसाब से की जाती है। चाकू और छुरी से कागजों को काटने के लिए आठ आठ या दस दस पन्नों की एक तह लगा कर काटना चाहिये। एक तह के कट चुकने के पश्चात् फिर उन टुकड़ों की दो तहें बराबर की लगाकर काट लेनी चाहियें।

अर्थात् पहली कटाई में पन्ने के $\frac{1}{2}$ भाग और दूसरी कटाई में पन्ने के $\frac{1}{4}$ भाग और इसी प्रकार अन्य कटाइयों में छोटे २ भाग करते जायेंगे। चाकू और छुरी से कटाई उस समय करनी चाहिए जब कि उन कागजों की कापियें रजिस्टर और नोट बुकें आदि बनानी हों। या पोस्टीन के लिये कागज काटने हों। क्योंकि छुरी और चाकू से इन कागजों की कटाई साफ नहीं होती है और इसीलिये कापियों रजिस्टरों और नोटबुकों आदि की सिलाई करने के पश्चात् कटाई की जाती है।

मशीन द्वारा कागजों की कटाई

राइटिंग पैड, बहीखाते के पन्ने, छपाई के कागज, इन सब की कटाई मशीन द्वारा करनी चाहिये। मशीन के अन्दर बड़े कागजों को रख कर ऊपर वाले एक कागज की तह लगा कर फिर तह को खोल कर पन्ने को कागजों के ऊपर बिछा कर मशीन के अन्दर इस प्रकार कसना चाहिए कि कटाई तह किये हुये भाग पर ही हो। इसी तरह जितने छोटे टुकड़े करने हों उतनी तहें लगा कर कटाई कर लेनी चाहिए। कागजों को मशीन के अन्दर दबाते समय इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए कि कागज बिल्कुल सीधे रहें। क्योंकि कागजों के सीधे रहने से ही कटाई सीधी होगी।

गत्तों की कटाई

गत्तों की कटाई कैंची, चाकू, गत्ते काटने वाली छोटी मशीन और बड़ी कटाई की मशीन द्वारा की जाती है। दस औंस, बारह

औंस और एक पौंड के गत्ते की कटाई बड़ी कैंची द्वारा की जा सकती है और इस से मोटे गत्तों की कटाइ गत्ते काटने वाल मशीन द्वारा या खडी मशीन द्वारा करनी चाहिए और जहा कोई मशीन आदि प्राप्त न हो वहा मोटे गत्तों की कटाई चाकू द्वारा भी हो सकती है।

कैंची द्वारा गत्तों की कटाई

जिस साइज का गत्ता काटना हो गत्ते के ऊपर गुणिया से उस की लम्बाई चौडाई का पैंसिल से निशान कर लेना चाहिये। गत्ते पर पैंसिल का निशान करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि निशान का प्रारम्भ किसी कोने या किनारे से हो। मध्य में निशान लगा देने से उसके आस पास का बहुत सा गत्ता फालतू कट जाता है। निशान लगे हुए गत्ते के ऊपर कैंची को इस प्रकार चलाना चाहिए कि कैंची एक ही दाब मे पूरी लम्बाई तक गत्ते को काट दे। कैंची द्वारा कटे हुए गत्ते के किनारे पर यदि कोई टेढ या खुरदरापन हो तो उसे रेगमार द्वारा रगड़ कर साफ कर लेना चाहिए। कैंची की धार तेज होनी चाहिए और कैंची जितनी लम्बी और बड़ी होगी उतना ही गत्ते को साफ काटेगी।

चाकू द्वारा गत्तों की कटाई

चाकू द्वारा गत्ते की कटाई करने के लिए एक लोहे या स्टेटएज अर्थात लोहे की लम्बी पट्टी जिसका किनारा बिल्कुल

सीधा हो अवश्य होना चाहिए। गत्ते पर निशान लगाने के पश्चात् स्टेटएज को कटाई वाली लाईन के सहारे सीधा टिका देना चाहिए और बायें हाथ की उगलियों और अगूठे से स्टेटएज को दवा कर चाकू की कटाई वाली लाईन के ऊपर स्टेटएज के साथ २ फेरते जाना चाहिए। जब गत्ता आधे से अधिक कट जाये तो स्टेटएज उठा कर गत्ते को मोड़ कर तोड लेना चाहिए और खुरदरे किनारे को रेती या रेगमार द्वारा साफ कर लेना चाहिए। गत्ता काटने के लिए जो चाकू प्रयोग मे लाया जाय उसकी नोक सीधी और तेज धार वाली होनी चाहिए और गत्ते को साफ और सीधे लकड़ी के फट्टे के ऊपर रख कर काटना चाहिये।

गत्ता काटने वाली छोटी मशीन द्वारा गत्तों की कटाई

गत्ता काटने वाली मशीन को चित्र मे देखिये। इसके एक किनारे पर लोहे की लम्बी छुरी लगी हुई है और लकड़ी के फट्टे के किनारे के साथ लोहे की पलेट लगी हुई है। फट्टे का किनारा और ऊपर की लगी हुई पट्टी गुणिया का काम देती है। इसके सहारे गत्ते को लगा कर गत्ता काटने से गत्ता सीधा कटता है। जिस साइज का गत्ता काटना हो उस साइज के गत्ते के ऊपर पैंसिल से निशान लगा कर गत्ते को ऊपर वाली पट्टी के साथ टिका कर कटाई वाले निशान को किनारे वाली पट्टी के साथ रख कर दायें हाथ से उठी हुई बात (छुरी) को नीचे की ओर

की जाती थी। यद्यपि मशान द्वारा पुस्तकों की कटाइ सस्ती और अच्छी होती है तो भी प्रत्येक जिल्द साज को शिकजे द्वारा पुस्तक की कटाई करने का अभ्यास होना चाहिये। क्योंकि जिस स्थान पर कटाई की मशीन प्राप्त न हो सके उस स्थान पर पुस्तकों की कटाइ शिकजे द्वारा ही की जाती है। शिकजे द्वारा पुस्तक को काटने के लिये एक अर्ध गोल कात बनी हुई होती है। जिसके अन्दर के भाग पर तेज धार कागज को काटने के लिए बनी रहती है और एक सिरे पर लकड़ी का दस्ता लगा रहता है। कात को दायें हाथ से पकड़ कर शिकजे के अन्दर कसी हुई पुस्तक के ऊपर चलाया जाता है। कात का प्रहार ऊपर से नीचे की ओर अर्थात् खेंचते समय अधिक जोर से होना चाहिए और नीचे से ऊपर कात को ले जाते समय जरा ढीला ले जाना चाहिये।

शिकजे के अन्दर पुस्तक को कसते समय पुस्तक के दाईं और बाईं ओर कटाई वाले गुटके रख कर शिकजे को कसना चाहिये और जिस पुस्तक की कटाई करनी हो उसके ऊपर मार्जन छोड़ कर पेन्सिल की लाइन लगा लेनी चाहिये और उस लाईन के साथ ही गुटकों का ऊपर का भाग होना चाहिये। सब से प्रथम पुस्तक का ऊपर वाला भाग काटना चाहिए और पुस्तक की पीठ वाला भाग नीचे की ओर और सामने वाला भाग ऊपर को रख कर पुस्तक की कटाई करनी चाहिए ताकि कात का प्रहार सामने से चलकर नीचे पुस्ते तक आये। कात का प्रहार कटाई वाले गुटकों के साथ मस करता हुआ चले। पुस्तक के ऊपर वाला भाग काटने

के पश्चात् नीचे के भाग को काटना चाहिए और अन्त में सामने वाले भाग को काट लेना चाहिये।

मशीन द्वारा पुस्तकों की कटाई करने की विधि

कटाई करने की मशीनें भिन्न भिन्न साइजों की होती हैं परन्तु उनके प्रयोग करने की विधि एक सी होती है। कटाई करने वाली मशीन में तीन भाग होते हैं, एक भाग पुस्तकों को निश्चित स्थान पर रखने का और दूसरा भाग मशीन में रखी हुई पुस्तकों को दबाने का और तीसरा भाग कटाई करने का।

निश्चित स्थान पर रखने वाला भाग

मशीन के ऊपर एक बड़ी प्लेट लोहे की लगी रहती है जिसके ऊपर पुस्तकों को रख दिया जाता है। पुस्तकों को सिधाई में करने और निश्चित स्थान पर रखने के लिए मशीन के आगे एक छोटा सा गोल चक्र लगा रहता है उस चक्र में एक लोहे की हत्थी उसको घुमाने के लिए लगी रहती है। उस हत्थी का सम्बन्ध मशीन के पीछे लगी हुई लोहे की खड़ी प्लेटों से होता है। इसी प्लेट द्वारा मशीन में रखी हुई पुस्तकें आगे या पीछे की ओर होती हैं और यही प्लेट पुस्तकों को सीधा रखने के काम भी आती है। गोल चक्र को दाईं ओर घुमाने से पुस्तकें कटाई वाले स्थान से आगे की ओर बढ़ती हैं और चक्र को बाईं ओर घुमाने से पुस्तकें कटाई वाले स्थान से पीछे की ओर बढ़ती हैं।

पुस्तकों को दबाने वाला भाग—कटाई के लिए मशीन में रखी हुई पुस्तकों को निश्चित स्थान पर दबाने के लिए एक बड़ा गोल चक्र मशीन के ऊपर लगा रहता है और उस चक्र का सम्बन्ध पुस्तकों को दबाने वाली लोहे की प्लेट से होता है। ऊपर वाले बड़े चक्र को दाहिनी ओर घुमाने से प्लेट ऊपर को उठती है और बाईं ओर घुमाने से प्लेट नीचे की ओर आती है और इसी चक्र द्वारा ही पुस्तकों को निश्चित स्थान पर दबाया जाता है।

काटने वाला भाग—मशीन की दाहिनी ओर एक बड़ा गोल चक्र लगा रहता है और उस गोल चक्र के साथ एक लम्बी हत्थी लगी रहती है, जो चक्र को घुमाने के काम आती है। उस चक्र का सम्बन्ध भिन्न भिन्न गरारियों से होता हुआ कागज काटने वाली छुरी (कार्क) से होता है। इस चक्र को घुमाने से कागज काटने वाली छुरी ऊपर से आकर नीचे वाली प्लेट के साथ लग कर फिर ऊपर को स्वयं ही उठ जाती है और उसके एक बार ऊपर से नीचे आने और जाने से ही पुस्तकों के काटने वाले स्थान कट जाते हैं।

पुस्तक काटने की विधि

मशीन द्वारा पुस्तक काटने की विधि इस प्रकार है कि जिस पुस्तक को काटना हो उस पुस्तक को मशीन की लोहे वाली बड़ी प्लेट के ऊपर रख कर सब से प्रथम दायें हाथ वाले बड़े चक्र को घुमाकर छुरी को अपनी निश्चित ऊंचाई तक ले जाना चाहिए। उस के पश्चात ऊपर वाले चक्र को बायें हाथ घुमाकर दबाने वाला

प्लेट को भी अपनी निश्चित ऊचाई तक ले जाना चाहिए। फिर पुस्तक के नीचे वाले भाग को पीछे वाली प्लेट के साथ लगाकर पीछे वाली प्लेट को आगे के चक्र से घुमा कर आगे या पीछे ऐसे स्थान पर करना चाहिये जिससे केवल पुस्तक की कटाई करने वाला भाग ही छुरी के नीचे आये। और उस भाग को निश्चित रूप से जाचने के लिए ऊपर वाले चक्र को बाई ओर घुमाकर दवाने वाली प्लेट को धीरे धीरे नीचे पुस्तक के ऊपर रोक लेना चाहिए। अब उस प्लेट के बाहिर जितना भी भाग होगा वह कट जायेगा और उसी अन्दाजे से पुस्तक को आगे और पीछे करके निश्चित स्थान पर रखकर ऊपर वाले चक्र को बाई और घुमाकर प्लेट द्वारा पुस्तक को दबा देना चाहिए। पुस्तक को दबाने से पहिले इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि पुस्तक का नीचे वाला भाग सीधा पिछली प्लेट के साथ जुड़ रहे ताकि अन्य कटाइया भी उसी सिधाई के आधार पर हो सकें और पुस्तक को दबाने से पहिले पुस्तक के नीचे गत्ते का एक लम्बा टुकडा केवल कटाई वाले स्थान पर रख देना चाहिये ताकि छुरी सीधी लोहे वाली प्लेट से न टकराये। पुस्तक को दबाने के पश्चात बायें हाथ वाले चक्र को जोर से घुमाना चाहिये और तब तक घुमाते रहना चाहिये जब तक कि छुरी नीचे वाली प्लेट से टकरा कर ऊपर की ओर न उठे और जब छुरी अपनी निश्चित ऊचाई तक पहुच जाये तो ऊपर वाले चक्र को दाई ओर घुमाकर अर्थात् दबाने वाली प्लेट को ऊपर उठा कर पुस्तक को निकाल लेना चाहिये।

और फिर उस नीचे वाले भाग की ओर और आगे वाले भाग की कटाई भी इसी प्रकार कर लेनी चाहिये। कटाइयों को सीधा करने के लिए प्रारम्भ में पुस्तक पर पेन्सिल की लाइनें लगा देनी चाहिये। पेन्सिल की लाइनें लगाते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि पुस्तक के तीनों ओर मार्जन एक सा रहे अर्थात् जितना अन्तर पुस्तक की छपाई के ऊपर की लाईन से ऊपर रहे उतना ही अन्तर नीचे की लाईन से भी नीचे रहे और सामन वाले भाग का अन्तर भी इसी आधार पर रखना चाहिए।

मशीन द्वारा एक पुस्तक को काटने में जितना समय लगता है उतने समय में ही पन्द्रह-पन्द्रह बीस बीस पुस्तकें एक साथ काटी जा सकती हैं। इकट्ठी पुस्तकें काटते समय एक ही ऊचाई की दो या तीन जितनी काटने वाली मशीन की चौड़ाई हो थईया लगाकर उपरोक्त लिखे अनुसार कटाई कर लेनी चाहिये। इकट्ठी पुस्तकों की कटाई करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि दाइ और बाई ओर की कटाई करते समय पुस्तकों का टिपाय एक दूसरे से भिन्न होना चाहिए। जैसे यदि हम नीचे वाली पुस्तक का पुश्ता दाई ओर रखते हैं तो उसके ऊपर वाली पुस्तक का पुश्ता बाई ओर रखना चाहिए। इसी प्रकार दाइ और बाई ओर पुस्तकों का पश्ता रखकर पुस्तकों की दाई और बाई ओर कटाई करनी चाहिये। ऐसा करने से एक तो दबाव एक जैसा पड़ता है और दूसर कटाई भी ठीक होती है। इसके अतिरिक्त इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि पुस्तक की प्रिंट की हुई कोई

लाइन न कट जाये और प्रिन्ट किए हुए पृष्ठ से ऊपर नीचे और सामने की ओर वाला भाग एक जैसी दूरी पर ही कटे। ऐसा न हो कि ऊपर वाले भाग की कट पृष्ठ सख्या के साथ लग जाये और नीचे वाली कट अधिक लम्बी हो। दोनों ओर की कटाई इस प्रकार हो कि छपा हुआ पृष्ठ मध्य मे दिखाई दे।

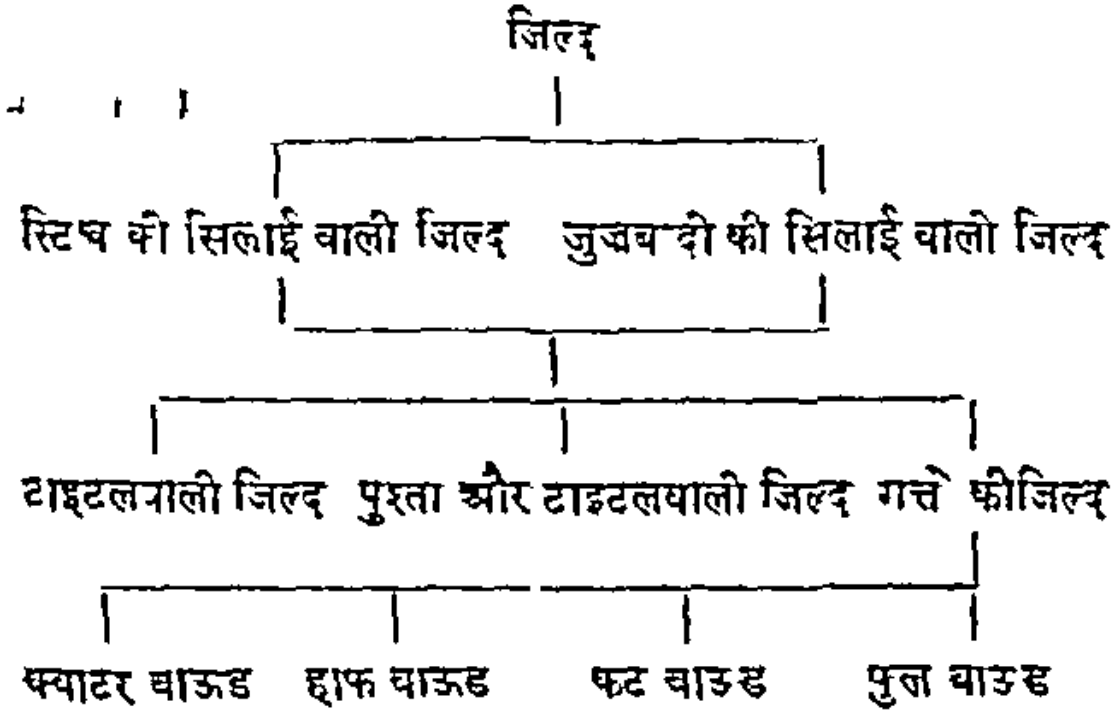

जिस प्रकार मनुष्य अपने शरीर की रक्षा और उसकी सुन्दरता को बढ़ाने के लिए भिन्न भिन्न प्रकार के वस्त्र पहनता है उसी प्रकार पुस्तकों को सुरक्षित रखने के लिए और पुस्तकों के बाहिरी रूप को सुन्दर बनाने के लिए उस को भिन्न भिन्न प्रकार की जिल्दें लगाई जाती हैं। साधारण पुस्तकों पर साधारण और सस्ती पुस्तकों पर केवल टाइटल ही चिपकाया जाता है और उससे

बढ़िया पुस्तकों पर टाइटल के अन्दर पोस्तीन भी लगाई जाती है। और जिन पुस्तकों को बहुत चिरकाल तक सुरक्षित रखने की आवश्यकता होती है उनके ऊपर गत्ते की जिल्द बनाई जाती है। जैसे केवल पुश्ते के साथ चिपका कर डोरिया लगाकर और पत्तिया लगाकर गत्ते के ऊपर जिल्द को सुन्दर बनाने के लिए भिन्न २ प्रकार की अबरिया, रगदार कागज, वाइडिंग क्लाथ, रंगीन कपड और चमड़ा आदि लगाया जाता है। चमड़ा और कपड़ा लगाने के मुख्य भिन्न २ प्रकार माने गये हैं। जिनका विस्तृत वर्णन आगे दिया जाता है।

जिल्दों की किस्में

जिल्दें चार प्रकार की होती हैं

1 क्वाटर बाऊंड (Quarter boun l)

2 हाफ बाउड (Half bound)

3 कट बाउड (Cut bound)

4 फुल बाउड (Ful bou d)

क्वाटर बाऊंड

जिन जिल्दों के ऊपर केवल परता लगाया जाता है और पुश्ते के ऊपर अबरी आदि लगाकर जिल्द के गत्ते को ढाप दिया जाता है उसे क्वाटर बाऊंड कहते हैं। ऐसी जिल्दों में पुश्ते के कोने अन्दर की ओर मोड़ दिये जाते हैं और ऊपर लगी हुई अबरी को भी अन्दर की ओर मोड़ कर या तीन चिपका दी जाती है।

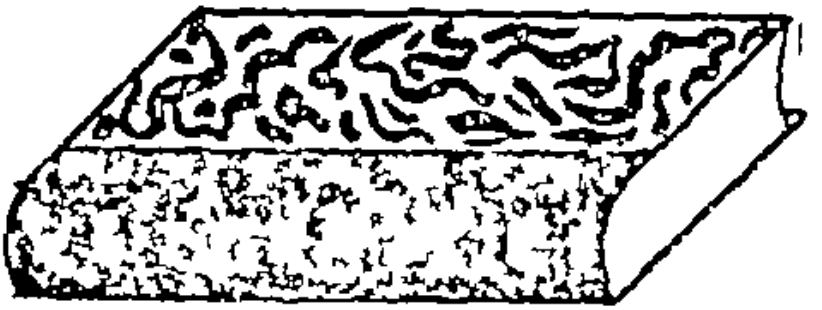

५४ क्वाटर बाऊड

हाफ बाऊड

५५ हाफ बाऊंड

हाफ बाऊड जिल्दों पर क्वाटर बाऊड जिल्दों की तरह पुश्ता लगा कर और गत्ते के कोनों पर बाइंडिंग क्लाथ के कोने लगा दिये जाते हैं और फिर पुश्ता और कोनों को छोड़ कर अन्य सारे गत्ते पर अबरी लगाकर अबरी को अन्दर की ओर मोड़ दिया जाता है और अन्दर से पोस्तीन चिपका दी जाती हैं। यह जिल्दें क्वाटर बाऊड जिल्दों से मजबूत होती हैं।

कट बाऊड

जिन जिल्दों पर केवल पुश्ता लगाकर और ऊपर अबरी लगा कर प्रैस द्वारा कटाई करली जाती है उनको कट बाऊड जिल्दें

बढ़िया पुस्तकों पर टाइटल के अन्दर पोस्तीन भी लगाई जाती है। और जिन पुस्तकों को बहुत चिरकाल तक सुरक्षित रखने की आवश्यकता होती है उनके ऊपर गत्ते की जिल्द बनाई जाती है। जैसे केवल पुश्ते के साथ चिपका कर डोरिया लगाकर और पत्तिया लगाकर गत्ते के ऊपर जिल्द को सुन्दर बनाने के लिए भिन्न २ प्रकार की अबरिया, रंगदार कागज, बाइंडिंग क्लाथ, रंगीन कपड और चमड़ा आदि लगाया जाता है। चमड़ा और कपड़ा लगाने के मुख्य भिन्न २ प्रकार माने गये ह। जिनका विस्तृत वर्णन आगे दिया जाता है।

जिल्दों की किस्में

जिल्दें चार प्रकार की होती हैं

1 क्वाटर बाऊंड (Quarter bound)
2 हाफ बाऊड (Half bound)
3 कट बाउड (Cut bound)
4 फुल बाउड (Ful bound)

क्वाटर बाऊट

जिन जिल्दों के ऊपर केवल पुश्ता लगाया जाता है और पुश्ते के ऊपर अबरी आदि लगाकर जिल्द के गत्ते को ढाप दिया जाता है उसे क्वाटर बाऊड कहते हैं। ऐसी जिल्दा मे पुश्ते के कोने अन्दर की ओर मोड़ दिये जाते हैं और ऊपर लगी हुई अबरी को भी अन्दर की ओर मोड़ कर गोंद से चिपका दी जाती है।

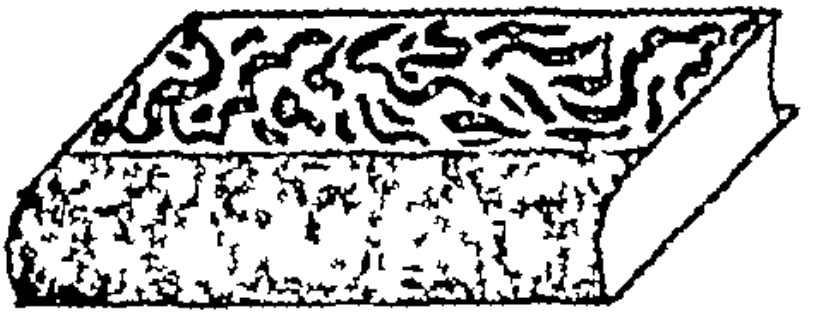

५४ क्वार्टर बाउंड

हाफ बाउंड

५५ हाफ बाउंड

हाफ बाउंड जिल्दों पर क्वाटर बाउंड जिल्दों की तरह पुश्ता लगा कर और गत्ते के कोनों पर बाइंडिंग क्लाथ के कोने लगा दिये जाते हैं और फिर पुश्ता और कोनो को छोड कर अन्य सारे गत्ते पर अबरी लगाकर अबरी को अन्दर की ओर मोड़ दिया जाता है और अन्दर से पोस्तीन चिपका दी जाती है। यह जिल्दें क्वाटर बाउंड जिल्दों से मजबूत होती है।

कट बाउंड

जिन जिल्दों पर केवल पुश्ता लगाकर और ऊपर अबरी लगा कर प्रेस द्वारा कटाई करली जाती है उनको कट बाउंड जिल्दें

कहते हैं। ऐसी जिल्दों में न तो पुश्ते के कोने ही अन्दर मोड़े जाते हैं और ना ही अबरी के कोने को ही अन्दर माड़ा जाता है। केवल पुश्ते और अबरी को अन्दर की ओर चिपका कर गत्ते के साथ अन्दर से पोस्तीन चिपका कर उसकी कटाई कर दी जाती है। कट वाऊड और क्वाटर वाऊड में यह अन्तर है कि क्वा वाऊड की जिल्द पुस्तक की कटाई करने के पश्चात् बनाई जाती है और उसके पुश्ते और उनके कोनों को अन्दर की ओर मोड़ दिया जाता है और कट वाऊट की जिल्द पुस्तक की कटाई करने से पहले बनाइ जाती है और इसके पुश्ते को अन्दर के कोनों की ओर नहीं मोडा जाता।

फुल वाऊड

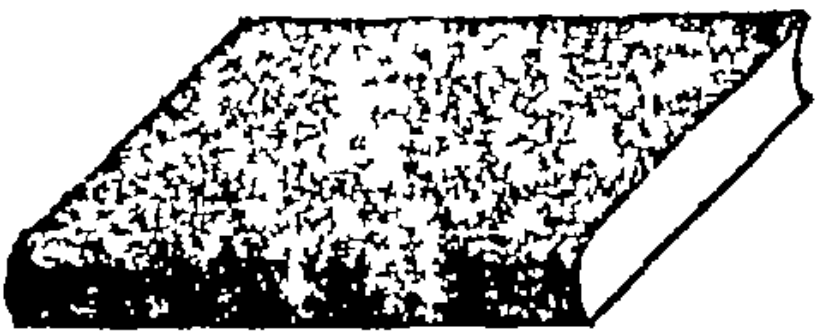

५६ फुल वाऊंड

फुल वाऊंड की जिल्दें तीन प्रकार की होती हैं।

1 लैदर फुल वाऊंड।

2 क्लाथ फुल वाऊड।

3 पेपर फुल वाऊड।

लैदर फुल बाउड

जिन जिल्दों के ऊपर पूरा चमड़ा चढ़ाया जाता है अर्थात जिस जिल्द के गत्ते और पुस्तक की पीठ को चमडे से ढाप दिया जाता है उसे फुल लैदर बाऊड कहते हैं। यह जिल्द अधिक मजबूत होती है तथा बहुमूल्य पुस्तकों पर चढ़ाई जाती है।

क्लाथ फुल बाउड

चमड़े के स्थान पर यदि जिल्द के ऊपर बाइंडिंग क्लाथ या अन्य कोइ कपडा लगाया जाये तो उसे फुल क्लाथ बाऊड कहते हैं। यह जिल्द चमडे से दूसरे नम्बर पर है।

पेपर फुल बाऊड

आज कल चमडा और कपडे का प्रयोग न करके केवल कागज के टाइटल या मराकू आदि को ही चमडे के रूप मे जिल्द के ऊपर चढ़ा दिया जाता है। ऐसी जिल्दा को पेपर फुल बाऊड कहा जाता है। मजबूती की दृष्टि से यह जिल्द ऊपर की दोनों जिल्दों से घटिया है।

इसके अतिरिक्त सिलाई के आधार पर दो प्रकार की जिल्दें बाधी जाती हैं। एक तो वह जिल्दें जो पुस्तक के ऊपर से सिलाई करके बनाई जाती हैं और दूसरी वह जिल्दें जो जुजबन्दी करके अर्थात पुस्तक के पन्नों को अन्दर से सी कर बनाई जाती हैं। साधारण स्कूली की पुस्तकों तथा अन्य छोटी छोटी पुस्तकों के ऊपर से ही सिलाइ की जाती है और बढ़िया प्रकार की पुस्तकों

की सिलाई जुजबन्दी द्वारा की जाती है। इन दोनों प्रकार की जिल्दों में अन्तर यह है कि पुस्तक के ऊपर वाली सिलाई की जिल्द पूर्ण रूप से खुलती नहीं अर्थात् पुस्तक के पृष्ठ पूरे फैलते नहीं और जुजबन्दी वाली पुस्तक पूर्ण रूप से खुल जाती है। रजिस्टरों और कापियों की सिलाई जुजबन्दी से ही की जाती है। ऊपर की सिलाई यद्यपि जुजबन्दी की सिलाई से मजबूत होती है परन्तु पुस्तक की सुन्दरता और पुस्तक को सुविधा पूर्वक पढ़ने की दृष्टि से जुजबन्दी की सिलाई ही उत्तम मानी जाती है। साधारण सिलाई वाली पुस्तकों की अपेक्षा जुजबन्दी की सिलाई वाली पुस्तकों की मजदूरी भी अधिक होती है। उपरोक्त दोनों प्रकार की जिल्दों के अतिरिक्त विदेशों से तार और सलालाइड के छल्लों से पिरोई हुई पुस्तकें भी आती हैं। मासिक पत्र और सूचीपत्र आदि के लिये इस प्रकार की जिल्दें सुन्दर प्रतीत होती हैं। परन्तु दूसरी पुस्तकों के लिये सिलाई ही अच्छी रहती है।

आज कल निम्नलिखित साईजों की पुस्तकें ही अधिक छपती हैं और इसी साईज में पुस्तकें छापने में सुविधा रहती है। अन्य साइज की पुस्तक छापने में कागजों का अधिक नुकसान होता है और पाच प्रकार के कागज ही छपाई के लिये प्रयोग किये जाते हैं।

20" × 0"
18" × 22
22" × 29"
17" × 27"

और इनके ऊपर छपी हुई पुस्तकों के निम्न लिखित साईज होते हैं—

$20'' \times 30'' = 8$
$20'' \times 30'' = 16$
$20'' \times 30 = 32$
$20'' \times 30'' = 64$
$18'' \times 22'' = 8$
$18'' \times 22'' = 16$
$22'' \times 29'' = 16$
$17'' \times 27'' = 8$

उपरोक्त साईजों मे से सब से अधिक $20 \times 30 = 16$ के साईज की पुस्तकें छपती हैं।

स्टिच की सिलाई की पुस्तकों की जिल्दें

पुस्तकों पर टाईटल लगाना

पुस्तकों पर टाईटल लगाते समय इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिये कि टाईटल पुस्तक के मुख्य पृष्ठ की ओर ही लगे। पुस्तक के मुख्य पृष्ठ के ऊपर टाईटल को रख कर उसकी चौड़ाई के स्थान पर टाईटल को मोड़ देना चाहिए। इसके पश्चात् टाईटल को किसी फट्टे या चौकी के ऊपर उल्टा बिछा

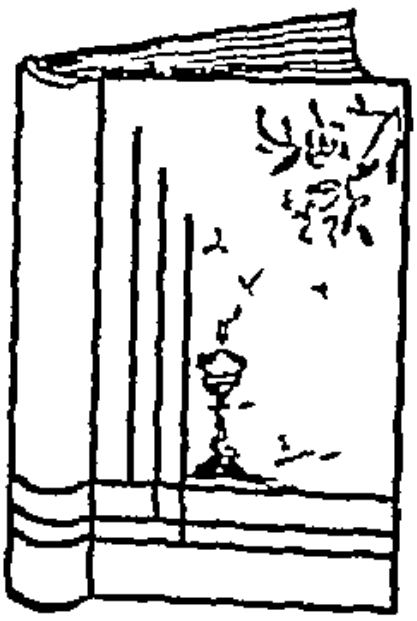

५७ पुस्तकों पर टाइटल

कर उस मुड़े हुए भाग से दो या तीन सूत हट कर पुस्तक को रख देना चाहिये और फिर बायें हाथ के अंगूठे और पहली उंगली से पुस्तक को दबा कर दायें हाथ से टाइटल के मोड़ के पास लई लगा देनी चाहिये लई उस मोड़ से दूसरी ओर पुस्तक की मोटाई से दो सूत ऊपर तक लगानी चाहिये ताकि पुस्तक के पिछले भाग के साथ भी टाईटल चिपक जाये। लई लगा चुकने के पश्चात् पुस्तक के पिछले कोने को टाइटल के मुड़े हुये भाग के पास रख कर टाइटल को उल्टा कर पुस्तक के ऊपर चिपका देना चाहिए। टाईटल पुस्तक के दोनों ओर पुस्तक के साथ दो सूत ऊपर और मोटाई के साथ चिपका रहे। इसके साथ ही इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिये कि टाईटल सीधा लगे।

मोटा टाईटल चिपकाना

साधारण पतले टाइटल चिपकाने के लिए तो केवल पुस्तक के मुख्य पृष्ठ के साइज के आकार पर ही टाईटल को मोड़ा जाता है और पुस्ते पर और पिछली ओर स्वय ही टाईटल मुड़कर चिपक जाता है। परन्तु मोटे टाइटल स्वय ही नहीं चिपकते अत

यह कुछ गोलाई लिये हुए रहते हैं। मोटे टाईटलों को शुद्ध रूप से पुस्तक के ऊपर चिपकाने के लिए टाइटल को दो जगह से मोड़ना चाहिए। एक मोड तो पुस्तक के मुख्य पृष्ठ की चौडाई पर और दूसरा मोड पुस्तक की मोटाई के आधार पर। अर्थात् टाईटल के दोनों मोड़ इस प्रकार हो जाये कि पु तक जब टाईटल के अन्दर रखी जाये तो उसकी मोटाई बिलकुल पूरी हो। टाईटल को दोनों स्थानों पर खम देने के पश्चात् उसके बीच वाले भाग मे लई इस प्रकार लगानी चाहिये कि दोनों मोड़ों के साथ साथ दो दो सूत चौड़ाई मे भी लई लग जाये और फिर उस टाईटल के अन्दर अन्दर पुस्तक को रख कर पुश्ते के साथ टाईटल को चिपका देना चाहिए।

पोस्तीन वाला टाइटल

मोटे टाईटल कई बार पोस्तीन द्वारा भी पुस्तकों पर चिपकाये जाते हैं। ऐसी अवस्था मे टाईटल लगाने से पहले पुस्तक की दोनों ओर पुस्तक की लम्बाई और चौड़ाई के साइज का दोहरा कागज मुख्य पृष्ठ के पुश्ते के साथ और पुस्तक के पिछले पृष्ठ के पुश्ते के साथ लई द्वारा चिपका देना चाहिए और उसके पश्चात् उपरोक्त विधि से टाईटल मे खम देकर पुस्तक को टाइटल के अन्दर रखकर लई द्वारा उस कागज को टाइटल के साथ अन्दर से चिपका देना चाहिये। जो कागज पुस्तक के मुख्य पृष्ठ के साथ और पुस्तक के अन्तिम पृष्ठ के साथ लई द्वारा जोड़ा जाता है

उसे ही पोस्तीन कहते हैं और यह पोस्तीन ही टाइटल को पुस्तक के साथ जोड़े रखती है। साधारण लगे हुये टाइटलों से पोस्तीन वाले टाईटल सुन्दर प्रतीत होते हैं।

पुस्तकों के ऊपर टाईटल चिपकाने के पश्चात् पुस्तक के तीनों किनारों को शिफ्जे या मशीन द्वारा कटाई कर लेनी चाहिये। ताकि बढ़े हुये या उलझे हुये कागज साफ हो जायें और पुस्तक देखने में सुन्दर प्रतीत हो।

पोस्तीन

पोस्तीन को अंग्रेजी भाषा में एन्ड पेपर (End paper) कहते हैं। यह कागज पुस्तक की जुर्दों को सुरक्षित रखने और उनका सम्बन्ध पुस्तक के ऊपर लगे हुये टाईटल या गत्ते के साथ जोड़ने के लिए होता है। पोस्तीन तीन प्रकार की लगाई जाती है।

(१) सादी पोस्तीन। (२) डबल पोस्तीन। (३) माऊँट पोस्तीन।

सादी पोस्तीन

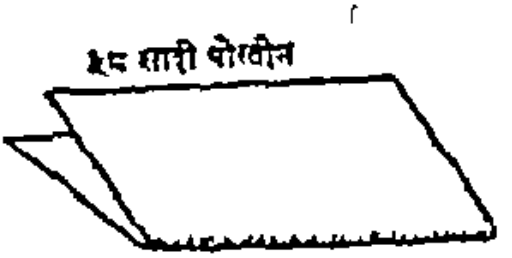

सादी पोस्तीन

सादे पुश्ते की बनावट साधारण होती है अर्थात् पुस्तक के साइज से दुगना कागज लेकर उसे बीच में तह कर के बनाई जाती है और उस तह किये हुये पन्ने को पुस्तक की पीठ के किनारे पर आध इंच चौडी लई लगाकर चिपका दिया जाता है। और ऊपर का पन्ना जिल्द के अन्दर गत्ते या टाइटल के साथ चिपका दिया जाता है। इसका एक भाग पुस्तक के पन्नों को सुरक्षित रखता है और दूसरा भाग गत्ते का सम्बन्ध पुस्तक से जोडने और गत्ते के अन्दर वाले ऐबों को छुपा कर सुन्दर बना देता है आजकल सादा पोस्तान लगाने का रिवाज अधिक है।

३६ डबल पोस्तीन

डबल पोस्तीन

डबल पोस्तीन लगाने के दो तरीके हैं और यह पोस्तीन मोटी पुस्तकों की जिल्दों के भीतर लगाई जाती है।

पहली विधि—पुस्तक के साइज से दुगने दो पन्ने लेकर उनको बीच में से मोड़ दिया जाता है और एक पन्ने के मुड़े हुए भाग की पिछली ओर दो इंच चौड़ी बाइंडिंग क्लाथ की पट्टी चिपका दी जाती है। पट्टी इस प्रकार चिपकाई जाती है कि मोड़,

मे पट्टी दोनों ओर एक जैसी चौड़ी होती है। और उसके पश्चात् पट्टी लगी हुई पोस्तीन के अन्दर दूसरे मुड़े हुये कागज को रख कर उसकी सिलाई पुस्तक की जुज़ों के साथ कर दी जाती है और साथ ही पुस्तक के साथ वाले पन्ने के पिछले भाग को पुस्तक के साथ चिपका दिया जाता है।

दूसरी विधि--इसकी बनावट भी पहली प्रकार की सी होती है। परन्तु इसकी सिलाई पुस्तक के साथ नहीं की जाती केवल बाहिरी पोस्तीन का पिछला भाग पुस्तक के साथ चिपका दिया जाता है और उसके अन्दर दूसरी तह की हुई पोस्तीन के पिछले सिरे पर गोंद या सरेश लगाकर चिपका दी जाती है।

माऊंट पोस्तीन— यह पोस्तीन भी दो प्रकार की होती है। इकहरी पोस्तीन और दोहरी पोस्तीन यह पोस्तीन प्राय: बैंकों के बड़े रजिस्टरों लैजरों आदि में लगाई जाती हैं। इसके बनाने की विधि इस प्रकार है—रजिस्टर या लैजर के साईज से दुगना मोटा कागज लेकर उसको बीच में से तह कर लिया जाता है और फिर मुड़े हुये भाग के अन्दर दो इंच चौड़ी बाईंडिंग कलाथ की पट्टी इस प्रकार चिपकाई जाती है कि पट्टी की चौड़ाई दोनों ओर एक जैसी लगे। कागज के अन्दर की ओर जहां पट्टी लगी हुई है। रंगदार अबरी या जापानी अबरी दोनों ओर के अन्दर वाले पन्ने के ऊपर चिपका दी जाती है। अबरी का चढ़ाव बाईंडिंग कलाथ वाली पट्टी के ऊपर एक सूत होता है। अबरी चिपकाने के पश्चात दोनों तहों के अन्दर एक रद्दी कागज रख कर पोस्तीन को दबा

दिया जाता है। जब अबरी सूख जाए तो पोस्तीन की रजिस्टर के साथ सिलाई कर ली जाती है।

दोहरी पोस्तीन बनाने के लिए बाईं डिंग क्लाथ की पट्टी बाहिर की ओर लगानी चाहिये और अन्दर के सारे पन्ने पर अबरी चिपका देनी चाहिए और उसके अन्दर जो दूसरी पोस्तीन लगानी हो उसके दोनों ओर केवल अबरी चिपका कर पहली पोस्तीन के अन्दर रख कर सिलाई कर लेनी चाहिये।

गत्ते की जिल्द बनाना

पुस्तकों पर गत्ते की जिल्द बनाने के लिए गत्तों की मोटाई का प्रयोग जिल्द की मोटाई के आधार पर करना चाहिए। साधारण पुस्तकों के लिए बारह औंस से लेकर दो पौण्ड तक के गत्ते की जिल्दें बनाई जाती हैं। और बड़े रजिस्टरों तथा मोटी पुस्तकों के लिये तीन और चार पौण्ड के गत्ते का प्रयोग भी किया जाता है। गत्ते भिन्न भिन्न साइजों के होते हैं, और उसी हिसाब से पुस्तकों की जिल्दें निकाली जा सकती हैं।

साधारण सिलाई वाली पुस्तकों पर गत्ते की जिल्द

साधारण सिलाई वाली पुस्तकों पर छ प्रकार की गत्ते की जिल्दें बनाई जाती हैं।

1 बिना डोरी के जिल्द।

2 एक डोरी वाली जिल्द।

3 दो डोरी वाली जिल्द ।

4 दोहरे पुश्ते वाली जिल्द ।

5 पत्ती वाली जिल्द ।

६० पुश्ती लगाना

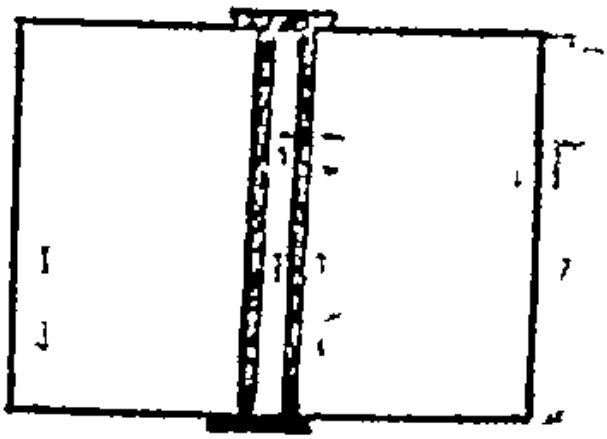

६१ पुश्ता मोड़ना

६२ अबरी लगाना

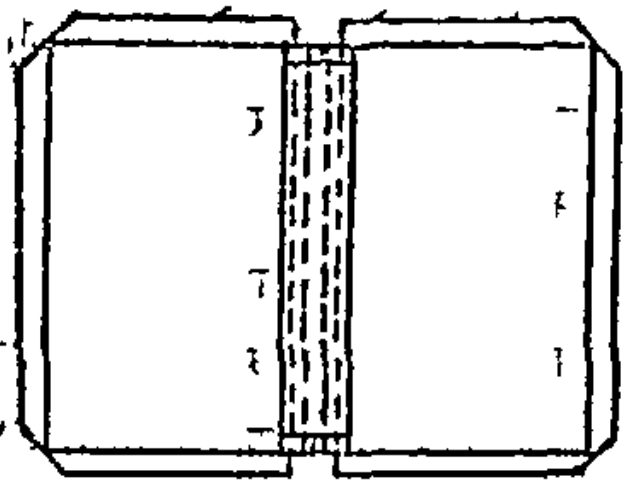

६३ अबरी मोड़ना

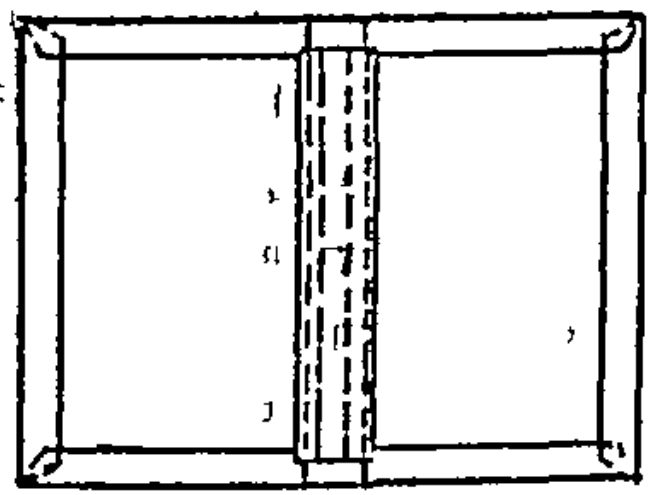

बिना डोरी वाली जिल्द के तीन प्रकार होते हैं।

(क) गत्ते को पोस्तीन के साथ जोड़ कर।

(ख) पोस्तीन और पुश्ते पर कपड़ा लगा कर गत्ते को जोड़ना।

(ग) पोस्तीन के ऊपर सिलाई के तागों को फैलाकर जोड़ना।

विना डोरी के जिल्द

(क) पुस्तक में तीन छेद कर के और साधारण सिलाई कर चुकने के पश्चात् उसकी दोनों ओर पोस्तीन लगा देनी चाहिए। पोस्तीन लगाने के पश्चात यदि गत्ते को पुस्तक के साथ बराबर बान्ना हो तो गत्ते के टुकड़े पुस्तक के साइज के काटकर पुश्ते से एक दो सूत हटा कर आगे की ओर रख देने चाहियें और फिर पोस्तीन पर लई लगाकर गत्तों को पोस्तीन के साथ जोड़ देना चाहिए। फिर गत्तों के ऊपर पिछली ओर बाईंडिंग क्लाथ का टुकड़ा किताब की लम्बाई के बराबर और मोटाई से ढाई इंच चौड़ा काट कर उसके ऊपर लई लगाकर किताब के पिछले भाग पर लगा देना चाहिए। जो बाईंडिंग क्लाथ का टुकड़ा इस स्थान पर लगाया जाता है उसे पुश्ता कहते हैं। पुश्ता इस प्रकार लगाना चाहिए कि दोनों गत्तों के ऊपर एक एक चढाव दोनों ओर सिधाई मे रहे। पुश्ता लगाने के पश्चात दायें हाथ के अंगूठे की दाब से पुस्तक के पिछले भाग और गत्ते के बीच में जो दो सूत का अन्तर है वहाँ इस प्रकार देनी चाहिए कि गत्ते के साथ साथ एक दबी हुई लकीर सी पड़ जाये। पुश्ता लगाने के पश्चात् जिल्द के ऊपर अबरी मराकू या और किसी कागज को उसके ऊपर लगे हुये पुश्ते से आध पौन इंच हटाकर लई द्वारा चसपान कर देना चाहिए। पुस्तक के दोनों ओर अबरी आदि चसपान करने के पश्चात् पुस्तक के ऊपर कोई साफ पट्टी रख कर उसे पत्थर से दबा देना चाहिए और जिल्द के सूखने के पश्चात् किताब को पत्थर के

नीचे से निकाल कर मशीन द्वारा कटाई कर देनी चाहिये, जिल्द तैयार हो जायेगी।

विना डोरी की जिल्द का दूसरा भाग

दूसरे प्रकार की वह जिल्दें बनाई जाती हैं जिनके गत्ते पुस्तक से एक या दो सूत तीनों ओर बढे हुये होते हैं। इस प्रकार की जिल्द बाधने के लिए पुस्तक की सिलाई करने के पश्चात उसके दोनों ओर पोस्तीन लगाकर पुस्तक की कटाई कर लेनी चाहिए। पोस्तीन यदि पहले न भी लगाई जाये तो भी कोई हर्ज नहीं। पुस्तक की कटाई हो जाने के पश्चात भी पोस्तीन लग सकती है। कटी हुई पुस्तक पर पोस्तीन लगाने के पश्चात् पोस्तीन को कैंची से पुस्तक के बराबर काट लेना चाहिए और फिर पहली विधि अनुसार पुस्तक के पिछले भाग से दो सूत हटा कर लम्बाई चौड़ाई से एक सूत लम्बे और दो सूत अधिक चौड़े गत्ते काट लेने चाहियें और फिर पुस्तक के ऊपर और नीचे गत्तों को अपने निश्चित स्थान पर रख कर यदि पुश्ता लगाना हो तो पुश्ता पुस्तक की लम्बाई से डेढ़ इंच लम्बा काटना चाहिए और पुश्ते की चौड़ाई पुस्तक की मोटाई से ढाई इंच अधिक होनी चाहिए। फिर पुश्ते पर लई लगाकर पुस्तक के ऊपर रक्खे हुये गत्ते के साथ पुश्ते को चिपका कर धीरे से दोनों गत्तों को उसी अन्दाज में जिस अन्दाज में वह जुड़े हुये हैं मोल कर फैला देना चाहिये और फिर जो पुश्ता दोनों ओर पौन पौन इंच बढ़ा हुआ

है उसे लौटा कर गत्तों के अन्दर की ओर चिपका देना चाहिए और फिर दोनों गत्तों के बीच में जो अन्तर होगा उसमें एक उसी साइज का एक कागज का टुकड़ा काट कर लई द्वारा पुस्तक के साथ चिपका देना चाहिये और फिर गत्तों को उसी प्रकार पुस्तक के ऊपर लौटा कर अपने निश्चित स्थान पर रख देना चाहिये। फिर टाइटल या अथरी जो कुछ भी लगाना हो उसका कटाइ भी इस प्रकार करनी चाहिये कि यह गत्ते की लम्बाई और चौडाई अर्थात् तीनों ओर से आध आध इंच बड़ा रहे और फिर उसे लई द्वारा गत्तों के ऊपर पुस्तक से एक इंच हटा कर चिपका देना चाहिये और फिर उसके बढ़े हुए भागों को गत्ते के अन्दर की ओर मोड़ कर चिपका देना चाहिये। अथरी को अन्दर की ओर मोडते समय उसके कोनों को थोड़ा सा कैंची से काट देना चाहिए जिससे वह मुड़ कर बराबर आपस में मिल जायें।

यदि पुश्ता न लगाना हो और पुस्तक के स्थान पर केवल टाईटल ही लगाना हो तो टाईटल के ऊपर लई लगाकर पुश्ते के प्रकार ही गत्तों के ऊपर जोड़ देना चाहिये और फिर इसी प्रकार गत्तों को फैला कर बढ़े हुए टाइटल को चारों ओर से अन्दर की ओर मोड़ देना चाहिए और दोनों गत्तों के बीच में खाली स्थान पर कागज का टुकड़ा मोड़ कर टाइटल के साथ चिपका देना चाहिए और फिर गत्तों के इसी प्रकार पुस्तक के ऊपर रख कर अन्दर से मोसलीन लई द्वारा चिपका कर पुस्तक को दबा देना चाहिए ताकि सूख जाए। यदि कपड़े को जिल्द बनाना हो तो

टाईटल के स्थान पर बाईंडिंग क्लाथ या और कोई कपड़ा जो लगाना चाहें चिपका देना चाहिये। उसके लगाने की विधि टाईटल चिपकाने की विधि के अनुसार ही है। केवल बाईंडिंग क्लाथ को चिपकाने के लिये लेई के स्थान पर यदि पतली सरेश का प्रयोग किया जाये तो अच्छा रहता है क्योंकि उससे बाईंडिंग क्लाथ की आब (चमक) नहीं बिगड़ती।

(ख) इसी प्रकार की जिल्दों को अधिक मजबूत बनाने के लिए पुस्तक के साथ पोस्तीन चिपकाने के पश्चात उसके ऊपर एक पतले कपडे का पुश्ता जो पिछले भाग से होता हुआ पुस्तक के दोनों ओर एक एक इंच है। इसे के ऊपर चढ़ा कर सरेश द्वारा चिपका दिया जाता है, और जब जिल्द के गत्तों के साथ पोस्तीन को जोडा जाता है तो यह ही कपड़े का टुकड़ा पुस्तक को गत्ते के साथ चिरकाल तक चिपकाये रखने मे सहायक होता है। अन्य सारी विधि जिल्द बनाने की पहली प्रकार की तरह ही की जाती है।

(ग) पुस्तक की सिलाई करने के पश्चात् जहां बंद में गाठ दी जाती है उसी छिद्र मे दोहरा या चौहरा तागा सूई द्वारा डाल कर उस तागे को दोनों ओर अर्थात् ऊपर और नीचे डेढ़ २ इंच छोड़ देना चाहिये और उस छोड़े हुये तागे की गाँठ पुस्तक के सिलाई वाले तागों के साथ दोनों ओर दे देनी चाहिये ताकि तागा अपने स्थान से हिले डुले नहीं। इसी प्रकार यदि दो तागे डोहरा हों तो छिद्र न० दो और तीन मे से तागों को गुजार कर

बीच वाले प्रकार से गाठ दे देनी चाहिए। तागों की गाठ देने के पश्चात् पुस्तक के ऊपर पोस्तीन लगानी चाहिए। पोस्तीन लगाते समय तागों वाले स्थान से पोस्तीन के पिछले भाग का थोड़ा सा कैंची का टक दे देना चाहिए। जिस से पोस्तीन पुस्तक के पिछले भाग तक लग जाये और तागा बीच में से निकला रहे। फिर उस तागे को पोस्तीन के ऊपर फैला कर सूई द्वारा पोस्तीन के साथ चिपका देना चाहिए। इस प्रकार की पुस्तक पर गत्ता तागे वाले छिद्रों के पास आगे की ओर जरा बढ़ाकर लगाना चाहिए। अन्य सारा विधि जिल्द बाधने की पहले लिखे अनुसार करनी चाहिये।

एक डोरी वाली जिल्द

पुस्तक की सिलाई करने के पश्चात् छिद्र नं० एक अर्थात् गाँठ देने वाले छिद्र में दुगना या चौगना तागा सूई द्वारा डाल कर दो दो इंच दोनों ओर से छोड़कर काट देना चाहिए। फिर दोनों ओर के तागों को सिलाई वाले तागे के साथ एक एक गाँठ दे देनी चाहिये। उसके पश्चात् पोस्तीन लगा देनी चाहिए पोस्तीन लगाते समय पोस्तीन के पिछले भाग को तागे के स्थान पर कैंची से एक दो सूत का कट दे देना चाहिए ताकि पोस्तीन तो पुस्तक के पिछले भाग तक पुस्तक के साथ जुड़ जाये और बीच वाली डोरी अर्थात् तागा बाहिर निकला रहे। पोस्तीन चिपकाने के पश्चात पोस्तीन के किनारों को पुस्तक के साथ मिलाकर काट देना चाहिये और फिर ऊपर और नीचे वाले गत्ते

पुस्तक के ऊपर सिलाई वाले तागों से आगे रख कर छोड़ी हुई डोरी को गत्तों में पिरो लेना चाहिये।

गत्ते में डोरी पिरोने की विधि

पुस्तक के जिस छिद्र से डोरी निकली हुई है उसके आगे गत्ते को रख कर एक छिद्र आध इंच के फासले पर बिल्कुल सीधा अर्थात् 90° डिग्री की सिधाई में गत्ते के ऊपर की ओर से और दूसरा छिद्र पहले छिद्र से आध इंच के फासले पर

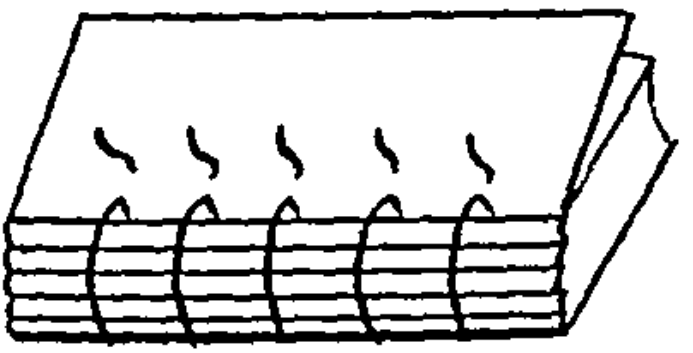

६४ गत्ते में डोरी पिरोना

दाईं या बाईं ओर 45° की सिधाई में नीचे की ओर से करना चाहिये। फिर डोरी को अर्थात् छोड़े हुए तागा को सुई लगाकर इकट्ठा कर लेना चाहिये और फिर इस डोरी को छिद्र नं० एक में ऊपर की ओर से नीचे की ओर डालें और फिर छिद्र नं० दो में नीचे की ओर से ऊपर की ओर उसी डोरी को डाल पर बाहर से डोरी को पकड़ कर अच्छी तरह खींच कर सिलाई के साथ मिला लें। फिर इन दोनों छिद्रों को हल्की सी हथौड़ी की ठोकर

देकर बिठा देना चाहिये। उसके पश्चात् बचे हुए सागे और छिद्रों के ऊपर एक छोटा सा टुकड़ा कागज का लई द्वारा चिपका देना चाहिये।

गत्तों में 'डोरी फिरो' चुकने के पश्चात् गत्तों को पुस्तक या सिघाई में फाट छाट कर सीधा कर लें और फिर यदि पुश्ता लगाना हो तो पुश्ते का कपड़ा काट कर और लई लगाकर दोनों गत्तों के ऊपर पुस्तक की पीठ से घुमाकर लगा देना चाहिए। इसके पश्चात् दायीं और बायीं ओर पुश्ते को अन्दर की ओर मोड़ कर गत्तों के साथ चिपका देना चाहिए।

पुश्ते को अन्दर की ओर मोड़ने की विधि

साधारण जिल्दों अर्थात् बिना डोरी की सिलाई की जिल्दों

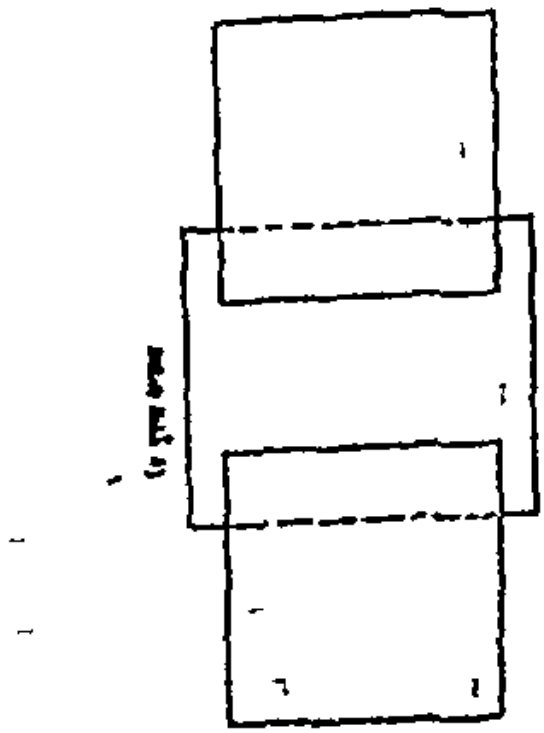

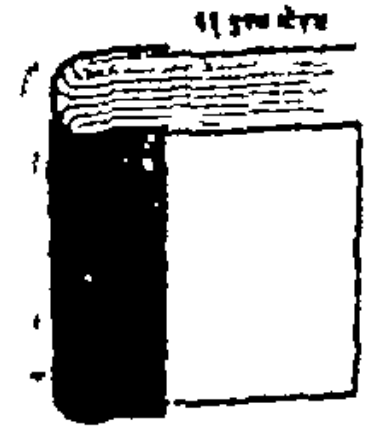

के ऊपर पुश्ता लगाने की जो विधि बतलाई गई है वह इन पुस्तकों में काम नहीं आती। क्योंकि बिना डोरी की जिल्दों के गत्ते पुश्ता लगाते समय फैला कर अलग कर लिये जाते हैं और पुश्ते को दायें ओर से मोड़ कर गत्ते के साथ चिपका दिया जाता है। परन्तु इन जिल्दों में गत्ता पुस्तक के साथ डोरी द्वारा सिला रहता है और अलग नहीं हो सकता। इसलिये ऐसी पुस्तकों के पुश्तों को मोड कर अन्दर की ओर चिपकाने के लिए गत्तों के ऊपर पुश्ता लग चुकने के पश्चात् पुस्तक को एक बाजू की ओर से रख कर दोनों गत्तों को खोल देना चाहिये फिर दोनों अगूठे गत्ते के बाहिर की ओर पुस्तक की पीठ के पास और दोनों हाथों की उगलिया गत्तों के अन्दर से गत्तों को थामे रखें। इसके पश्चात् दोनों अगूठों के दबाव से पुस्तक की पीठ से अन्दर की ओर और उगलियों के दबाव से गत्तों को बाहिर की ओर लाकर दोनों हाथों की पहली उगलियों से पुश्ते के बढ़े हुए भाग को दबा कर अन्दर की ओर मोड कर गत्तों के साथ चिपका देना चाहिए। एक ओर का पुश्ता मोडने के पश्चात फिर दूसरी ओर के पुश्ते को भी इसी प्रकार मोड़ लेना चाहिए। जब दोनों ओर के पुश्ते मुड जायें तो पुस्तक को सामने रख कर गत्तों को पुस्तक की सिधाई में बराबर कर लेना चाहिए ताकि कोई गत्ता कहीं से टेढ़ा न रहे। इसके पश्चात् अबरी मराकू आदि जो कुछ भी गत्ते पर चिपकाना चाहें चिपका कर पोस्तीन को गत्ते के साथ जोड़ देना चाहिये। गत्ते पर टाईटल अबरी या मराकू आदि चिपकाने

की विधि पहले बता दी गई है। उस विधि के अतिरिक्त कई कई जिल्दों पर ऊपर कोने भी नाईडिंग क्लाथ अर्थात जिल्द वाले कपड़े के लगाये जाते हैं। यह कोने गत्ते को मुड़ने या टूटने से बचाते हैं।

जिल्द पर कोने लगाने की विधि

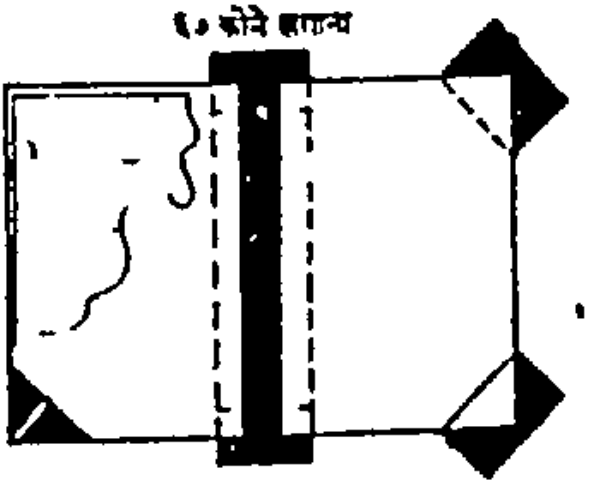

प्रत्येक जिल्द पर चार कोने लगाए जाते हैं कोने काटने के लिए दो इंच मुरब्बा कपड़े के टुकड़े काट कर उनके बीच में तिर्छा अर्थात एक कोने से दूसरे कोने तक काट देना चाहिए। ऐसा करने से चार तिकोने बन जायेंगी। अब तीन कोनों के बीच वाले कोनों को थोड़ा स प से तराश देना चाहिए ताकि गत्ते पर कोन को उल्टाते समय गत्ते के कोन के साथ एक चौकोर कोन बन जाए। इसके पश्चात् कपड़े की कटी हुए कोनों के साथ कटा हुआ कोना रखकर चिपका देना चाहिए। कोन इस प्रकार चिप

जानी चाहिए कि उसका दायां और बायाँ कोना मुड कर गत्ते की अन्दर की ओर चपक जाये।

पुश्ते और कोने वाली जिल्द पर अबरी लगाना

पुश्ते और कोने वाली जिल्दा पर मराकू या अबरी आदि लगाते समय मराकू या अबरी के कटे हुये टुकड़ों के ऊपर के कोने का इतना कट देना चाहिए कि अबरी लगी हुई कोन के ऊपर एक ी सूत चढ़े। अबरी को काटते समय अबरी को जिल्द के ऊपर िला कर पुश्ते से अर्थात् पुस्तक की पीठ से इंच सवा इंच हटा कर रख देना चाहिए और फिर अबरी के दोनों आगे वाले कोने मोड़ कर रख लेना चाहिए और जहां कोना सिधाई में तिकोन दिखाई दे वहाँ से काट देना चाहिए। कोना काटते समय इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए कि जिल्द के चारों कोन एक ही साइज के खुले रहें और पुश्ता भी एक ही सिधाई में खुला रहे। अबरी के कोने काट चुकने के पश्चात अबरी को लेई द्वारा गत्ते के ऊपर चिपका देना चाहिए और अबरी के बढ़ाव को मोड़ कर गत्तों के अन्दर की ओर चिपका देनी चाहिए फिर पेस्तान के ऊपर लेई लगा कर वह भी चिपका देनी चाहिए।

दो डोरी वाली जिल्द

दो डोरी वाली जिल्द के बनाने की विधि एक डोरी वाली जिल्द की तरह ही है। इसमें अन्तर केवल इतना है कि एक डोरी वाली जिल्द में एक डोरी केवल मध्य के छिद्र में बांधी जाती है

और दो डोरी वाली जिल्द की टोरिया मध्य छिद्र म न बांध कर दायें और बायें के दोनों छिद्रों में अर्थात छिद्र न० दो और छिद्र न० तीन मे डाल कर बांधी जाती है। अन्य सार कम पहली विधि अनुसार ही किया जाता है। एक डोरी वाली जिल्द से दो डोरी वाली जिल्द अधिक मजबूत होती है।

दोहरे पुश्ते वाली जिल्द

दोहर पुश्ते वाली जिल्द का प्रयोग यद्यपि आज कल अप्रचलित सा हो रहा है परन्तु इस प्रकार की जिल्द अन्य प्रकार की जिल्दों से अधिक मजबूत होती है और वर्षों तक इस जिल्द के टूटने और खुलने का भय नहीं रहता। इस जिल्द को बनाने की विधि इस प्रकार है कि जब पुस्तक की सिलाई हो चुकती उसके ऊपर पोस्तीन लगाकर और पोस्तीन के किनारों को काटकर पुस्तक की पीठ पर पुश्ते की प्रकार का मारकीन या दुपिल आदि काट कर पुश्ते के प्रकार पोस्तीन के ऊपर चिपका दिया जाता है और फिर उसके किनारों को पुस्तक के बराबर तराश कर ऊपर

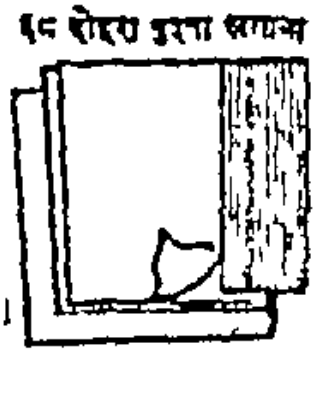

१८ दोहरा पुश्ता लगाना

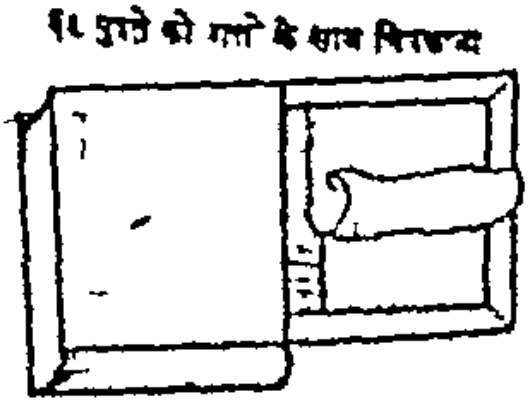

१९ पुश्ते को गत्ते के साथ चिपकाना

से फिर सिलाई की जाती है। इस सिलाई के छिद्र पुस्तक की सिलाई से कुछ पीछे की ओर हट कर होने चाहियें और तीन छिद्रों की बजाय पुस्तक में चार छिद्र कर के सिलाई करनी चाहिए। दायें और बायें ओर वाले छिद्र किनारों से आध या पौन इंच अन्दर को होने चाहियें। सिलाई कर चुकने के पश्चात् गत्तों को सिलाई के आगे रख कर जिल्द के ऊपर वाला पुश्ता लगा देना चाहिये। यदि कोने लगाने हों तो कोने भी लगा देने चाहियें और यदि जिल्द वाला कपड़ा सारी जिल्द पर लगाना हो तो उसको गत्ते के ऊपर लगा कर अन्दर से पोस्तीन गत्तों के साथ चिपका देनी चाहिये जिल्द तैयार हो जायेगी।

दूसरी विधि

यदि इस से भी अधिक मज़बूत जिल्द बनानी हो तो नीचे वाले पुश्ते को सिलाई करने के पश्चात् गत्तों के साथ अन्दर की ओर से चिपका कर उसके ऊपर लम्बे लम्बे टाके लगा देने चाहियें। इन टाकों को लगाते समय इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए कि पहला टाका नीचे और दूसरा टाका 45° डिगरी के एंगल पर ऊपर। इस प्रकार ऊपर नीचे 45 डिग्री की सिधाइ पर गत्तों में आर से छेद करके साधारण रील के दोहरे तागे से टाके लगा देने चाहियें। टाके लगाने के पश्चात् छेदों को हथौड़ा से कूट कर एक बराबर कर लेना चाहिए। फिर उसके ऊपर जिस प्रकार की आवश्यकता हो अबरी या कपड़ा आदि लगा कर जिल्द तैयार कर लेनी चाहिये।

पत्ती वाली जिल्द

साधारण सिलाई वाली पुस्तकों में भी पत्ती का प्रयोग करके जिल्द साज करते हैं। पत्ती का प्रयोग करने के लिए पुस्तक के ऊपर चार छिद्र करके सिलाई करनी चाहिए और सिलाई करने में पहले ऊपर और नीचे की जुज के साथ पत्ती को सिया देना चाहिए। चार छिद्रों वाली सिलाई करते समय सूई को छिद्र नं० एक में ऊपर की ओर से नीचे ले जाकर फिर छिद्र नं० दो में नीचे से ऊपर और फिर छिद्र नं० तीन में ऊपर से नीचे फिर छिद्र नं० दो में नीचे से ऊपर और फिर छिद्र नं० एक में ऊपर से नीचे और फिर छिद्र नं० चार में नीचे से ऊपर लाकर छिद्र नं० एक के ऊपर छोड़े हुए तागे के पिछले सिरे से गांठ दे देनी चाहिए और फालतू तागा काट देना चाहिये। इसके पश्चात् पुस्तक की चौड़ाई के बराबर की पत्तियां अर्थात् दो कपड़े या कागज के टुकड़े छिद्र नं० चार और नं० एक के बीच और छिद्र नं० दो और नं० तीन के बीच तागों के नीचे पुस्तक से मोड़कर एक एक इंच बाहिर निकला रहने देने चाहिए। टुकड़ों की चौड़ाई छिद्र नं० चार और एक की बीच की चौड़ाई और छिद्र नं० दो और तीन के बीच के अन्तर की चौड़ाई के आधार पर होनी चाहिये और एक इंच तागों से बाहर निकले हुए कपड़े के टुकड़ों को लेप द्वारा पोथी के साथ चिपका देना चाहिए। इसके बाद गत्ते चढ़ा देने चाहियें।

दूसरी विधि

पुस्तक की सिलाई करते समय जो पास्तीन ऊपर और नीचे लगाए जावें उस पोस्तीन के मुड़े हुये भाग पर ढाई इंच चौड़ी मलमल या मारकीन की पतली कतरन काट कर चिपका देनी चाहिए। पोस्तीन के साथ कतरन इस प्रकार चिपकानी चाहिए कि पोस्तीन की तह करने से दोनों भाग एक जैसी दिखाई दें और उसके पश्चात् पास्तीन को ऊपर और नीचे की जुज के साथ चिपका कर सिलाई कर लेना चाहिए। पोस्तीन पर लगे हुये कपड़े वाला भाग ऊपर रहना चाहिए। इसकी सिलाई और बत्तियां पहली विधि के अनुसार ही लगानी चाहियें। इसके पश्चात् गत्ता की पुस्तक के साईज के अनुसार काटकर पास्तीन और बत्तियों के बीच में रख देना चाहिए। और उसके पश्चात् पोस्तीन को गत्ते के साथ ऊपर से चिपका कर ऊपर से पुश्ता अबरी या कपड़ा आदि लगाकर पोस्तीन चिपका देनी चाहिये। यह जिल्द पहले प्रकार से अधिक मजबूत होती है। इस से भी अधिक यदि मजबूत जिल्द बनानी हो तो बत्तियां को गत्ते के ऊपर न चिपका कर गत्ते के ऊपर बत्तियों की साइज की लम्बाई के किसी चौसी आदि से छेद करके बत्तियों को उन छेदों द्वारा अन्दर की ओर लाकर चिपका देना चाहिए और छेदों को हथौड़ी द्वारा कूट कर उसकी तह मिटा देनी चाहिये। इसके पश्चात् अन्य सारा कार्य प्रथम पहली विधि के अनुसार ही करना चाहिये।

उपरोक्त जिल्दों के अतिरिक्त साधारण सिलाई या सिंगल की सिलाई की कापियां और बहीखाते भी सीये जाते हैं। उनका विस्तृत विवरण आगे दिया जाता है।

कापियों की सिलाई

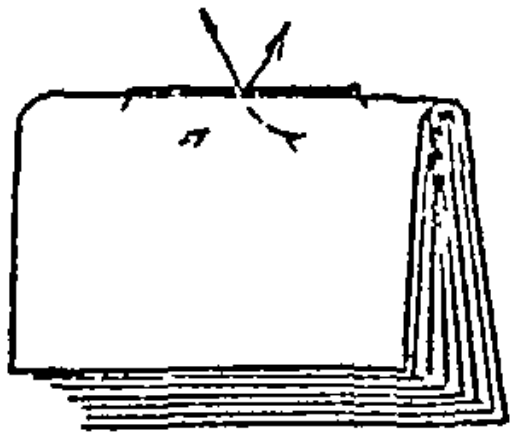

७० कापियों की सिलाई

७१ धागे की गांठ

साधारण सिलाई वाली कापियां ½, ¼ और एक दस्ते तक की होती हैं। इस प्रकार की कापियों की सिलाई करने के लिये पहले कागजों को इकहरा काट कर अर्थात फुलस्केप साइज़ के पृष्ठ बना लेने चाहियें और फिर जितने पृष्ठों की कापी बनाना हो विचार हो उतने नम्बरों का चार पर भाग देकर उतने फुलस्केप कागजों को दोहरा कर बीच में से मोड़ देना चाहिये। जैसे यदि हम सौ पृष्ठ की कापी बनाना चाहें तो 100 — 4 = 25 अर्थात् 25 फुलस्केप पृष्ठ लेकर उनको बीच में से तह कर दोहरा कर देना चाहिये। फिर उसके ऊपर जैसा भी टाइटल चढ़ाना हो

यह उसके ऊपर लगाकर कापी की सिलाई कर लेनी चाहिये। कापी की सिलाई करने के लिये कापी के मुडे हुये पन्नो को खोल कर सीधा करके आगे रख लेने चाहियें और उसकी बीच वाली तह के स्थान पर तीन छिद्र डेढ़ २ इंच दोनों ओर से छोड़ कर, कर लेने चाहियें। एक छिद्र मध्य में और दो छिद्र मध्य के छिद्र के दोनों ओर एक से अन्तर पर करने चाहियें। इसके पश्चात सूई में तागा डाल कर पहले सूई को अन्दर की ओर से छिद्र न० एक अर्थात मध्य के छिद्र में डालकर बाहिर की ओर निकाल लेना चाहिये और फिर सूई को छिद्र न० २ में से बाहिर की ओर से अन्दर की ओर निकाल लेना चाहिए। इसके पश्चात सूई को छिद्र न० तीन में अन्दर की ओर से डाल कर बाहिर की ओर निकाल लेना चाहिये और फिर सूई को छिद्र न० एक में बाहिर की ओर से डाल कर अन्दर की ओर से खेंच लेना चाहिये। अन्त में सब तागे को खेंच लेना चाहिये। केवल डेढ़ इंच के करीब तागा छिद्र न० एक के पास रहने देना चाहिये और फिर उसी डेढ़ इंच तागे के साथ दूसरे तागे को गांठ दे देनी चाहिये। गांठ देने की विधि साधारण सिलाई की पुस्तक के पृष्ठ पर देखें। गांठ देते समय इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिये कि जो तागा न० दो और न० तीन छिद्र में जाते समय बीच में पड़ा हुआ है गांठ वाले तागे उस बीच वाले तागे के दोनों ओर होने चाहियें अर्थात् एक दाईं ओर और दूसरा बाईं ओर। टाइटल की सिलाई भी पृष्ठों के साथ ही कर लेनी चाहिये।

सिलाई कर चुकने के पश्चात कापियों की कटाई कर देनी चाहिये।

दूसरे प्रकार की सिलाई तार से होती है अर्थात कापियों को मोड़ कर स्टिचिंग मशीन के ऊपर रख कर तार के दो स्टिच एक दाईं ओर और एक बाईं ओर लगा दिये जाते हैं। और उसके पश्चात कापियों की कटाई कर दी जाती है दाईं और बाईं ओर तार के स्टिच लगाते समय भी इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि [illegible] किनारा से [illegible] [illegible] छूट कर स्टिच लगने चाहिए।

कापियों पर टाइटल लगाने का दूसरा ढङ्ग

कापियों पर प्रायः मोटे कागज पर छपे हुये टाइटल लगाकर कापियों के साथ ही टाइटल की सिलाई कर दी जाती है। परन्तु ऐसा करने से सिलाई टाइटल के ऊपरसे कापी की पुश्त पर दिखाई देती रहती है। इस दोषको छुपाने के लिए दूसरे प्रकार के टाइटल का प्रयोग किया जाता है। दूसरे प्रकारके टाइटल पतले कागज पर छपे हुए होते हैं। कापी के ऊपर मोटा सादा कागज [illegible] साइज का काट कर कापी के ऊपर रख कर कापी की सिलाई कर दी जाती है। इसके पश्चात पतला छपा हुआ टाइटल कापी वाले कागज के ऊपर गोंद या मसाला द्वारा चिपका दिया जाता है। और फिर कापियों की कटाई कर दी जाती है। यदि सादा कागज [illegible] [illegible] का छुपाना हो तो अन्दर की ओर से कापी का [illegible] भी कागज

की प्रकार मोटे कागज के साथ चिपका लिया जाता है। ऐसी अवस्था में जितने पृष्ठ कापी के लिए निश्चित हों या जितने पन्ने हाफस्केप कागज के कापी बनाने के लिए लिये जायें उनके अतिरिक्त एक पन्ना अधिक टाइटल के साथ चिपकाने के लिए भी रखना चाहिए। स्टिचिंग भर साधारण सिलाई के अतिरिक्त कापियों की सिलाई जुनवन्दी के रूप में भी की जाती है। जिसका विस्तृत वर्णन जुनवन्दी के प्रकरण में दे दिया गया है।

बही खाते की सिलाई

बही और खाते की सिलाई दो प्रकार से की जाती है। एक तो पुस्तकों की तरह बाहिर की ओर से और एक कापियों की तरह अन्दर की ओर से। अन्दर की ओर से सिलाई किये जाने वाले खाते चार प्रकार के होते हैं।

1 हाफ स्केप साइज के।

2 $\frac{1}{4}$ स्केप साईज के चौडे।

3 $\frac{1}{4}$ स्केप साइज के लम्बूतरे।

4 $\frac{1}{8}$ स्केप साईज के।

इन सब प्रकार के खातों की सिलाई की विधि एक ही प्रकार की होती है। केवल इनके साइज में विभिन्नता होती है।

बही खाते के कागज

बही खाते के कागज मोटे और बढिया प्रकार के होते हैं और इन कागजों को सीने से पहले कागजों में एक तह या तीन तहें दे

कर से धमें कर लिए जाते हैं। तहों के निशान कागज पर बन रहते हैं और यह एक प्रकार से लगी हुई रेखा का काम देते रहते हैं। और मुनीम लोग इसी के आधार पर हिसाब किताब लिखते हैं। डाम्मेप साईज मे तीन तह और ½ स्केप साइज मे एक तह देना चाहिए अधिक छोटी बड़ी खातों में तह लगाने की आवश्यकता नहीं होती।

तह लगाने के पश्चात खातों के बीच में से कापी की तरह तीन छेद करके मोटी डोरा से सिलाई कर लेनी चाहिए। सिलाई करने से पहले एक मोटा कागज और एक रंगदार पाम्लीन का कागज कापी के ऊपर चढ़ा देना चाहिए, मोटा कागज बाहिर की ओर और पोम्लीन अन्दर की ओर रहनी चाहिए। सिलाई कर चुकने के पश्चात मशीन द्वारा कटाई कर के उसके ऊपर मोटा लाल रंग का चद्दर लई द्वारा चिपका देना चाहिए। जो चद्दर या मारकीन मोटे कागज के ऊपर चढ़ाई जाये उसके किनारों को अन्दर की ओर मोड़ देना चाहिए और उसके पश्चात अन्दर से पोम्लीन वाला कागज चिपका कर उस खात का दबा देना चाहिए और उसके सूखने तक उसे दब रहने देना चाहिए।

डाफ स्केप लम्बाई के बड़ा खातों की सिलाई ५ छेद करके करनी चाहिए।

लम्बर पन्नों के बही खाते

जिस साइज की और जितने पन्नों की बही बनानी हो उस साइज के कागजों की कटाई मशीन से कर के फिर आठ आठ या

दस दस पन्ना को ले कर उनमे तीन तीन को को या एक मोड़ बीच मे से और दूसरा मोड दोनों मोड़ों के बीच मे दे लेना चाहिये। ऐसा करने से पन्ने के ऊपर चार खाने दिखाई देंगे। फिर सब कागजों को सीधा करके उनके कोने मिला लेने चाहिये। इसके पश्चात पन्नो के ऊपर और नीचे कपडा लगा हुआ मोटा कागज रख कर बही को पिछले सिरे से एक इच या डेढ इच पिछली पीठ से हटाकर सिलाई कर लेनी चाहिये। सिलाई के लिए बही के ऊपर से एक ही सीध मे तीन छेद करने चाहिये। बीच वाला छेद मध्य मे और दायें बायें के छेद जितने दूरी पर पीठ से हट कर छेद करना हो उतनी ही दूरी पर छेद करने चाहियें।

बही की ऊपर से सिलाई हमेशा मोटी डोरी से करनी चाहिये और सीधी सिलाई के साथ साथ पीठ के पीछे और दायें बायें भी किनारों के ऊपर डोरी घुमा देनी चाहिये। ऐसी सिलाई करने की विधि इस प्रकार है।

सब से प्रथम डोरी को छिद्र न० एक मे ऊपर से नीचे की ओर ले जाकर फिर छिद्र न० दो मे से डोरी को नीचे से ऊपर ले आये। इसके पश्चात् डोरी को पीठ के पीछे से घुमाकर फिर छिद्र न तीन में से नीचे से ऊपर क ले आये। इसके पश्चात् फिर डोरी को किनारे से घुमा कर फिर छिद्र न० दो मे से नीचे मे ऊपर को ले आये। ऐसा करने से छिद्र न० दो में से तीन डोरियां निकलेंगी। इसके पश्चात् उस डोरी को छिद्र न० तीन में ऊपर से नीचे ले जायें और फिर छिद्र न० दो के प्रकार डोरियों

को पीठ पर और किनारे में घुमा कर छिद्र नं० तीन में से भी तीन डोरियां निकालें। इसके पश्चात डोरी को छिद्र नं० ८ब से नीचे से ऊपर को ले आवें और फिर पीठ पर से डोरी को घुमा कर छिद्र नं० ८क ही दोबारा नीचे से ऊपर को ले आवें और फिर छिद्र नं० ८ब के ऊपर बची हुई डोरी के साथ गांठ लगा कर गट्ठी का दो तीन इंच लम्बा डोरा छोड़ देना चाहिये। यह डोरी बही को बांधने के काम आता है।

बही खातों पर चढ़ाने वाले कवर

बही खातों पर जो कवर चढ़ाये जाते हैं वह प्रायः लाल रंग के होते हैं और यह कवर मोटे कागज के ऊपर लाल रंग का कपड़ा मारकीन या पुरानी धोतियां चढ़ा कर बनाये जाते हैं। कपड़े के कवरों के अतिरिक्त बड़ी और मोटी बहियों के ऊपर चमड़े के कवर भी लगाये जाते हैं।

कपड़े के कवर बनाने की विधि

जिस साइज की बही के लिए कवर बनाना हो उस साइज के दो मोटे कागज काटकर उनके ऊपर मैदे द्वारा रंगा हुआ कपड़ा चिपका देना चाहिये और कपड़े के किनारों को अन्दर की ओर मोड़ कर अन्दर से भी दूसरा कागज लगा कर [illegible] कर दबा देना चाहिये और सूखने के पश्चात इसको बही के पीछे ऊपर और नीचे रख कर सिलाई कर दी जाती है।

मशीन द्वारा सिले हुये कवर

कवरों को अधिक मजबूत बनाने के लिये मोटे कागज के ऊपर कपड़ा चिपकाने के पश्चात कवरों को सुखा कर सुखा लेना चाहिये और फिर सूखे हुये कवरों के ऊपर मशीन द्वारा सिलाई कर देनी चाहिये। कवरों के ऊपर सिलाई रजाई की सिलाई की तरह करनी चाहिये और सिलाई कर चुकने के पश्चात कवर के दूसरी ओर कागज चिपका देना चाहिये।

बटुआ टाईटल बनाने की विधि

बटुआ टाइटल बनाने के लिये मोटे कागज का एक टुकड़ा तो बही की लम्बाई के मुताबिक होना चाहिये और दूसरा टुकड़ा बही की लम्बाई मोटाई के अतिरिक्त चार इंच या छः इंच बड़ा होना चाहिए। लम्बे टुकड़े के ऊपर एक हल्का सा मोड़ बही की लम्बाई के स्थान पर, दूसरा मोड़ बही की मोटाई के स्थान पर दे देना चाहिये और इससे अधिक बढ़े हुये कागज को लिफाफे के बनने के प्रकार काट देना चाहिये। फिर दोनों कागजों के ऊपर पतले ढंग से कपड़ा लगा कर यदि सिलाई करनी हो तो सिलाई करके और उसके अन्दर रंगदार कागज लगाकर दोनों कवरों को बही के ऊपर और नीचे लगा कर सिलाई कर लेनी चाहिए। बड़ा कवर ऊपर रखना चाहिये।

चमड़े का कवर

चमड़े के कवर बनाने के लिये बढ़िया प्रकार के चमड़े को लेकर चमड़े के दो टुकड़े काट लेने चाहिये, एक टुकड़ा बही की

लम्बाई और चौड़ाई की साइज का और दूसरा टुकड़ा चारों
लम्बाई चौड़ाई के अतिरिक्त मोटाई से डेढ़ इंच लम्बा काटना
चाहिये। चमड़ा यदि रंगा हुआ न हो तो रंग देना चाहिये और
फिर चमड़े के अन्दर एक पतला सा कागज चिपका देना चाहिये
और चार या छः इंच बढ़े हुये भाग को लिफाफे के ढक्कन के
रूप में काट कर वहां के कागज के ऊपर रख कर पहली विधि से
सिलाई कर लेनी चाहिये। चमड़े के अन्दर की ओर यदि अस्तर
लगाना हो तो रंगीन कपड़े का अस्तर लगाना चाहिये। अर्थात्
सिलाई से पहले चमड़े के दोनों टुकड़ों के अन्दर की ओर कपड़ा
लेई द्वारा चिपका कर चमड़े पर मशीन द्वारा सिलाई कर लेना
चाहिये और फिर कपड़े के फालतू किनारों को चमड़े के बराबर
काट कर चमड़े के टुकड़ों को वहीं के कागजों के ऊपर नीचे रख
कर सिलाई कर लेनी चाहिये।

छोटी नोट बुकें बनाना

७२ छोटी नोट बुक

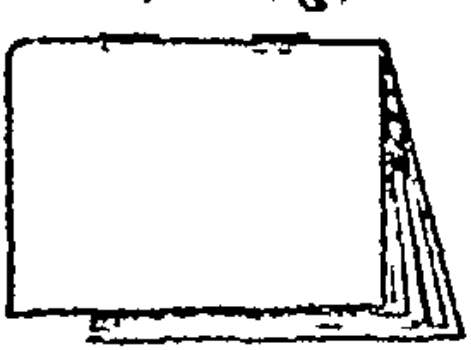

नोटबुक या पाकिट बुकें तीन प्रकार की बनती हैं। एक तो इकहरे पन्नों की, दूसरी एक जुज की बीच में से सिलाई और तीसरी जुजबन्दी सिलाई वाली।

इकहरे पन्ने की पाकिट बुक

इकहरे पन्नों की नोट बुक की सिलाई स्टिचिंग की सिलाई के आधार पर होती है और पन्नों के ऊपर और नीचे कवर को रख कर तार की या तागे की सिलाई कर दी जाती है। इस प्रकार की नोटबुक बनाने के लिए जिस साइज की नोटबुक बनानी हो उस साइज के इकहरे पन्ने काट लेने चाहियें और फिर कटे हुये पन्नों को इकट्ठा करके चारों ओर से मिला लेना चाहिए और फिर उसके ऊपर और नीचे जिस प्रकार का टाईटल चढ़ाना आवश्यक हो चढ़ाकर लम्बाई की ओर पीछे से तार की या तागे की सिलाई कर देनी चाहिए। सिलाई करने के पश्चात नोटबुक की चारों ओर से कटाई कर देनी चाहिए। कई कारीगर पन्नों की कटाई पहले करके बाद में उसके ऊपर टाईटल रख कर सिलाई करते हैं और फिर टाईटल कवर को पन्नों के बराबर सिलाई करने के पश्चात काट लेते हैं। परन्तु सिलाई करके नोटबुकों को काटने से नोटबुकों की कटाई सीधी होती है।

एक जुज की नोटबुकें

एक जुज की नोटबुकों की सिलाई कापियों की सिलाई की तरह की जाती है और उसी प्रकार कागजों को मोड़ कर ऊपर से टाइटल कवर चढ़ाकर अन्दर की ओर से तार की या तागे की साधारण सिलाई कर देनी चाहिए। फिर कटाई करके यदि अन्दर पोस्तीन चिपकानी हो तो अन्दर की ओर से एक दो

पुट्ठे ऊपर के साथ चिपका देना चाहिए। अन्यथा उसे हटा देना चाहिये।

जुजबन्दी की नोट बुकें

जुजबन्दी की नोटबुकों का विस्तृत विवरण जुजबन्दी [illegible] पुस्तक के साथ किया जायेगा।

जुजबन्दी की सिलाई की जिल्द

जुजबन्दी की सिलाई वाली पुस्तकों के ऊपर टाइटल पेज या गत्ता लगाने से पहले पुस्तक की पीठ पर जल्दी मरश लगा देना चाहिये। ताकि सब जुजें मरश नगरा द्वारा जुड़ी रहें।

मरश लगाने की विधि

५२ पुस्तक की पीठ पर [illegible] यन्त्र

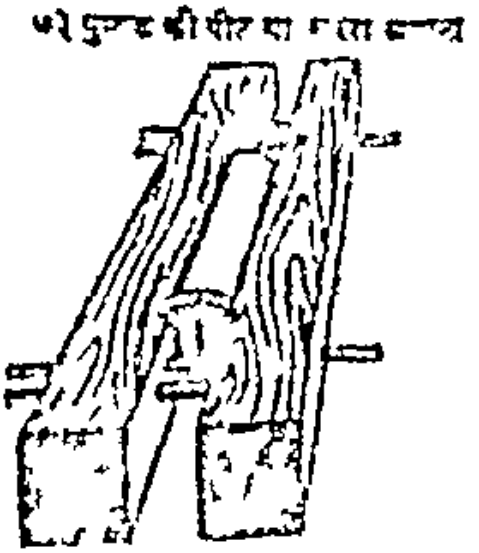

जिन पुस्तकों की पीठ पर मरेश लगाना हो उन पुस्तकों को किसी पट्टे के ऊपर रखो पास रखकर इन पुस्तकों को उसके ऊपर रख देना चाहिये। पुस्तकें की पीठ पट्टे के किनारे के साथ

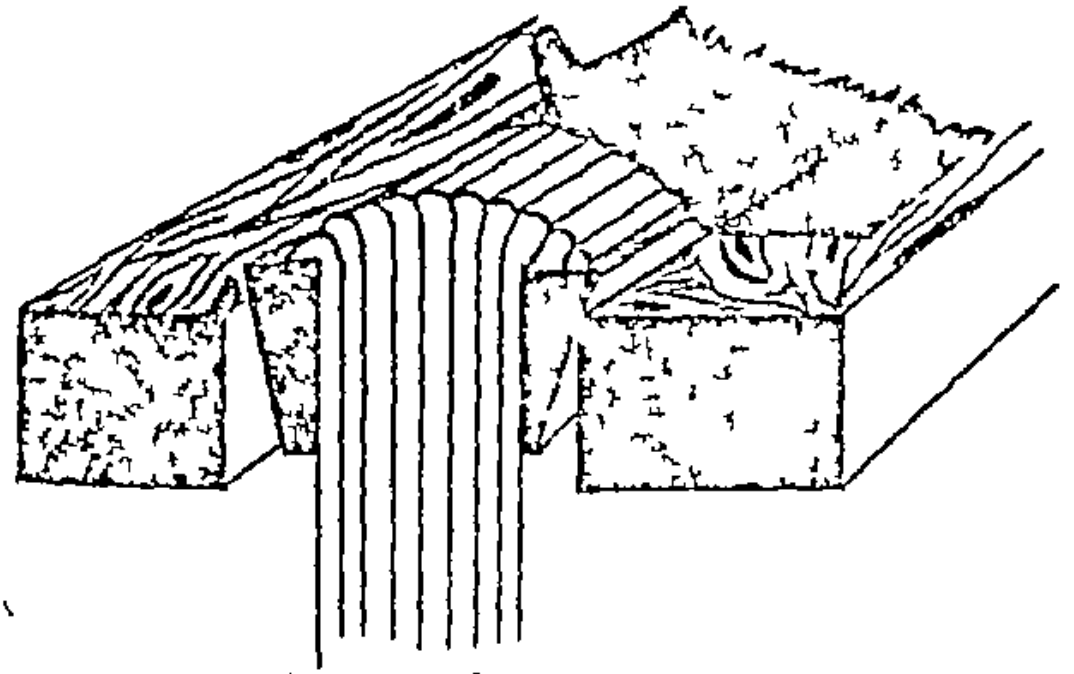

७४ पीठ पर कपड़ा चिपकाना

७५ पीठ पर पत्तियाँ चिपकाना

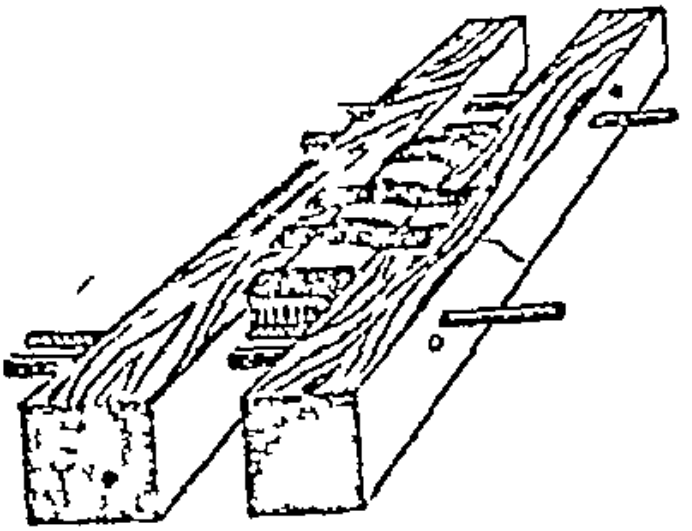

लगा रहे। इसके पश्चात पुस्तकों के ऊपर कोई गत्ता आदि रख कर उसके ऊपर कुछ बोझ रख देना चाहिये, अर्थात ईंट या पत्थर रख देनी चाहिये और फिर गर्म सरेस को ब्रुश से पुस्तकों की पीठ पर लगा देना चाहिये। सरेश लगाने के पश्चात् पुस्तकों

को इसी प्रकार से तीन घण्टे तक पड़े रहने देना चाहिए। जब सरेश सूख जाये तो पुस्तकों को उठा कर अलग अलग कर लेना चाहिए। यदि गत्ते की जिल्द बनानी हो तो पुस्तकों पर पोस्तीन लगा कर पुस्तकों की कटाई कर लेनी चाहिए और यदि पुस्तकों के ऊपर केवल टाईटल या पोस्तीन वाला टाइटल लगाना हो तो टाइटल लगाने के पश्चात् कटाई करनी चाहिए।

गत्ते की जिल्द बनाना

जिस प्रकार स्टिच की सिलाई की पुस्तकों पर भिन्न भिन्न प्रकार की जिल्दें बांधी जाती हैं उसी प्रकार जुजबन्दी की सिलाई की पुस्तकों पर भी भिन्न भिन्न प्रकार की जिल्दें बांधी जाती हैं। जैसे पत्ती वाली जिल्दें और सारा वाली जिल्दें। जुजबन्दी की सिलाई वाली पुस्तकों पर गत्ता चढ़ाने से पहले पुस्तकों का पीठ गोल कर लेनी चाहिए। पीठ में गोलाई अधिक जुजों वाली पुस्तकों में ही सुन्दर प्रतीत होती है। तीन और चार जुजों की पुस्तकों में गोलाई देने की आवश्यकता नहीं होती। इसलिए छोटी पुस्तकों की जिल्दें बिना गोलाई के ही बांध लेनी चाहियें।

पुस्तकों की पीठ में गोलाई देने की विधि

जिन पुस्तकों की पीठ में गोलाई देना आवश्यक हो उन पुस्तकों की जुजों की सिलाई कर चुकने के पश्चात् उनकी कटाई करके उनकी पीठ पर सरेश लगा कर उसे थोड़ी देर के लिए सूखने देना चाहिए और जब सरेश की नमी सूख जावे तो पुस्तक

७६ पीठ में गोलाई निकालना

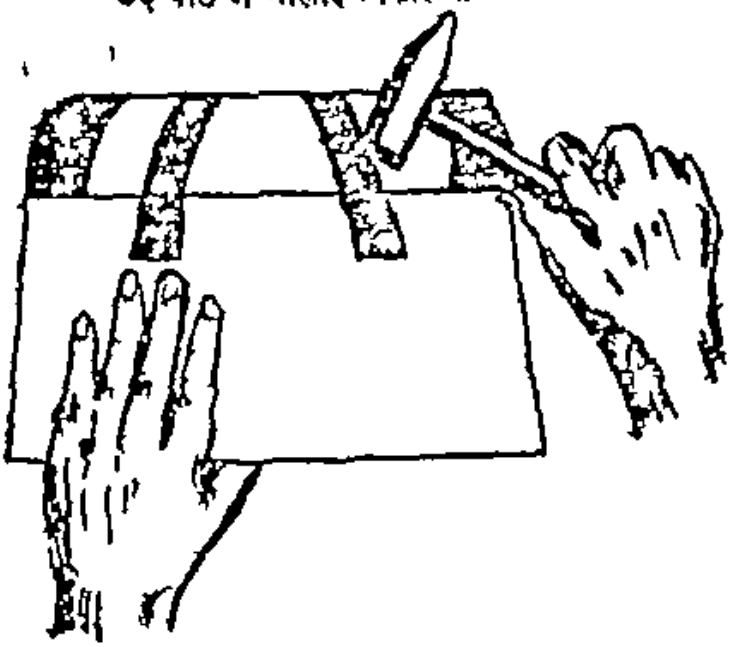

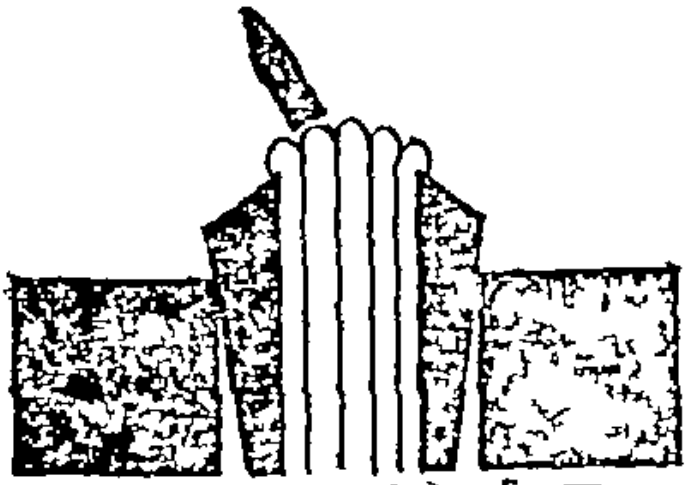

७७ स्लीव्ज में पीठ की गोलाई निकालना

चौकी के ऊपर रख कर बायें हाथ के पंजे से पृष्ठों को दबायें (अगूठे से सामने वाले भाग को अन्दर की ओर धकेलते जायें और साथ साथ दायें हाथ मे लोहे की चौड़ी हथौड़ी जो पीठ की गोलाई निकालने के लिए होती है उसकी ठोकर से जुर्जों को गोलाई में ले आयें। जब ऊपर वाली जुर्जें गोलाई में हो जायें

तो पुस्तक को उल्टा कर फिर दूसरी ओर से उसी प्रकार गोलाई निकाल लें। जब पीठ में गोलाई आ जाये तो पुस्तक को शिकंजे मे उसी प्रकार कस कर सरेश के सूखने तक पड़ा रहने देना चाहिये। गोल की हुई पीठ के ऊपर पतला कागज या जाली या मलमल का टुकड़ा सरेश द्वारा चिपका देना चाहिए। सरेश के सूखने के पश्चात् पुस्तक को निकाल कर उसके ऊपर जिल्द बना लेनी चाहिये।

स्टिच की सिलाई वाली पुस्तक की पीठ गोल करने की विधि

आम तौर पर स्टिच की सिलाई वाली पुस्तकों की पीठ सादी ही रखी जाती है क्योंकि उसकी गोलाई निकालने मे जरा कठिनाई होती है। स्टिचिंग की पुस्तकों की पीठ मे गोलाई निकालने के लिए सिलाई के पश्चात् पुस्तकों की फटाई कर लेनी चाहिए और फिर पुस्तक को शिकंजे के अन्दर कस कर उसकी पीठ की जुर्नों के अन्दर मोटे कागज की कतरें सरेश द्वारा लगा देनी चाहिए। कतरें दो जुर्जों के बीच मे दबाकर लगानी चाहिय। शिकंजे में पुस्तक को दबाते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि शिकंजे के अन्दर पुस्तक सिलाई वाले स्थान तक ही कसी रहे पीछे पुश्ते वाला भाग बाहिर रहे। हर दो जुर्जों के बीच में मोटे कागज की कतरन लग जाने से पीठ फैल जायेगी और सूखने के पश्चात कतरों के बढ़े हुये भाग को कैंची द्वारा काट कर पुस्तक

की पीठ पर कागज जाली या पतली मलमल सरश द्वारा चिपका देनी चाहिए। इस विधि से स्टिचिंग की सिलाई वाली पुस्तक में भी जुजबन्दी की सिलाई की तरह पीठ में गोलाई आ जायेगी।

गत्ता लगाने की विधि

जिस पुस्तक पर गत्ता लगाना हो उस पुस्तक के पुरते के साथ गत्ते को रखकर गत्ते के ऊपर पैंसिल से किताब की लम्बाई चौड़ाई का निशान लगा लेना चाहिए। निशान लगाने के पश्चात् उस निशान से दो दो सूत तीनों ओर बढ़ा कर गत्ते को काट लेना चाहिये और फिर इसी साइज का दूसरा गत्ता भी काट कर पुस्तक के ऊपर और नीचे गत्तों को टिका देना चाहिए। गत्ते पुस्तक के ऊपर इस प्रकार टिकाने चाहिए कि गत्तों का बढ़ाव तीनों ओर से

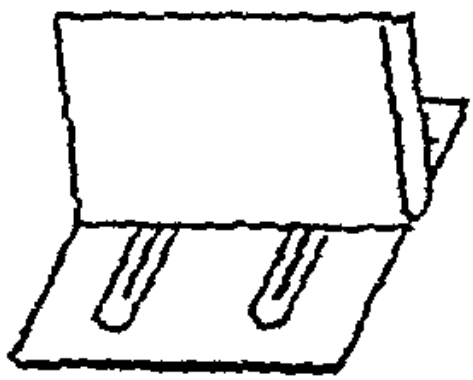

चित्र गत्ता लगाने की विधि

एक जैसा रहे और फिर एक मोटे कागज का टुकड़ा गत्तों की लम्बाई और पुरते की गोलाई के साइज का काट लेना चाहिये। फिर दोनों गत्तों को निकाल कर एक चौकी के ऊपर फैला देना चाहिए। दोनों गत्तों को फैला कर उनके बीच में मोटे कागज को

कटा हुआ टुकड़ा इस प्रकार रखना चाहिए कि गत्तों और कागज के बीच मे गत्ते की मोटाई का अन्तर रहे। फिर इसके पश्चात फैलाये हुए गत्तों की लम्बाई और चौड़ाई से दो दो इंच लम्बा और चौड़ा बाइंडिंग क्लाथ का टुकड़ा काट कर उसके ऊपर दोनों गत्तों और कागज के टुकड़ों को पहली विधि अनुसार फैला कर चारों ओर बढे हुये कपड़े को अन्दर की ओर मोड़ देना चाहिये। चारों कोनों को मोड़ते समय पेंची से हर एक कोने पर एक एक तिर्छी टक इस प्रकार लगानी चाहिए कि अन्दर की ओर दोनों तरफ का कपड़ा आपस मे बराबर मिल जाये। फिर कपड़ा लगे हुए गत्तों को उल्टा कर कपडे के ऊपर साफ कागज रख कर हाथ की दाब से कपडे को गत्ते के साथ अच्छी तरह दबा कर चिपका देना चाहिए। जब कपडा गत्ते के साथ अच्छा तरह चिपक जाये तो उस सारे कवर को पुस्तक के ऊपर अच्छी तरह फिट करके अन्दर से पोस्तीन जिसके ऊपर पुश्ते की जाली चिपकी हुई है चिपका कर पुस्तक के ऊपर और नीचे पोस्तीन के दोनों पन्नों के बीच बीच मे साफ कागज या टीन के साफ पतरे रख कर किसी बोझ के नीचे दबा देने चाहियें। सूखने पर निकाल कर उसकी पोस्तीन के पन्नों आदि को अच्छी तरह देख लेना चाहिए। यदि कहीं से कुछ उखड़ा हुआ हो तो उसे चिपका देना चाहिये।

गत्तों के साथ फीते का प्रयोग

जिल्द वाले गत्तों के साथ सिलाइ के अन्दर लगे हुये टेप दो प्रकार से जोड़े जाते हैं। एक जो पोस्तीन के ऊपर या गत्ता के

७६ गत्ते के साथ फीते का प्रयोग

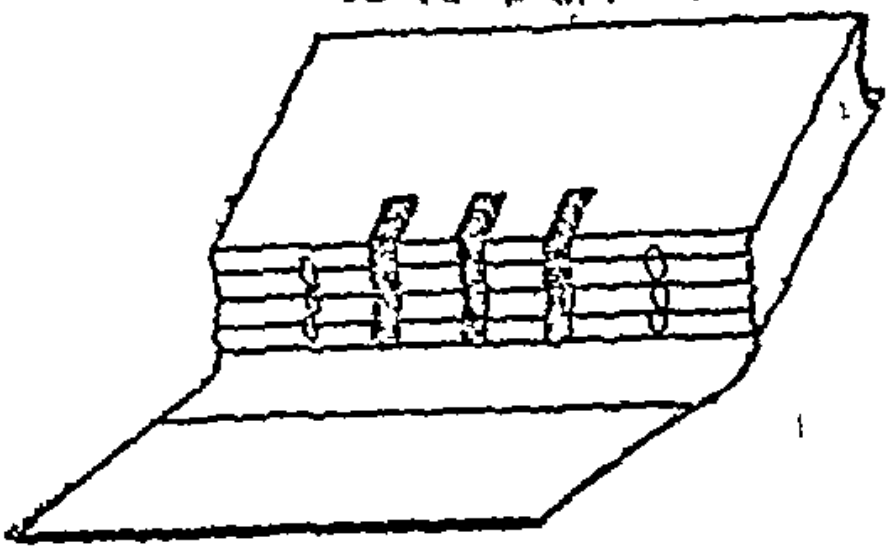

८० जुजबन्दी में फीते

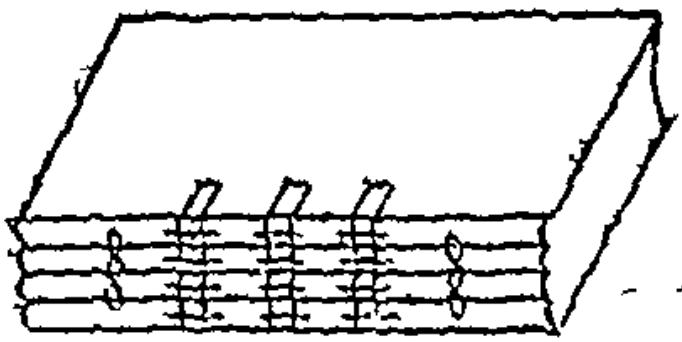

अन्दर की ओर टेप सरेश या लई द्वारा चिपका दिये जाते हैं और दूसरे वह जो गत्तों के अन्दर छेद करके फीतों को पिरो दिया जाता है।

सरेश द्वारा टेप चिपकाने की विधि

पुस्तक के पुश्ते पर गोलाई देने के पश्चात् पोस्तीन के ऊपर टेपों को लई द्वारा चिपका दिया जाता है और जब कपड़ा लगा हुआ गत्ता पुस्तक के ऊपर चढ़ाया जाता है तो पोस्तीन के साथ

ही फीते भी गत्तों के साथ चिपका दिये जाते हैं और यदि टेपों को गत्ते के साथ पहले चिपकाना हो तो जिल्द को पुस्तक के ऊपर रख कर टेपों को गत्ते के अन्दर की ओर सरेश या लई द्वारा चिपका कर उनके ऊपर एक लम्बी कागज की पट्टी चिपका दी जाती है। जो उन टेपों को गत्तों के साथ जोड़े रखती है। इसके सूखने के पश्चात् पोस्तीन को गत्ते के साथ जोड़ दिया जाता है।

टेप को टक देकर गत्ते के साथ लगाने की विधि

जिन जिल्दों में टेप की सिलाई गत्ते के साथ करनी हो उन गत्तों को काट कर पुस्तक के ऊपर और नीचे टिका देनी चाहियें और जहा जहा टेप लगे हुए हों उन स्थानों पर पुश्ते से आध इंच हट कर गत्ते के ऊपर किसी चौरसी से टक लगा देने चाहियें। टकों की लम्बाई फीतों की चौड़ाई के आधार पर होनी चाहिए और फिर फीतों को ऊपर से छेदों में डाल कर अन्दर की ओर खेंच कर सरेश द्वारा गत्ते के साथ चिपका देना चाहिये और फिर अन्दर की ओर एक कागज की पट्टी उन फीतों के ऊपर चिपका देनी चाहिये और पुस्तक और गत्ते के बीच में टीन की पत्ती रख कर हथौड़ी की ठोकर से छेदों को बिठा देना चाहिए। जब दोनों ओर के गत्ते लग जायें तो उनके ऊपर कपड़ा चमड़ा या जिस प्रकार की जिल्द बाधनी हो वह बाध देनी चाहिए।

इस प्रकार की जिल्दें प्राय बैंकों के बड़े रजिस्टरों और लैजरों पर बाधी जाती हैं।

गत्ते के साथ डोरियों का प्रयोग

टेप की प्रकार ही डोरिया भी दो प्रकार से लगाई जाती हैं। एक तो डोरियों को पोस्तीन के साथ चिपका कर और दूसरे

८१ गत्ते के साथ डोरियों का प्रयोग

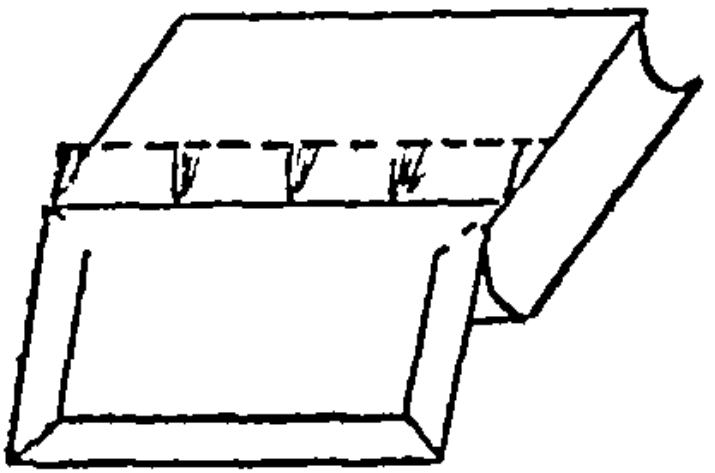

डोरियों को गत्ते के अन्दर पिरो कर। डोरिया और फीते चिपकाने की अपेक्षा गत्ते में पिरोये हुये अधिक मजबूत रहते हैं।

डोरियों को पोस्तीन के साथ चिपकाने की विधि

डोरियों को पोस्तीन के साथ चिपकाते समय डोरियों को खोल कर और फैला कर पोस्तीन के ऊपर लई या सरेश द्वारा चिपका देना चाहिए। यदि डोरियों को गत्ते के साथ चिपकाना हो तो डेढ़ इंच चौड़ा और पुस्तक की लम्बाई के बराबर लम्बे कागज के दो टुकड़े लेकर पोस्तीन के ऊपर पुश्ते के पास रख देने चाहियें

और उन कागजों के ऊपर डोरियों को फैला कर सरेश द्वारा चिपका देना चाहिए और फिर उस कागज के ऊपर लई लगाकर उसे गत्ते को अन्दर की ओर चिपका देना चाहिये।

डोरिया और फीते जो केवल पोस्तीन या गत्ते के साथ चिपकाने हों तो गत्ते के ऊपर बाईंडिंग क्लाथ आदि पहले चढ़ा लेना चाहिये और यदि टेप और डोरिया गत्ते मे पिरोनी हों तो गत्ते के ऊपर चमड़ा या बाईंडिंग क्लाथ आदि डोरिया और फीते पिरोने के पश्चात् चढाने चाहियें।

गत्ते में डोरियां पिरोने की विधि

गत्ते में जितनी डोरिया पिरोनी हों गत्ते को पुस्तक के ऊपर रख कर डोरियों के सामने ½ इच पुश्ते से हट कर गत्ते के ऊपर लगा लेनी चाहियें और फिर लगे हुए निशानों पर सुये से सुराख

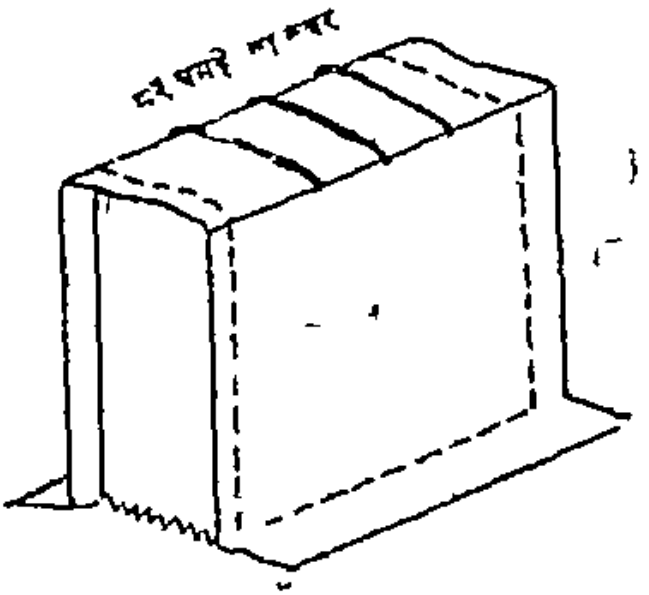

कर के डोरियों को छेदों में बाहिर की ओर से पिरो देना चाहिए। यदि एक छेद वाली सिलाई करनी हो तो डोरियों को अन्दर की ओर ले जाकर उन्हें फैला कर गत्ते के अन्दर की ओर सरेश द्वारा चिपका देना चाहिए और फिर उनके ऊपर कागज की एक पट्टी लगा देनी चाहिए और यदि दो छेदों वाली सिलाई करनी हो तो दूसरा छेद पहले छेद से आध इंच की दूरी पर 45° के एंगल पर करना चाहिए और तागों को अन्दर की ओर से छेद में डाल कर गत्ते के ऊपर वाले भाग पर फैला कर सरेश द्वारा चिपका देना चाहिए और फिर डोरियों के ऊपर एक कागज की पट्टी लगा देनी चाहिए। सूखने पर गत्ते के ऊपर चमड़ा या बाईंडिंग क्लाथ आदि चढ़ा देना चाहिए।

फुल बाऊंड पुस्तक का कवर बनाने की विधि

सामान—

गत्ते दो पौंड $7\frac{1}{2}'' \times 5'' =$ दो

बाईंडिंग क्लाथ $8 \times 11'' =$ एक

बनाने की विधि

बाइंडिंग क्लाथ के ऊपर लई लगाकर दोनों गत्तों को पुस्तक की मोटाई से $\frac{1}{8}$ अन्तर पर टिका दो और फिर बीच वाले अन्तर में एक कागज का टुकड़ा काट कर जमा दो और बाईंडिंग क्लाथ के चारों किनारों को गत्तों के अन्दर मोड़ दो और दस फार्म की पुस्तक के ऊपर चढ़ा कर अन्दर से पोलीन चिपका दो। यदि

पुस्तक के साथ सिले हुये गत्तों के ऊपर कपड़ा लगाना हो तो कपड़े के ऊपर लई लगाकर टिच वाली जिल्दों की बाईंडिंग के आधार पर कपड़ा चढ़ा दो।

चमड़े वाला कवर

चमड़े की खाल में से साफ और मुलायम 0" × 12" का एक टुकड़ा काट कर उसके चारों किनारों को सिल के ऊपर रख कर रापी द्वारा छील दो। चमड़े को छिलने से पहले पानी से

८३ चमड़े के जिल्द की पीठ

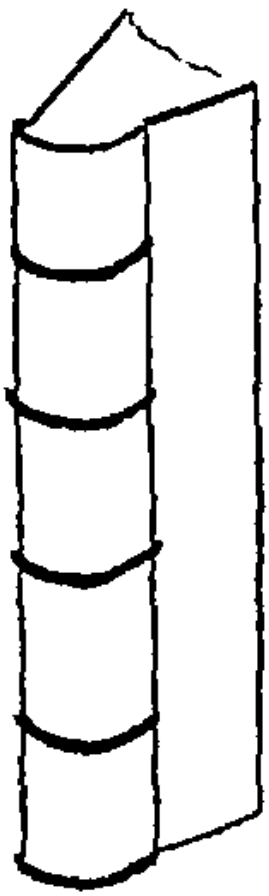

८४ साधारण लिफाफे

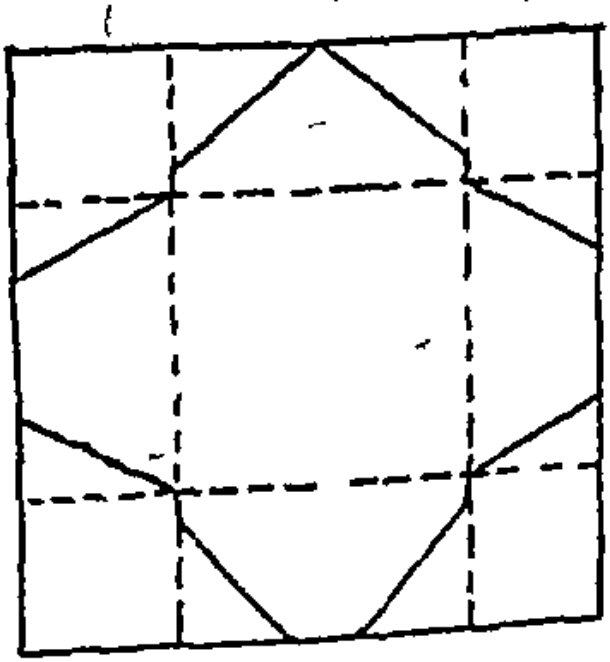

भिगो लेना चाहिए और चमडे को उल्टी ओर से छीलना चाहिये ताकि किनारे पतले होकर गत्ते के साथ अच्छी तरह चिपक जायें। इसके पश्चात् चमड़े पर लई लगाकर उपरोक्त साईज के गत्ता को उपरोक्त विधि अनुसार रख कर चमडे को अन्दर की ओर मोड़ कर गत्ते के साथ चिपका दो और फिर उस कवर की पुस्तक के ऊपर चढ़ा कर अन्दर से पोस्तीन लई द्वारा लगा दो और पुस्तक को सूखने तक दबाये रखो।

चमडे रग कर भी लगाये जाते हैं। परन्तु आज कल प्रत्येक रग के चमड़े मिलते हैं। बिना रग के चमडे का अधिक प्रयोग किया जाता है।

पृष्ठों के किनारो पर रंग चढाना

आजकल कापियों के पृष्ठों के ऊपर लाल पीले और अबरी सुमा रग चढ़ाये जाते है। इसी प्रकार बढ़िया प्रकार की पुस्तकों के किनारों पर भी रग चढ़ाये जाते हैं। रग चढ़ाने के दो तरीके प्रचलित है—एक सस्ता और दूसरा जरा महगा। साधारण कापियों के पन्नों के किनारों को रगने के लिए रग को केवल सादे पानी म घोल कर और कटी हुई कापियों को इकट्ठा रख कर ऊपर से कोई पत्थर की शिला रख देनी चाहिए फिर घुले हुये रग को किसी स्पञ्ज ब्रुश या मलमल का कपड़ा भिगो कर कापियों के किनारों पर मारना चाहिए। जिन कापियों पर रग चढाना हो उन कापियों की कटाई के पश्चात् और जिल्द चढ़ाने से पहले पन्नों के किनारों को रग लेना चाहिए।

कई लोग भिन्न भिन्न रंगों के छींटे दे कर कागजों के किनारे रंग देते हैं और वह भले प्रतीत होते हैं। छोटे ब्रुश द्वारा विभिन्न रंगों की लकीरें लगाकर भी सजावट की जाती है।

बढ़िया प्रकार का रंग चढ़ाने की विधि

आजकल बढ़िया प्रकार के रंग स्प्रिट में हल करके पृष्ठों पर लगाये जाते हैं। लगाने की विधि उपरोक्त विधि अनुसार ही है। परन्तु स्प्रिट वाला रंग कागज के पन्नों को खराब नहीं करता और जल्दी सूख जाता है। स्प्रिट में डालने वाले रंग भी विशेष प्रकार के होते हैं उन्हीं को प्रयोग में लाना चाहिए।

जुजबन्दी की कापियां

साधारण स्कूलों की कापियां एक दो तीन और चार दस्ते की जुजबन्दी की सिलाई द्वारा ही बनाई जाती हैं और उनकी जुजबन्दी की सिलाई, सिलाई वाले फ्रेम पर की जाती है और जो डोरियाँ सिलाई में रखी जाती हैं उनको अन्तिम जुज के साथ ही काट दिया जाता है। डोरियां बढ़ा कर नहीं रखी जातीं और फिर कापियों के पुश्तों पर सरेश लगाकर सुखा दिया जाता है और सरेश सूखने के पश्चात् उनके ऊपर और नीचे पतला गत्ता रख कर पुश्ता लगा दिया जाता है उसके ऊपर अबरी आदि चिपका दी जाती है और अन्दर से पोतीन गत्ते के साथ लई द्वारा चिपका कर कापियों को किसी पत्थर के नीचे सूखने तक दबा दिया जाता है और कापियों के सूख जाने के पश्चात् उनकी कटाई कर ली जाती है।

बढ़िया प्रकार की कापियों की सिलाई

पुस्तकों की सिलाई की भाति ही की जाती है और उनके अन्दर डोरिया या फीते आदि भी रखे जाते हैं और उनके ऊपर जिल्दें भी पुस्तकों की भाति ही बान्धी जाती हैं अर्थात् कापिया के पुश्ते पर सरेश लगा ने के पश्चात उनके सूखने पर कटाई कर के उनके ऊपर आवश्यकतानुसार गत्ता चढ़ा लिया जाता है।

नोटबुक बनाने की विधि

नोट बुकों के बनाने की विधि भी उपरोक्त कापियों के आधार पर ही है। केवल अन्तर इतना है कि यह आकार मे छोटी होती है और इनमे डोरियाँ और फीते बहुत कम रखे जाते हैं इनके ऊपर भी दो प्रकार की जिल्दें बनाई जाती हैं एक तो गत्ते वाली जिल्दें पुस्तकों की भाति और दूसरे बाइंडिंग क्लाथ की जिल्दें जो केवल मोटे कागज द्वारा चढ़ाइ जाती है।

दूसरी प्रकार की जिल्दों के भी दो रूप प्रचलित हैं। एक तो नोटबुक के बराबर और दूसरे नोटबुक से एक सूत तीनों ओर बढ़ा हुआ। पहली प्रकार की जिल्द बाधने के लिए जब नोट बुकों के पुश्ते पर लगी हुई सरेश सूख जाये तो उसके ऊपर और नीचे मोटे कागज का टुकडा रख कर ऊपर से बाईंडिंग क्लाथ और अन्दर से पोस्तीन चिपका दी जाती है और फिर उन्हें सूख ने तक किसी पत्थर आदि के नीचे दबा दिया जाता है और सूखने के पश्चात् उनकी कटाइ करली जाती है।

दूसरी प्रकार की जिल्द बनाने के लिए ऊपर और नीचे वाले मोटे कागज के टुकड़े नोटबुक की कटाई के पश्चात् नोटबुक की चौड़ाई से एक सूत और लम्बाई से दो सूत बड़े काट कर उनके ऊपर बाइंडिंग क्लाथ फुल बाउंड जिल्द के आधार पर चढ़ा लेना चाहिए और बाइंडिंग क्लाथ को मोटे कागज के अन्दर मोड़ कर चिपकाने के पश्चात् अन्दर से पोस्टीन चिपका कर नोटबुक को दबा दिया जाता है।

पैन्सिल रखने वाली जिल्द

कई नोटबुकों के पुश्ते पर पैन्सिल रखने का स्थान बना रहता है। इस प्रकार का स्थान बनाने के लिए पैन्सिल के साइज के आधार पर बाइंडिंग क्लाथ जो नोटबुक के ऊपर चढ़ाना हो उस के मध्य में कपड़े को दोहरा करके मशीन द्वारा सिलाई कर लेनी चाहिये और फिर बाइंडिंग क्लाथ को गत्ते या मोटे कागज के ऊपर चढ़ा देना चाहिए।

बटुवे की प्रकार की नोटबुक

इस प्रकार की जिल्द बाँधने के लिए ऊपर और नीचे वाले गत्तों के अतिरिक्त डेढ़ इंच चौड़ा और दूसरे गत्तों की लम्बाई के समान एक और गत्ता काट कर उसकी लम्बाई वाले एक भाग में पैंसिल से गोलाई का निशान लगाकर कैंची से काट लेना चाहिए। यदि नोटबुक बहुत मोटी हो तो पुस्तक की मोटाई से दो तीन सूत कम चौड़ा और गत्तों की लम्बाई के बराबर एक और गत्ते का

टुकड़ा काट लेना चाहिए। इसके पश्चात् बाइंडिंग क्लाथ का टुकड़ा जो चौड़ाई मे गत्ते की लम्बाई से 3 इ च बडा और लम्बाई नोटबुक की दुगनी चौडाई + दुगनी मोटाई + तीन इ च लेकर उसको फटे के ऊपर बिछा कर लई लगा देनी चाहिए और फिर चक्र चित्र के अनुसार उसके ऊपर गत्ते और कागज के टुकडे रख कर कपडे को अन्दर की ओर मोड़ देना चाहिए और बटुवे वाले गोलाई के गत्ते से लेकर जिल्द वाले गत्ते के एक इ च भाग तक एक टुकड़ा बाइंडिंग क्लाथ का काट कर और बटुवे की तरह गोलाई देकर अन्दर की ओर से चिपका देना चाहिए और फिर गत्तों के जोडों मे लकडी या हाथी दात की मुलायम छुरी को घुमा कर भली बिठा देनी चाहिए ताकि गत्ता सुविधा पूर्वक उलट सकें। इसके पश्चात् इस कवर को सीधा फैला कर ऊपर और नीचे एक-एक गत्ता रख कर किसी शिकजे में या पत्थर के नीचे दबा देना चाहिए। सूखने पर उसे निकाल कर नोटबुक के ऊपर चढ़ा कर अन्दर से पोस्तीन चिपका देनी चाहिए। यदि बटन लगाना हो तो पोस्तीन चिपकाने से पहले बटुए वाले गत्ते और नीचे वाले गत्ते मे पच द्वारा छेद करके उसमें स्टिच वाले बटन जो विशेष रूप से इसी काम के लिये बनाये जाते हैं फिट कर देने चाहियें।

लिफाफे

आजकल चार प्रकार के लिफाफे प्रयोग मे लाये जाते ह। प्रत्येक प्रकार के लिफाफे के बनाने का ढग कुछ एक दूसरे से

मिलता जुलता और कुछ एक दूसरे के विपरीत है। लिफाफों के चार प्रकार निम्नलिखित हैं।

1 साधारण लिफाफे जो चिट्ठी पत्री डालने और निमन्त्रण पत्र आदि भेजने के काम आते हैं।

2 जो दफ्तरों के पत्र व्यवहार के लिये प्रयोग किये जाते हैं।

3 जो सौदा सलफ डालने के काम आते हैं।

4 बैंकों तथा इन्शोरिन्स कम्पनियों के लिफाफे।

साधारण लिफाफे

यह लिफाफे दो प्रकार के होते हैं। एक लम्बूतरे और दूसरे चौकोर से मिलते जुलते। दोनों प्रकार के लिफाफों के बनाने के लिये जो कागज लगता है उस का गुर इस प्रकार है।

लम्बाई × 2 + $\frac{1}{2}$"

चौड़ाई × 2 + $\frac{1}{2}$"

अर्थात् जिस साइज का लिफाफा बनाना हो उस साइज के आधार पर कागज ले लेना चाहिये और उनकी काट आगे दिये गये चित्रों के आधार पर कर लेनी चाहिये।

चित्र

साढ़े दस इंच लम्बा और आठ इंच चौड़ा कागज लेकर उस पर उपरोक्त चित्र के आधार पर रेखायें खींच लेनी चाहियें। पहले लिफाफे की लम्बाई और चौड़ाई के अनुसार सीधी रेखायें क ख ग घ खींच लेनी चाहियें। इस के पश्चात् क और ग, तथा ख और

घ पर तिछीं रेखायें डाल कर कागज को काट लेना चाहिये। रेखायें डालते समय इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिये कि क की चौड़ाई से ग की चौड़ाई अधिक हो। फालतू कागज काट लेने के पश्चात् पहले ख को मोड़ा फिर घ को मोड़ दो इसके पश्चात् क को मोडो। घ वाली पट्टी पर जरा लेई लगा कर ख के ऊपर चिपका दो और फिर क के किनारे के साथ २ लेई लगा कर ख और घ के ऊपर चिपका दो। इसके पश्चात् ग को मोड़ कर किसी कापी पुस्तक के नीचे दबा दो लिफाफा तैयार है। जब लिफाफा सूख जाये तो ग के किनारे के साथ २ सरेश लगा कर उसे इसी तरह खुला सुखा लो। चार। सरेश लगाने के लिए चित्र में निशान दिये गये हैं। इनसे अधिक सरेश नहीं लगानी चाहिये। यदि ग वाले मोड में गोलाई देनी आवश्यक हो तो उस में गोलाई का निशान देकर कैंची द्वारा गोलाई को काट लेना चाहिये।

दफ्तरी लिफाफा

दफ्तरी लिफाफे के लिए कागज का गुर इस प्रकार है।

लम्बाई + 3"

चौड़ाई × 2 + ½"

इस लिफाफे के काटने की विधि ऊपर चित्र में दी गई है। यह लिफाफे भिन्न २ साइजों के होते हैं। जैसे 11½ × 4½", 12 × 5, 16" × 12" और 15" × 9½" आदि। यह लिफाफे

८५ दफ्तरी लिफाफे

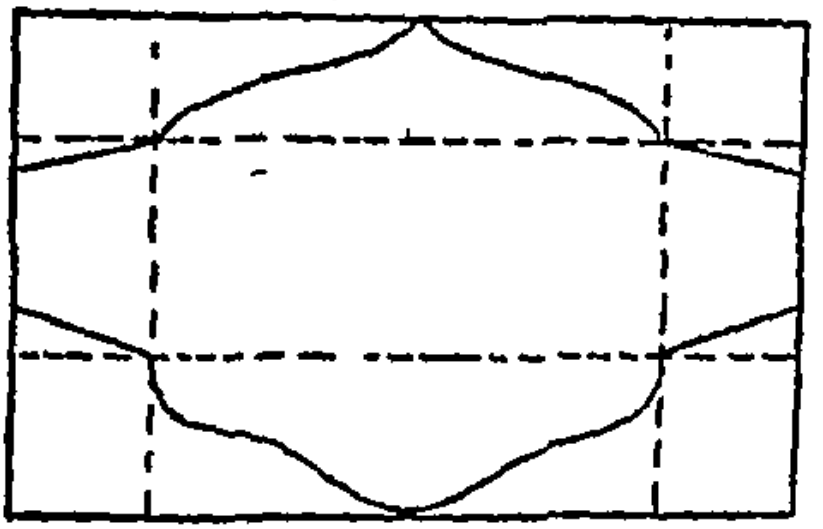

प्रायः खाकी कागज के बनाये जाते हैं। बड़े साईज के लिफाफों के लिये मोटे कागज का प्रयोग करना चाहिए।

बनाने की विधि

15" × 10½" कागज का टुकड़ा लेकर उस के ऊपर उपरोक्त चित्र के अनुसार रेखायें खेंचो। क और ग की चौड़ाई बराबर रहनी चाहिए ख की चौडाई एक इंच और घ की चौड़ाई दो इंच होनी चाहिए।

कागज के ऊपर रेखायें खेंचने के पश्चात रेखाओं का बाहर वाला फालतू कागज कैंची से काट देना चाहिए। फालतू कागज काटने के पश्चात् पहले क वाले भाग को मोड़ कर उसके ऊपर ग वाले भाग को मोड़ देना चाहिए। फिर ख वाले भाग को और उसके पश्चात् घ वाले भाग को मोड़ना चाहिए। इसके पश्चात् ग वाले भाग के अन्दर की ओर किनारे के साथ लई या सरेस

लगा कर उसे क वाले भाग के ऊपर चिपका देना चाहिए। इसके पश्चात् ख वाले भाग पर सरेश या लई लगा कर उसे चिपका देना चाहिए और घ वाले भाग को खाली मोड़ देना चाहिए। लिफाफा तैयार है।

दुकानदारी के लिफाफे

यह लिफाफे दुकानदार सौदा डालने के लिए प्रयोग में लाते हैं। यह भिन्न भिन्न साईज़ों के होते हैं और इनके साइज़ सौदे के वजन के आधार पर होता है। जैसे आध पाव, पाव, आध सेर, सेर, दो सेर और पाच सेर आदि। यह लिफाफे प्राय पैकिंग पेपर के बनाये जाते हैं। कई लोग अखबार और मासिक पत्रों के कागजों के भी बनाते हैं। इनके बनाने के लिए कागज का गुर इस प्रकार है —

लम्बाई × 1"

चौड़ाई × 2 + ½"

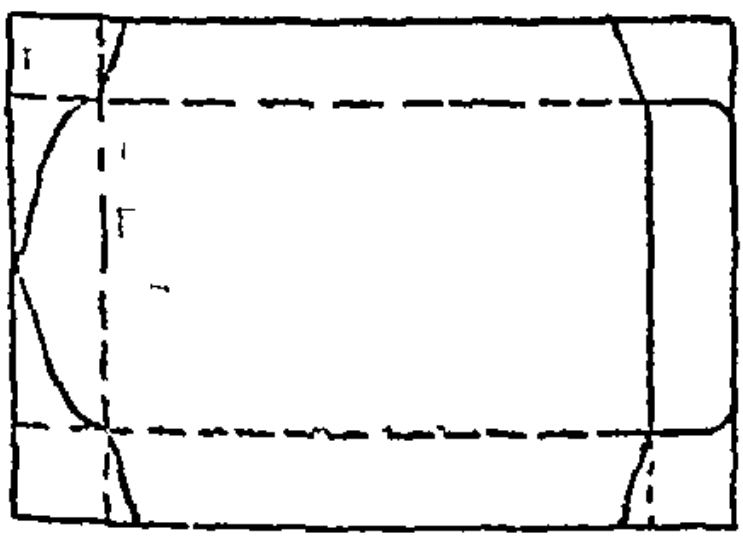

८६ लम्बे लिफाफ

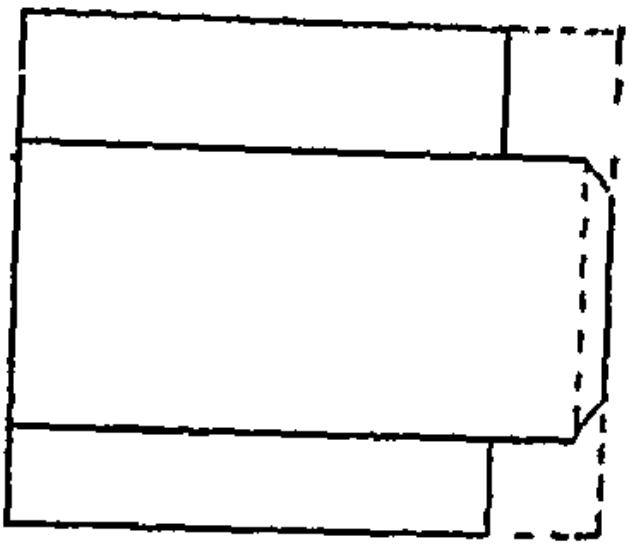

८७ दुकानदारी के लिफाफे

बनाने की विधि

ग्यारह इंच लम्बा और 14½ इंच चौड़ा कागज का टुकड़ा लेकर उसके ऊपर उपरोक्त चित्र के अनुसार रेखायें खींच कर फालतू कागज को काट दो। इसमें केवल तीन भाग होंगे। ऊपर क मुंह खुला रहेगा।

पहले क वाले भाग को मोड़ कर उसके ऊपर ग वाले भाग को मोड़ दो और उसके पश्चात् ख वाले भाग को मोड़ दो। ग वाले भाग के किनारे के अन्दर की ओर सरेश लगा कर क वाले भाग के ऊपर चिपका दो और ख वाले भाग पर सरेश लगाकर उसे क और ग के ऊपर चिपका दो, लिफाफा तैयार है।

बैंकों के लिफाफे

इन लिफाफों के बनाने का ढंग साधारण लिफाफों की भांति ही है। केवल इस के बीच वाली चौड़ाई के भाग को अन्दर से काट

कर उसके ऊपर पतला कागज चिपका दिया जाता है। इस लिफाफे पर पता लिखने की आवश्यकता नहीं होती। इसके अदर पडी हुई चिट्ठी के अ दर पड़ा हुआ पता बाहिर से दिखाई देता रहता है। इस प्रकार का लिफाफा बनाने के लिए साधारण लिफाफे की भाति रेखायें खेंचकर उसका फालतू कागज काट कर उसके बीच वाले चौडे भाग पर एक इ च चौडा और तीन इ च या

पद बैकों के लिफाफे

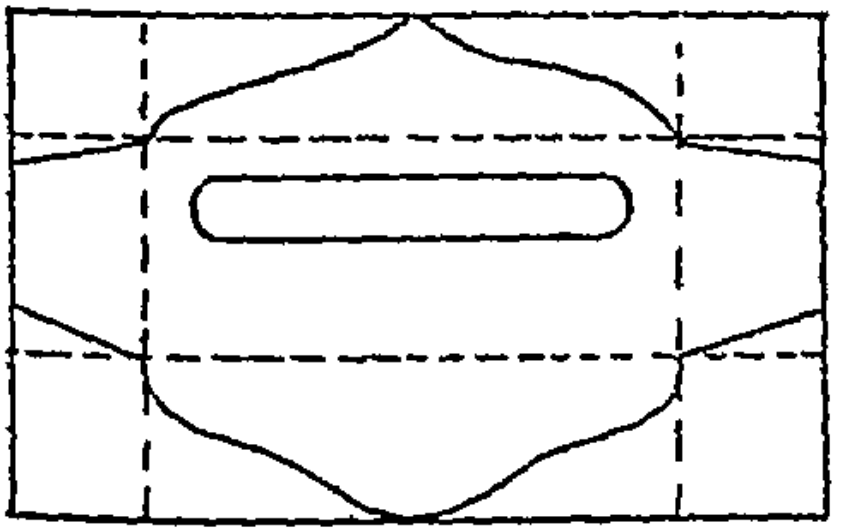

साढ़े तीन इच लम्बा पैंसिल का निशान लगा कर बीच के कागज का टुकड़ा चाकू या कैंची आदि से काट कर उसके ऊपर ग्लेज पेपर का टुकडा जो कटे हुए स्थान से दो सूत बड़ा और दो सूत चौड़ा हो, के किनारों पर सरेश लगा कर उस कटे हुए भाग के ऊपर चिपकाने के पश्चात् लिफाफे के अन्य भागों को मोड़ कर पहली विधि अनुसार चिपका लेना चाहिए। लिफाफा तैयार है।

उपरोक्त लिफाफों के अतिरिक्त माउट लिफाफे भी प्रयोग में लाये जाते हैं।

माऊट लिफाफे

इन लिफाफों को बनाते समय कागज के नीचे पतली मलम या जाली का कपड़ा लई द्वारा चिपका दिया जाता है और उस पश्चात् लिफाफे को काट करके दफ्तरी लिफाफे के जोड़ लि जाता है। लिफाफा बनाने की विधि दफ्तरी लिफाफे के अनुस ही है। बगल कागज के साथ कपडा चिपकाने का ढग नीचे दि जाता है।

कागज के टुकडे के बराबर मलमल या जाली का कपड़ा लेक कपडे को पानी से भिगो कर किसी साफ तख्ते के ऊपर बि देना चाहिए और उसके ऊपर गीला स्पज फेर कर कपड़े व सिलवटें निकाल देनी चाहियें। जब कपडा तख्ते के साथ अच्छ तरह चिपक जाये तो इसके ऊपर पतली लई मल देनी चाहिए औ फिर कागज को एक तरफ से स्पज द्वारा भिगो कर कपड़े के ऊप बिछा देना चाहिए। कागज को कपड़े के ऊपर बिछाने के पश्चा हथेली की दाब या ब्लाटिंग पेपर की दाब से उसकी सिलव निकाल देनी चाहिए। जब सिलवटें निकल जायें तो उसे इस तरह कुछ घण्टों के लिये पडे रहने देना चाहिए ताकि यह सू जायें। सूखने के पश्चात् कपड़े के किनारों को धीरे से उठा क माउंट किया हुआ कागज फट्टे से अलग कर लेना चाहिए औ फिर आवश्यकतानुसार जिस साईज का लिफाफा बनाना हो लिफाफा काट लेना चाहिए।

नक्शे (Maps) माऊट करने विधि

सामानः—

नक्शा	12 × 15 इंच	एक
पतली मलमल या जाली	14 × 17 इंच	टुकड़ा एक
लकड़ी का रूल	$\frac{1}{2}$ × 12 इंच	एक
लकड़ी की पट्टी	$\frac{1}{2}$ × $\frac{1}{4}$ × 12 इंच	एक
फीता	8 × $\frac{1}{2}$ इंच	एक

बनाने की विधि'—

नक्शे माऊंट करने के लिए साफ तख्ता या शीशे की प्लेट होनी चाहिये।

सब से प्रथम कपडे को पानी मे भिगो कर साफ तख्ते पर फैला दो और स्पंज को पानी मे भिगो कर फैलाये हुये कपडे के ऊपर फेरो ताकि उसकी सिलवटें निकल जायें। इसके पश्चात् लई को पतला करके कपडे में छान लो और फिर छनी हुई लई को फटे पर बिछे हुए कपड़े के ऊपर मल दो। लई को कपडे के ऊपर मलते समय इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए कि सारे कपडे के अन्दर लई एक सी लगे। जब कपड़े के ऊपर लई लग चुके तो नक्शे को किसी दूसरे फटे के ऊपर उल्टा बिछा कर उसके ऊपर भिगो कर स्पंज फेरो ताकि सारा नक्शा गीला हो जाये। फिर नक्शे को उठा कर लई लगे हुए कपडे के ऊपर जमा दो और हाथ की हथेली की दाब से उसकी सब सिलवटें निकाल

दो और फिर छ सात घण्टे के लिए उसे इसी प्रकार पड़ा रहने दो ताकि अच्छी तरह सूख जाये। सूखने पर कपड़े के किनारों को उखेड़ कर धीरे से सारे नक्शे को लकड़ी के तख्ते से अलग [illegible]र दो और नक्शे के आस पास के फालतू कपड़े को कैंची से [illegible]ट दो। इसके [illegible] नक्शे के ऊपर चपटी फटी और नीचे [illegible] फूल कीलों [illegible] दो। यदि डीला के नीचे फीता लगाने की आवश्यकता [illegible] लगा सकते हो। इसके पश्चात् आठ इंच वाले फीते [illegible] फटी के साथ पीछे की ओर से दोहरा कीलों द्वारा ठोंक दो [illegible] तैयार है।

परीक्षा के गत्ते बनाना

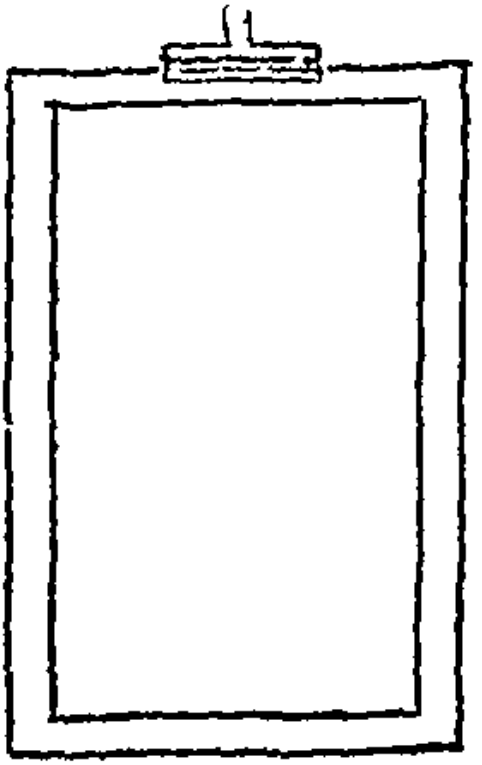

८६ परीक्षा का गत्ता

यह गत्ते स्कूलों कालिजों के छात्रों को इम्तहान के समय काम आते हैं। यह दो प्रकार के होते हैं। एक तो सादे और दूसरे जिनके साथ बांधने के लिए डोरी लगी रहती है।

सादे गत्ते बनाने की विधि

सामान—

गत्ता	दो या तीन पौण्ड का	10"×14"	एक
कागज	सफेद या रंगदार	11"×16"	एक
कागज	सफेद	9½"×13½"	एक

बनाने की विधि—11"×16" वाले कागज के ऊपर पतली लेई लगा कर उसे गत्ते के एक ओर चिपका दो और चारों किनारों के पिछली ओर मोड़ कर चिपका दो और फिर 9½×13½" वाले कागज पर लेई लगा कर गत्ते की पिछली ओर चिपका दो। इसके ऊपर सिरे पर लोहे की चुल्की लगादो गत्ता तैयार है।

दूसरा प्रकार

सामान—

गत्ता	दो या तीन पौण्ड का	10"×14"	एक
मोटा कागज	जिस पर कपड़ा चिपका हुआ हो	22"×4"	एक
कागज	सफेद या रंगदार	15"×11"	एक
कागज	सफेद	9½×13½"	एक
फीता	लम्बा	30×½"	एक

बनाने की विधि—15×11 इंच वाले कागज के ऊपर लेई लगाकर उसे गत्ते के एक ओर चिपका दो और किनारों को पिछली ओर चिपका दो। इसके पश्चात कपड़ा लगे हुये कागज

के टुकड़े को गत्ते की पिछली ओर इस प्रकार चिपकाओ कि कागज का टुकड़ा गत्ते के मध्य में रहे और कागज भी दोनों ओर से एक जैसा बढ़ा रहे। केवल लई गत्ते के ऊपर ही लगा कर उस कागज को चिपकाना चाहिए। कागज पर लगे हुये गत्ते वाला भाग ही गत्ते के साथ चिपकाना चाहिए। इस माउंटड पेपर को चिपकाने के पश्चात् 9½ × 13½ इंच वाले कागज पर लई लगा कर उसे उसके ऊपर चिपका दो और उसके सूख जाने पर गत्ते के सामने की ओर से मध्य में दोनों किनारों से एक एक इंच हट कर आध इंच चौरसी से दो छेद कर लेने चाहिए और फिर उन छेदों में फीता डाल कर ऊपर से उल्टा कर गांठ लगा देनी चाहिए। गत्ता तैयार है। इसी गत्ते को आफिस की सिंगल फाईल भी कहते हैं।

आफिस फाईल

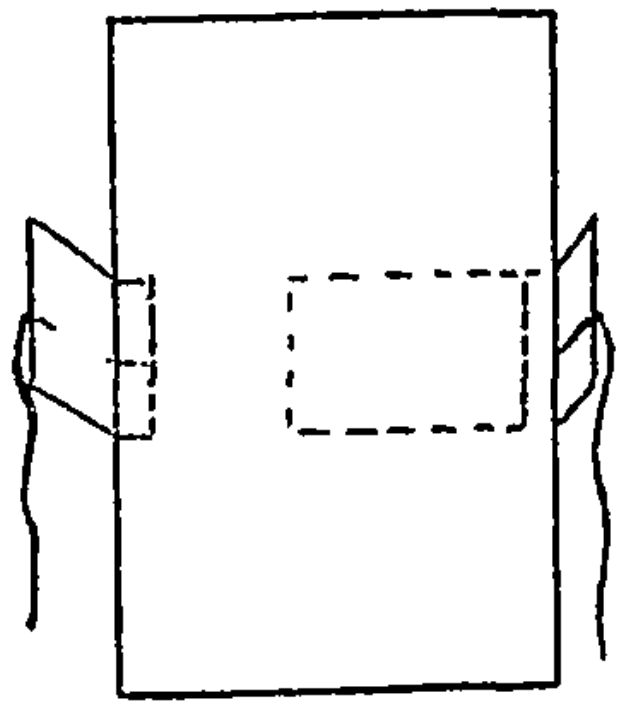

६० आफिस फाइल

सिंगल दफ्तर की फाइल का वर्णन ऊपर कर दिया गया है इसके अतिरिक्त और भी कई प्रकार की फाइलें दफ्तरों के प्रयोग में आती हैं। जैसे डवल फाइल कानीफडेशल फाइल और इसके अतिरिक्त मोटे कागज की बनी हुई फाइलें जिनके अन्दर पेपर चिपका दिये जाते हैं या स्टिच कर दिये जाते हैं।

डवल फाईल

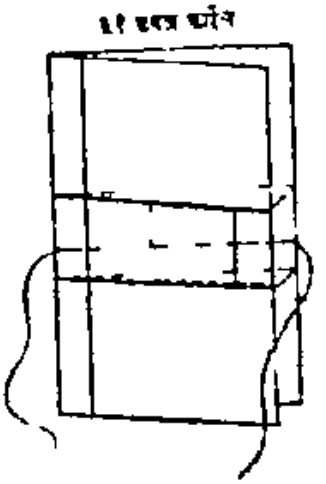

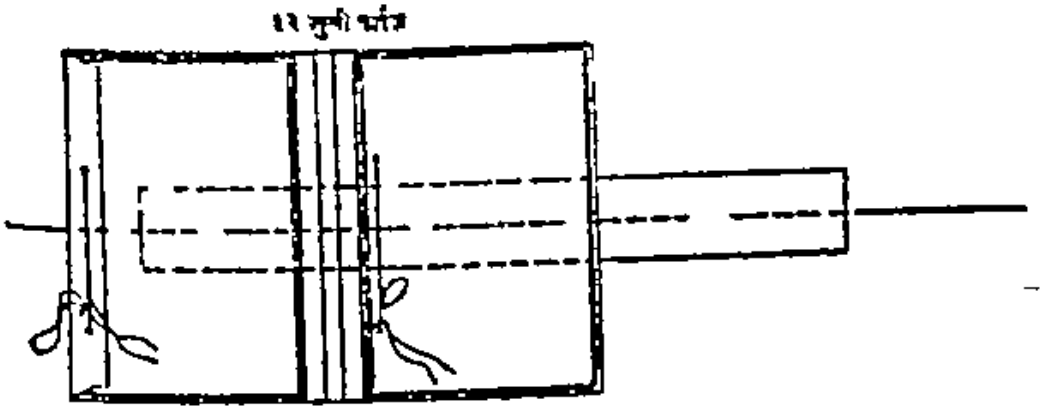

सिंगल फाइल को ही डवल फाइल बना दिया जाता है। केवल इसके ऊपर जो चार इंच चौड़ी मोटे कागज की माऊंट की हुई

पट्टी के स्थान पर एक मोटे कागज या पतले गत्ते का पूरा कवर कपडे द्वारा गत्ते के साथ चिपका दिया जाता है।

सामान—

गत्ता	चार पौएड	10×14 इंच	एक
गत्ता	एक पौएड	10×14 इंच	एक
बाईंडिंग क्लाथ		11×16 इंच	एक
कागज खाकी पतला		फुल शीट	एक
रिंग			चार
टैग			दो
फीता		30×½ इंच	एक

बनाने की विधि—बाइंडिंग क्लाथ की ग्यारह इंच चौड़ाई में से तीन पट्टिया लम्बी काटो। एक पट्टी चार इंच चौड़ी, दूसरी पट्टी तीन इंच चौडी, तीसरी पट्टी चार इंच चौडी।

चार इंच चौडी पट्टी पर लई लगा कर उसे फटे के ऊपर फैला दो और फिर उसके ऊपर मोटे और पतले गत्ते को इस प्रकार रखो कि दोनों के किनारों का बीच का अन्तर दो इंच हो और एक एक इंच बाईंडिंग क्लाथ दोनों गत्तों के ऊपर आ जाये। गत्तों को रखकर बाइंडिंग क्लाथ को उसके साथ चिपका कर बढ़े हुए किनारों को उसके अन्दर की ओर मोड दो और इसके पश्चात् तीन इंच चौडी पट्टी लेकर उसमें से ढाई इंच पट्टी काट दो और बाकी 13 इंच लम्बी पट्टी पर लई लगाकर जुड़े हुये गत्ते को

अन्दर की ओर ऊपर वाली पट्टी के अनुसार चिपका दो। यह पट्टी दोनों गत्तों के ऊपर आध आध इंच चढ़ी रहनी चाहिए और फिर उसे हाथ से दबा कर जमा दो। इसके पश्चात पतले गत्ते के दूसरे किनारे पर लई द्वारा इस प्रकार चिपकाओ कि कपडे की पट्टी गत्ते के ऊपर एक इंच और गत्ते के अन्दर की ओर तीन इंच रहे और फिर इसके बढे हुये किनारों को कैंची से काट दो। इसके पश्चात् खाकी कागज के शीट में से एक टुकड़ा 10 × 15 इंच का और दो टुकडे 9×13 के और एक टुकड़ा 9 × 15 इंच काट लो।

पहले 9 × 15 इंच वाले टुकड़े पर लई लगा कर उसे एक पौण्ड वाले गत्ते के ऊपर इस प्रकार चिपकाओ कि कागज बाई-डिंग क्लाथ लगे हुये स्थान के ऊपर दोनों ओर से एक जैसा रहे और ऊपर तथा नीचे वाले सिरे को अन्दर की ओर मोड़ कर चिपका दो।

10 × 15 इंच कागज के टुकडे को लेकर उसे लई द्वारा मोटे गत्ते के अन्दर इस प्रकार चिपकाओ कि बाइंडिंग क्लाथ वाला खुला रहे और तीनों किनारों को बाहिर की ओर मोड़ कर चिपका दो।

9×13 इंच के दोनों कागज पर लई लगा कर एक टुकडे को पतले गत्ते के अन्दर की ओर और दूसरे गत्ते को मोटे गत्ते के ऊपर चिपका दो और फिर गत्ते को किसी फट्टे के नीचे सूखने के लिये रखो। जब गत्ता सूख जाये तो सादी फाइल की तरह

चौरसी से दो छेद करके उसमे फीता डाल दो और मोटे गत्ते के ऊपर वाई डिंग क्लाथ लगे हुय भाग पर गत्ते के पिछले किनारे से एक इच हट कर दो छेद रिंग डालने के लिए करो और फिर उनमे रिंग फसा कर फिट कर दो। इसी प्रकार के दो छेद पतले गत्ते के अग्र भाग मे करके उसमे भी रिंग फिट कर दो और फिर उन रिंगों के अन्दर टैग डाल दो।

कानफिडेंशल फाइल

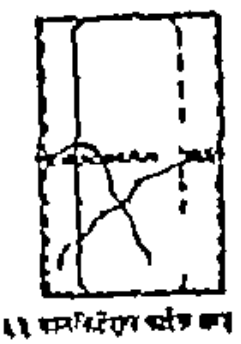

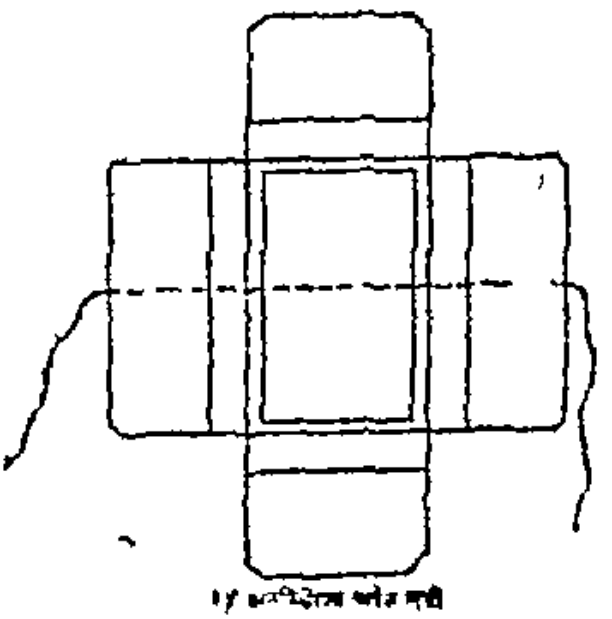

सामानः–

बाइंडिंग क्लाथ	30 × 36 इंच	एक
गत्ता चार पौंड	10 × 14 इंच	एक
कागज मोटा रगदार	30 × 36 इंच	एक
फीता	30 × ½ इंच	एक

बनाने की विधिः—

मोटे कागज के शीट के ऊपर उपरोक्त चित्र अनुसार रेखायें खेंचो और फिर क ख ग घ वाले भाग को कैंची द्वारा काट दो। इसके पश्चात् चारों किनारों के कोने भी तिर्छे तराश दो। फिर इस कागज के ऊपर लई लगाकर कागज को बाई डिंग क्लाथ के साथ चिपका दो और इसे किसी तख्ते के नीचे दबा कर सुखा लो। सूख जाने के पश्चात् इसे निकाल कर बाइ डिंग क्लाथ को प्रत्येक किनारे से आध इंच हट कर काट दो और फिर आध इंच छोडे हुए बाई डिंग क्लाथ को लई लगा कर कागज के अन्दर मोड़ कर चिपका दो। फिर 10 × 14 इंच वाले भाग पर लई लगा कर उसके ऊपर गत्ता चिपका दो। इसके पश्चात मोटे कागज के आकार का एक पतला कागज काट कर गत्ते की अन्दर की ओर से चारों किनारों तक चिपका दो और फिर गत्ते के अन्दर चौरसी द्वारा छेद करके फीता डाल दो। च छ वाला भाग पहले अन्दर की ओर मोड़ो और उसके ऊपर ज तथा उसके ऊपर झ को मोड कर फीता बाध दो।

कागज चिपकाने वाली फाइल

सामानः—

पतले खाकी कागज	4 × 15 इंच	बीस
मोटा खाकी कागज	24 × 15 इंच	एक

बनाने की विधि

तले कागज के टुकड़ों के बीच में एक तह देकर दोहरा कर लो और फिर मोटे कागज को लम्बाई की ओर से दोहरा कर लो और पतले कागजों को मोटे कागज के बीच में रखकर सूई तागे से सी दो फाइल तैयार है।

इकहरे गत्तों की फाइल

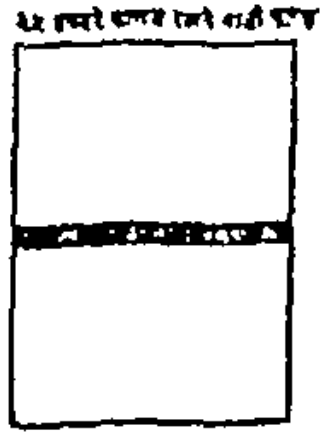

सामान—

गत्ते दो पौण्ड के	8 × 14 इंच दो
गत्ते की पट्टिया	14 × 1 इंच दो
माइंडिंग क्लाथ	8 × 16 इंच एक
अबरी	½ शीट
पतला खाकी कागज	7 × 13½ इंच दो
थाइलैंट	थोड़ा
टैग	एक

बनाने की विधि

बाईंडिंग क्लाथ के दो टुकडे बराबर चार इंच चौडे 15 इंच लम्बे बना लें। एक टुकडे पर लई लगा कर उसके ऊपर गत्ता चढ़ा और एक गत्ते की पट्टी एक सेध मे $\frac{1}{8}$" के अन्तर पर रखो। बड़ा गत्ता कपडे के ऊपर एक इंच चढ़ा रहे गत्ते और टुकडे को चिपका कर किनारे मोड़ कर पिछले दो इंच कपड़े के टुकडे को मोड कर चिपका दो। इसी प्रकार दूसरे गत्ते को भी बना लो। जब दोनों गत्तों पर कपड़ा लग जाये तो क्वाटर बाऊंड जिल्द की तरह दोनों गत्तों पर अबरी चिपका कर अन्दर की ओर से कागज लगा दो और गत्तों को दबा दो। सूखने पर गत्तों को निकाल कर दोनों गत्ते की छोटी पटियों पर दो दो छेद पंच द्वारा करके उसमें आइलैट फिट कर दो और टैग डालकर बांध दो। फाइल तैयार है।

कवर फाईल

सामान—

गत्ते	दो पौंड	10 × 14 इंच	दो
गत्ते की पट्टी		$1\frac{1}{2}$ × 14 इंच	एक
बाई डिंग क्लाथ		23 × 11 इंच	एक
बाई डिंग क्लाथ		5 × $13\frac{1}{2}$ इंच	एक
अबरी		9 × $13\frac{1}{2}$ इंच	दो
आइलैट			दो
टैग			एक

बनाने की विधि

23" × 11" वाले बाइंडिंग क्लाथ पर लई लगाकर दोनों गत्तों और गत्ते के छोटे टुकड़े के फुल बाऊंड जिल्द की तरह कपड़े के ऊपर रख दो और फिर कपड़ों के किनारों को गत्तों को अन्दर की ओर मोड़ दो। छोटा टुकड़ा अर्थात् 1 इंच वाला गत्ता दोनों गत्ता के बीच में रहे और गत्ते का पट्टी का बड़े गत्तों से एक सूत का अन्तर अवश्य होना चाहिए। जब गत्तों के ऊपर बाईंडिंग क्लाथ अच्छी तरह से चिपक जाये तो 5" × 1½" वाले बाईंडिंग क्लाथ के टुकड़े पर लई लगा कर उसे मध्य में इस प्रकार चिपकाओ कि बीच की पट्टी से आस पास के दोनों गत्तों के ऊपर एक जैसी चौड़ाई का कपड़ा चिपके और फिर अलरी पर लई लगाकर पोस्तीन की तरह दोनों गत्तों के अन्दर की ओर चिपका दो और फिर एक गत्ते के पिछले किनारे से आध इंच हट कर छः इंच के अन्तर पर दो छेद करके उनमें आइलेट रख कर पंच द्वारा फिट कर दो और टैग डाल दो। फाईल तैयार है।

ब्लाटिंग पैड बनाने की विधि

ब्लाटिंग पैड भिन्न भिन्न साइजों के बनाये जाते हैं। परन्तु बनाते समय इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए कि पैड के अन्दर या तो पूरा ब्लाटिंग फिट हो जाये और या आधा ब्लाटिंग फिट हो जाये। दूसरे साइज के पैड बनाने से ब्लाटिंग

पेपर के टुकड़े व्यर्थ जाते हैं। ब्लाटिंग पैड तीन प्रकार के बनते हैं।

(1) साधारण ब्लाटिंग पैड।

(2) पूरे किनारे वाला ब्लाटिंग पैड।

(3) फोल्डिंग ब्लाटिंग पैड।

साधारण ब्लाटिंग पैड

(1) गत्ता	15 × 12 इंच	एक
(2) सफेद कागज	$11\frac{1}{2} \times 14\frac{1}{2}$ इंच	दो
(3) मोटा कागज	1 फुट × 1 फुट	एक
(4) पतला ब्लाटी कागज	1 फुट × 1 फुट	एक
(5) बाई डिंग क्लाथ	$1\frac{1}{2}$ फुट × $1\frac{1}{2}$ फुट	एक

(6) बाई डिंग क्लाथ की एक इंच चौड़ी पटियां चार। दो 12 इंच लम्बी, दो 15 इंच लम्बी।

सब से पहले 1 फुट × 1 फुट मोटे कागज के टुकड़े के ऊपर सिल से एक कोने से दूसरे कोने तक तिर्छी लाइन लगाओ और

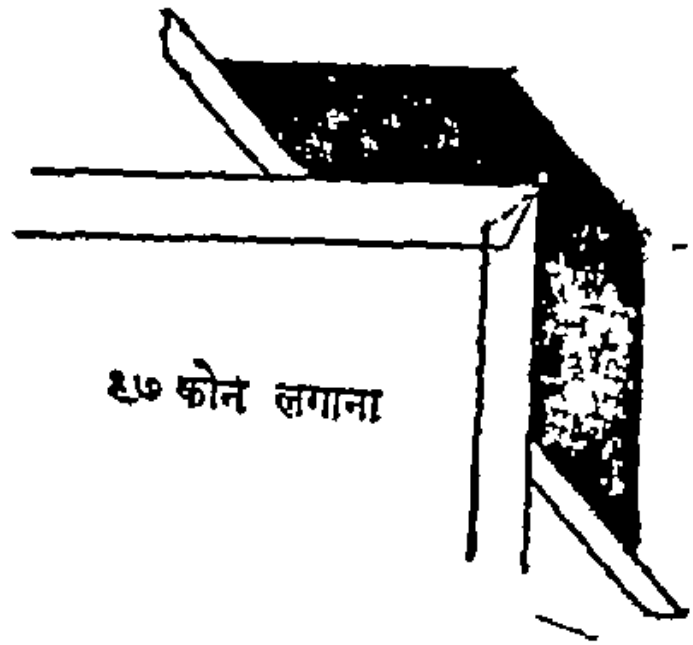

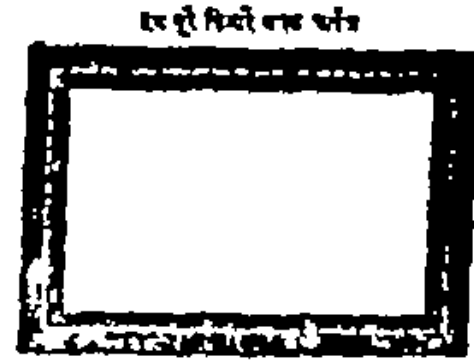

उसके पश्चात् तीसरे कोने से चौथे तक दूसरी तिर्छी लाईन लगाओ। फिर लगी हुई लाईनों को कैंची से काटो। चार त्रिकोन टुकड़े बन जायेंगे। इसी प्रकार वाइ डिंग क्लाथ के भी चार टुकड़े कर लो। फिर मोटे कागज के टुकड़ों के ऊपर लई लगा कर वाई डिंग क्लाथ के टुकड़े के ऊपर इस प्रकार रखो कि, मोटे कागज और कपड़े की चौड़ाई वाला भाग कपड़े की चौड़ाई वाले भाग से तीन सूत पीछे रहे और कागज दाई और वाइ ओर से

एक जैसा हट कर कपड़े के साथ चिपक जाये। इसी प्रकार चारों टुकड़ों को कपड़े के ऊपर चिपका लो। जब चारों टुकड़े चिपक जायें तो कागज की चौड़ाई वाले भाग पर लई लगा कर कपडे को कागज के ऊपर मोड़ दो और फिर पोलें कागज के चार टुकड़े इसी प्रकार काट कर कागज के ऊपर। इस प्रकार चिपकाओ कि चौडाई वाले भाग पर मुड़े हुये कपडे का आधा भाग पतले कागज के नीचे आ जाये। जब चारा कोने इस प्रकार तैयार हो जायें तो उनको किसी पत्थर के नीचे सूखने के लिये दबा देना चाहिये।

बाईंडिंग क्लाथ की चारों पट्टियों को लई लगा कर गत्ते के चारों किनारों पर इस प्रकार चिपकाना चाहिये कि कपड़े की चौड़ाई गत्ते के दोनों ओर एक जैसी रहे। जब सब पट्टिया चिपका ली जायें तो गत्ते की एक ओर सफेद कागज का टुकड़ा लई द्वारा चिपका देना चाहिए। कागज चिपकाने के पश्चात् गत्ते को उल्टा करके इसे साफ गट्टे के ऊपर रख लेना चाहिये। फिर चारों कोनों को गत्ते के नीचे रख कर उनके कोने और किनारे इस प्रकार मिलाने चाहियें कि मोटे कागज के साथ लगा हुआ फालतू कपड़ा बाहिर की ओर रहे। फिर इस फालतू कपड़े को गत्ते के ऊपर उल्टा कर लई द्वारा चिपका देना चाहिए। कोने चिपकाते समय कोने की नोक को कैंची से तराश लेना चाहिये। ताकि यह गत्ते के ऊपर उल्ट कर अच्छी तरह आपस में मिल जायें। जब चारों कोने चिपक जायें तो ऊपर से सफेद कागज के

टुकड़े पर लेई लगाकर कागज को चिपका देना चाहिये। फिर पैड को कुछ देर के लिये किसी पट्टे के नीचे अच्छी तरह दबा देना चाहिये और फिर सूखने पर निकाल कर कोनों के अन्दर ब्लाटिंग के टुकड़े रख देने चाहियें।

पूरे किनारे वाला ब्लाटिंग पैड

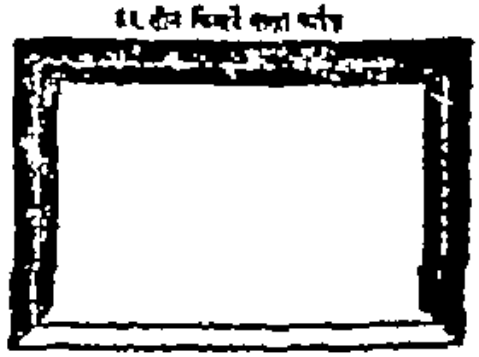

११. तीन किनारे वाला पैड

पूरे किनारे वाला ब्लाटिङ्ग पैड भी दो प्रकार के होते हैं। एक वह जिसका एक किनारा खुला और तीन किनारों पर पट्टी लगी हुई होती है और दूसरे वह जिसके चारों किनारों पर पट्टी लगी रहती है। दोनों प्रकार के ब्लाटिंग पैड बनाने के लिए सामान एक जैसा ही लगता है। केवल तीन तरफ वाली पट्टी में एक गत्ते का टुकड़ा और एक बाईंडिंग क्लाथ का टुकड़ा कम लगाया जाता है।

सामान—

(1) चार पौंड का गत्ता 15×12 इंच एक

(2) दो पौंड गत्ते की दो इंच चौड़ी पट्टियां 15×2 इंच, 12×2 इंच } चार

(3) बाई डिंग क्लाथ	17 × 15 इ च	एक टुकड़ा
(4) कागज सफेद	16 × 12 इ च	दो

बनाने की विधि

सबसे पहले चारों गत्ते की चौडी दो इ च पट्टियों को चार पौंड वाले गत्ते के ऊपर इस प्रकार रखो कि चारों पट्टिया बाहर वाले कोने के साथ मिल जायें फिर पट्टियों के जो कोने एक दूसरे के ऊपर चढे हुये हैं उनकी बलमे काट दो अर्थात् कोने के बीच में अर्थात् कोना न० एक और नं० दो के ऊपर दो फुन्ना रखकर रेखा खेंचो और फिर इसी प्रकार की रेखा कोना न० तीन और न० चार के बीच मे भी खेंचो। पट्टियों के ऊपर रेखाओं के निशान को कैंची द्वारा काट दो। ऊपर की पट्टिया जब काट चुको नीचे की पट्टिया भी उसी प्रकार काट लो। पट्टियों के चारों कोने आपस मे मिल जायेंगे फिर इसके पश्चात् पट्टियों को उठा कर इसी प्रकार बाई डिंग क्लाथ के टुकडे के ऊपर फैला दो और फिर पट्टियों के अन्दर वाले भाग पर पट्टियों से आध इ च अन्दर की ओर हट कर चार रेखायें खेंचो और फिर उन रेखाओं को कैंची द्वारा काट कर बीच वाला कपडे का टुकडा निकाल दो। बीच वाले टुकडे से एक इ च चौडा दो पट्टिया लम्बाई मे से काट लो और उन दोनों पट्टियों को लई द्वारा गत्ते की चौड़ाई वाले एक किनारे पर इस प्रकार चिपकाओ कि कपडे की पट्टी गत्ते के दोनो ओर एक जैसी रहे फिर गत्ते के एक ओर $14\frac{1}{2} \times 11\frac{1}{2}$" सफेद कागज का टुकड़ा लई द्वारा चिपका कर गत्ते को एक ओर रख दो और

फिर पट्टियों वाले वाई डिंग वलाथ के उल्टी ओर लई लगा कर चारों गत्ते की पट्टियों को कपडे के ऊपर इस प्रकार रखो कि पट्टियों से कपडे का अन्दर का भाग आध इंच और बाहर का भाग एक इंच रहे। इसके पश्चात् अन्दर वाले भाग के कोने कैंची से काट कर कपडे को पट्टियों के ऊपर मोड़ दो और पट्टियों के बाहिर वाले बढ़े हुये कपडे का एक भाग लम्बाई वाला एक पट्टी के ऊपर मोड़ दो और फिर इन चारों पट्टियों को उठा कर किसी साफ फट के ऊपर रख दो और 1½ इंच चौड़ी चार पट्टियां सफेद कागज की गत्ते वाली पट्टियों की लम्बाई के आधार पर काट कर पट्टियों के अन्दर की ओर लई द्वारा चिपका दो। जब कागज की पट्टियां चिपक जायें तो वाई डिंग वलाथ पर लगी हुई पट्टियों को उठाकर गत्ते के ऊपर इस प्रकार रख दो कि चारों पट्टियों के किनारे गत्ते के किनारों से मिल जायें और कपड़ा लगे हुये गत्ते के किनारे के साथ जिस पट्टी के अन्दर मुड़ा हुआ कपडा लगा हुआ है यह उस किनारे के साथ रहे इसके पश्चात् पट्टी के साथ तीनों किनारों पर जो कपडा बढ़ा हुआ उसे गत्ते के पिछली ओर मोड़ कर गत्ते के साथ चिपका दो और फिर गत्ते के पीछे सफेद कागज का टुकड़ा लई द्वारा चिपका कर गत्ते को किसी फट्टे के नीचे सूखने तक दबा दो।

फोल्डिंग ब्लाटिंग पैड

इस ब्लाटिंग पैड में ब्लाटिंग रखने वाले स्थान के साथ साथ राईटिंग पैड को गाइ लिफाफे और कलम पेंसल आदि रखने

के लिए भी स्थान बना रहता है। इसे सफरी ब्लाटिंग पैड भी कहते हैं। यह कई प्रकार का होता है। आम प्रचलित और साधारण फोल्डिंग पैडों के बनाने की विधि आगे दी जाती है।

सामान--

गत्ता चार पौंड के	12 × 15 इंच एक
गत्ता दो पौण्ड का	13 × 16 इंच एक
बाइंडिंग क्लाथ	18 × 26 इंच एक टुकड़ा
बाईंडिंग क्लाथ	6 × 12 इंच एक टुकड़ा
कागज सफेद	13 × 16 इंच एक
कागज सफेद	12 × 15 इंच एक

बनाने की विधि

पहले 13 × 16 इंच के दो पौण्ड वाले गत्ते पर आध आध इन्च के फासले पर चारों किनारों से रेखायें खींचो और चारों कोनों में जो चकोर टुकड़े रेखाओं के बाहर बने हुये हैं उनको कैंची से काट दो। इसके पश्चात् रेखाओं के ऊपर लोहे का स्टेटज रखकर चाकू से हल्की लाइनें लगाओ। जब चाकू की रेखायें गत्ते की आधी मोटाई तक पहुंच जायें तो रेखाओं के बाहर वाले आध इंच को धीर से अन्दर की ओर मोड़ दो और चारों कोनों के ऊपर कागज का टुकड़ा सरेश द्वारा चिपका दो। यह एक ढक्कने के ढक्कने के प्रकार का बन जायेगा। इसके पश्चात् चार पौण्ड वाले गत्ते को चारों तरफ से एक एक सूत काट दो और पहले बनाये गये ढक्कने को इस गत्ते के ऊपर रख दो। इसके पश्चात् बाइंडिंग क्लाथ

18 × 26 इंच वाले टुकड़े पर लई लगा कर ढकने और नीचे वाले गत्ते के ऊपर इस तरह चिपका दो कि बक्स के ऊपर ढकना लगा हुआ प्रतीत हो। चढ़े हुये कपड़े को ऊपर वाले हत्थ के अन्दर और गत्ते के अन्दर की ओर मोड़ दो। जब कपड़ा अच्छी तरह चिपक जाये तो ऊपर वाले ह[illegible] मध्य से अर्थात छः इंच के फासले पर एक रेखा खेंचो और उस रेखा के ऊपर स्टेटस या फटी रख कर चाकू से इतना गहरा टक लगाओ कि ½ हिस्सा गत्ते की मोटाई कट जाये। रेखा के निशान पर किनारों को भी कैंची से काट दो और गत्ते को बाहिर की ओर मोड़ कर उसके बीच में एक इंच चौड़ा बाइंडिंग क्लाथ का टुकड़ा इस प्रकार चिपकाओ कि वह दोनों ओर एक जैसा रहे और [illegible] उल्टा में कोई दिक्कत न हो। इतना कर चुकने के पश्चात् एक मोटा कागज 11 × 14 इंच लेकर उसके चारों कोनों पर बाइंडिंग क्लाथ के कपड़े के कान बना कर साधारण पैड के आधार पर साधारण ब्लाटिंग पैड की विधि से चिपका दो और फिर इस मोटे कागज को गत्ते के ऊपर चिपका दो और कटे हुये ढकने के नीचे वाले भाग के अन्दर एक गत्ते के टुकड़े के ऊपर अबरी आदि लगाकर गत्ते के किनारों को कटे हुये ढकने के अन्दर फंसा कर अन्दर से कागज को चिपका दो। यह एक खाना बन जायेगा जो राइटिंग पैड और कार्ड लिफाफे आदि रखने के काम आयेगा। खाने लगे हुये गत्ते के अन्दर ब्लाटिंग पेपर रख कर ऊपर से ढकना बन्द कर दें।

राइटिंग पैड बनाना

राइटिंग पैड भिन्न भिन्न साइजों के बनाये जाते हैं। उसके पन्नों का साईज लिफाफे के साईज के आधार पर निश्चित किया जाता है। कई एक मोड से लिफाफे मे आ जाते हैं और कई दो मोड़ देने से लिफाफे मे आ जाते हैं और कई उससे बड़े होते

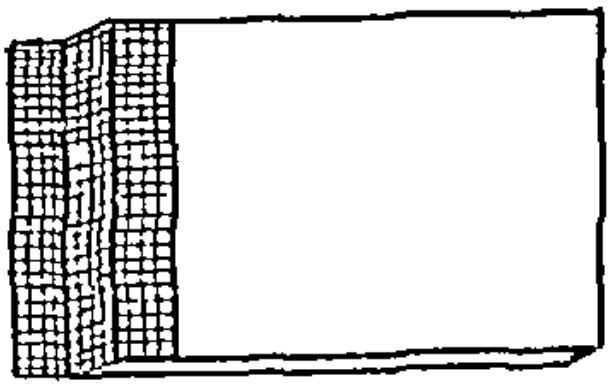

१०० राइटिंग पैड बनाना

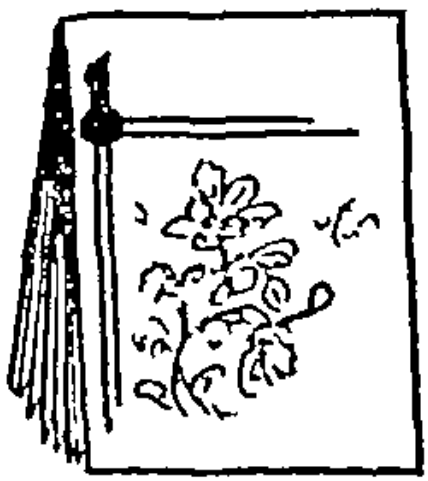

१०१ राइटिंग पैड बना हुआ

हैं। जिस प्रकार के और जिन साइजों के राइटिंग पैड बनाने हों उतने साइजों के कागजों को काट कर कागजों के चारों किनारों

को ठोक कर मिला लेना चाहिये और फिर ऊपर वाले सिरे के किनारों को किसी पट्टी के ऊपर रख कर ऊपर से एक पट्टी देकर दबा देना चाहिए। यदि इस किनारे के कागज साफ न कटे हुये हों तो उनकी कटाई मशीन द्वारा अथवा चाकू द्वारा पहले कर लेनी चाहिए और फिर उस किनारे वाले कागजों के ऊपर अच्छी सरेश ब्रुश द्वारा लगा देनी चाहिये। अच्छी सरेश लगाने के पश्चात पतला जाली अथवा मलमल का कपड़ा उसके ऊपर चिपका देना चाहिये। कपड़े के स्थान पर यदि पैकिंग पेपर का टुकड़ा लगा दिया जाये तो भी ठीक है। कपड़ा या पैकिंग पेपर पैड की मोटाई से एक इंच अधिक चौड़ा होना चाहिए जो नीचे वाले गत्ते के साथ चिपकाया जा सके। जब सरेश सूख जाये तो पैड को उठा कर सरेश लगे हुए कपड़े के आस पास जो फालतू कपड़ा हो उसे कैंची द्वारा काट देना चाहिये। इसके पश्चात् कागजों के साईज का एक गत्ता काट कर पैड के नीचे रख देना चाहिये और राइटिंग पैड के पुश्ते के साथ जो बढ़ा हुआ एक इंच कपड़ा या कागज एक इंच बढ़ा हुआ है उसके ऊपर सरेश लगाकर गत्ते के ऊपर चिपका देना चाहिये। इसके पश्चात् ब्लाटिंग पेपर का एक टुकड़ा जो चौड़ाई में ब्लाटिंग पैड की चौड़ाई के बराबर और लम्बाई में ब्लाटिंग पैड की लम्बाई + मोटाई + एक इंच लेकर उस ब्लाटिंग पैड के ऊपर वाले भाग से मिला दो और फिर ब्लाटिंग पैड के पुश्ते का ऊपर ब्लाटिंग को एक मोड़ देकर ब्लाटिंग पैड को उल्टा रख कर ब्लाटिंग के सिरे

पर सरेश लगाकर गत्ते के साथ चिपका दो। इसके पश्चात् टाइटल पृष्ठ जो चौड़ाई मे पैड की चौड़ाई के बराबर और लम्बाई में ब्लाटिंग पेपर की लम्बाई से एक इंच बड़ा हो को लेकर ब्लाटिंग पेपर की भांति उसे भी गत्ते के ऊपर सरेश द्वारा चिपका देना चाहिये और फिर पैड के तीनों किनारों को कटाई मशीन द्वारा कर लो, पैड तैयार है।

एलबम बनाने की विधि

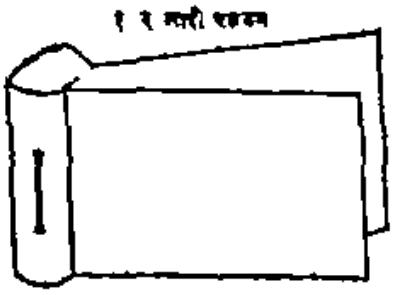

एलबम जो तस्वीरें रखने के काम आती है उसके भिन्न भिन्न साईज होते हैं और उसके अन्दर जो कागज लगाये जाते हैं वह काले, स्लेटी, या मोंगिया रंग के होते हैं और उन्हें पैस्टल पेपर कहते हैं। साईज का निश्चय आवश्यक्तानुसार कर लेना चाहिए।

सामान—

गत्ता	दो पौण्ड	8 × 10 इंच एक
गत्ता	दो पौण्ड	8 × 8½ इंच एक
गत्ता	दो पौण्ड	8 × 1 इंच एक
रिंग	(आइलैट)	चार
फीता	रेशमी	15 × 1 इंच एक
बाईंडिंग क्लाथ		18 × 14 इंच एक

पैन्टल पेपर 7½ × 9½ इंच 26 शीट

था कि मफेद पतला गुद्दी वाला कागज 7½ × 9½ इंच 24 शीट

बनाने की विधि

सबसे प्रथम 8 × 10 इंच वाले गत्ते पर 9 × 11 इंच वाईडिंग काट कर उस पर लेई लगाकर गत्ते की एक ओर चिपका दो और किनारों से वाईडिंग क्लाथ को अन्दर की ओर मोड़ दो। इसके पश्चात् 8 × 8½ इंच और 8 × 1 इंच वाले गत्ते को लेकर 9 × 14 इंच वाइडिंग क्लाथ के ऊपर लई लगाकर गत्तों को इस प्रकार जमाओ कि गत्ते दोनों गत्तों की लम्बाई दस इंच रहे। दोनों गत्तों के बीच ¼ इंच अन्तर रहेगा। छोटे गत्ते की ओर कपड़ा 3½ इंच बड़ा रहना चाहिए। पहले गत्ते के तीनों किनारों से कपड़े को मोड़कर गत्ते के अन्दर की ओर चिपका देना चाहिए फिर छोटे गत्ते के पिछली ओर वाले 3½ इंच बढ़े हुये कपड़े को उल्टा कर छोटे गत्ते और बड़े गत्ते के ऊपर चिपका देना चाहिए और जहां दोनों गत्ते का अन्तर है वहां पर गत्ते को उल्टा कर लकड़ी की गुरवी द्वारा दबा कर रेखा खेंच देना चाहिए ताकि उस स्थान पर एक नाली सी पड़ जावे और गत्ते को उल्टते पल्टते समय कोई दिक्कत न हो इसके पश्चात पैन्टल पेपर का एक एक शीट दोनों गत्ते के अन्दर की ओर लई द्वारा चिपका देना चाहिये और फिर गत्ते को किसी बोर्ड के नीचे दबा कर सूखने पड़े रहने देना चाहिये।

जब गत्ते सूख जायें तो निकाल कर उन दोनों गत्तों को एक दूसरे के ऊपर बराबर रख कर दो दो इंच दोनों ओर किनारा छोड कर और गत्ते की छोटी पट्टी से आध इंच अन्दर की ओर पंच द्वारा दोनों गत्तों में दो २ छेद कर लेने चाहियें और फिर चारों गत्तों के अन्दर आइलैट डाल कर पंच द्वारा फिट कर लेने चाहियें।

जिस प्रकार और जिस स्थान पर गत्तों के अन्दर छेद किये हैं उसी प्रकार पेस्टल पेपरों में भी दो दो छेद तथा पतले कागजों में भी दो दो छेद करके पतले कागजों को प्रत्येक पेस्टल पेपर के ऊपर एक २ रख कर और नीचे फीते द्वारा कागजों को गत्ते के साथ पिरो कर बाध देना चाहिये।

डबल कवर वाली एलबम

उपरोक्त विधि अनुसार बनाये हुये एलबम के दोनों गत्ते अलग २ हैं। अब दोनों गत्तों को मिलाकर कवर बनाने की विधि

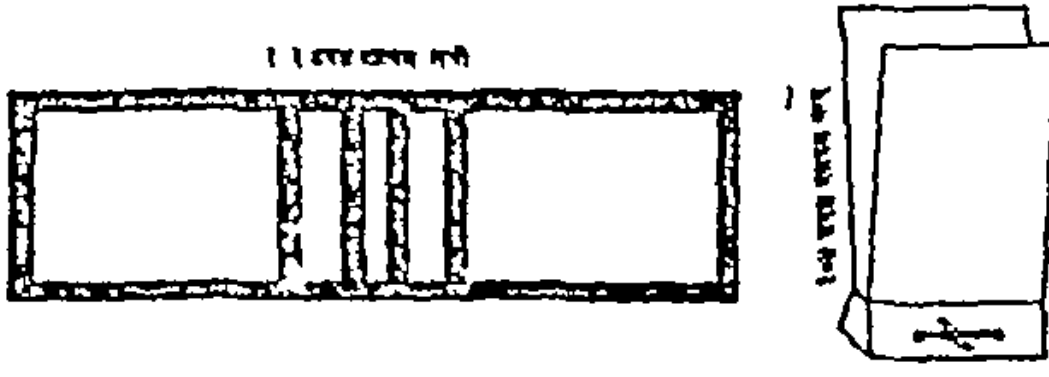

लिखी जाती है। अन्य सारा कार्य तथा सामान उसी प्रकार ही

लगेगा। पैन्सल वाईं डिंग क्लाथ का टुकड़ा २० इंच लम्बा और नौ इंच चौड़ा लगेगा। इसके अतिरिक्त एक चौड़ा तथा आठ इंच लम्बा गत्ते का एक और टुकड़ा भी लगेगा।

बनाने की विधि

बाइंडिंग क्लाथ में से 3½ चौड़ा टुकड़ा काट लेना चाहिये और शेष 22½ इंच टुकड़े पर लई लगाकर गत्ते को इस प्रकार टिकाना चाहिये कि ऊपर वाले दोनों टुकड़ों की लम्बाई दस इंच रहे और बीच वाले गत्ता के टुकड़े का अन्तर दोनों बार से एक एक सूत रहे। इसके पश्चात गत्ता के चारों किनारों से कपड़े को अन्दर मोड़ कर चिपका देना चाहिए। इसके पश्चात् 3½ वाले टुकड़े पर लई लगाकर बीच के जोड़ों के ऊपर चिपका देना चाहिए और फिर पेपर कटर द्वारा जोड़ों के बीच में घिस कर भरी बना देनी चाहिये और गत्ते के अन्दर की ओर इसी प्रकार पैन्सल पेपर का शीट चिपका देन चाहियें। अन्य सारी विधि पहले की अनुसार है।

रूईदार कवर वाली एलबम

इसके बनाने की विधि डबल कवर वाली एलबम के प्रकार ही है। केवल गत्तों पर कपड़ा चढ़ाते समय गत्ते के ऊपर रूई की तह जमा दी जाती है और उसके ऊपर बाईंडिंग क्लाथ को चढ़ा कर गत्तों को पिछली ओर बाईंडिंग क्लाथ के किनारे को चिपका दिया जाता है। रूई केवल बड़े गत्तों के ऊपर चिपकानी

चाहिए। एक इंच वाली पट्टियों के ऊपर रूई चिपकाने की आवश्यकता नहीं। यदि बाजारी रूई रोल की हुई लगाई जाये तो उसकी सतह ठीक रहती है। रूई को गत्ते के ऊपर रखने से पहले गत्ते के ऊपर कहीं कहीं निशान लगा लेने चाहियें ताकि रूई गत्ते के साथ कहीं कहीं से चिपक आये। उसके पश्चात् वाई डिंग क्लाथ चढ़ाना चाहिए। अन्य सारी विधि उसी प्रकार है।

तसवीर मढ़ने की विधि

गत्ते और काग़ज द्वारा तस्वीरों को मढ़ने के तीन प्रकार होते हैं। पहला लटकाने वाला, दूसरा मेज़ आदि पर रखने वाला और तीसरा बटुए के प्रकार का।

पहला प्रकार

सामान—

गत्ता	चार पौंड वाला	10 × 8 इंच	एक
कागज़	काले रंग का	32 × 1 इंच	एक
कागज़	हल्के मलोटी रंग का	11 × ½ इंच	एक
कागज़	सफेद	7½ × 0½ इंच	एक
तसवीर		7 × 5 इंच	एक
गत्ता	पतला एक पौंड का	10 × 8 इंच	एक

सब से प्रथम एक पौंड वाले गत्ते के मध्य में साढ़े छः × साढ़े चार इंच की लाइनें लगा कर बीच का टुकड़ा चाकू और स्टेटज से काट दो इसके पश्चात् सलेटी कागज के डेढ़े पर रूई

१०५ लम्बी तस्वीर मढ़ना

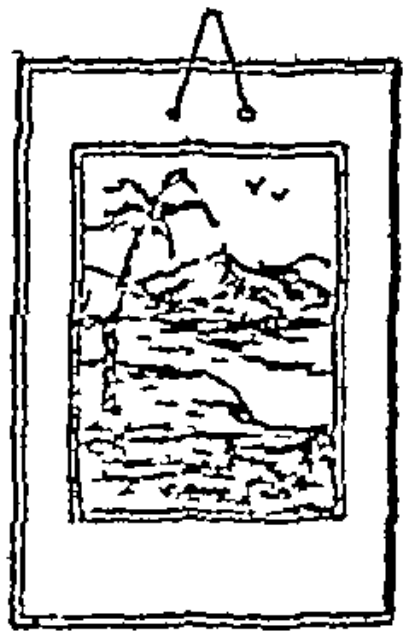

१०६ चौड़ाई में तस्वीर मढ़ना

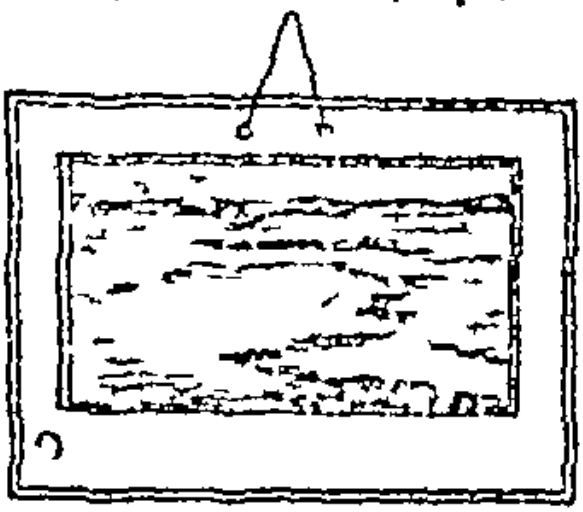

लगा कर उसको पतले गत्ते के ऊपर चिपका दो और बीच वाले कटे हुये भाग से कागज को काट कर अन्दर की ओर मोड़ दो और गत्ते की चौड़ाई की ओर से बढ़े हुए कागज को अन्दर की ओर मोड़ लो। फिर उस गत्ते को मोटे गत्ते के ऊपर रख कर कागज का बढ़ा हुआ भाग मोटे गत्ते के तीन ओर पिछली तरफ चिपका दो और फिर सफेद कागज पर लेई लगा कर गत्ते के पिछली ओर चिपका दो। मोटे गत्ते के साथ पतले गत्ते को चिपकाने से पहले मोटे गत्ते की चौड़ाई वाले एक भाग पर पतले कागज की पट्टी लेई द्वारा दोनों ओर लगा दो और यह भाग पतले गत्ते के ऊपर मुड़े हुए कागज वाले भाग के सामने होना चाहिए और चित्र इसी रास्ते फ्रेम के अन्दर फिट करना चाहिए।

दूसरा प्रकार

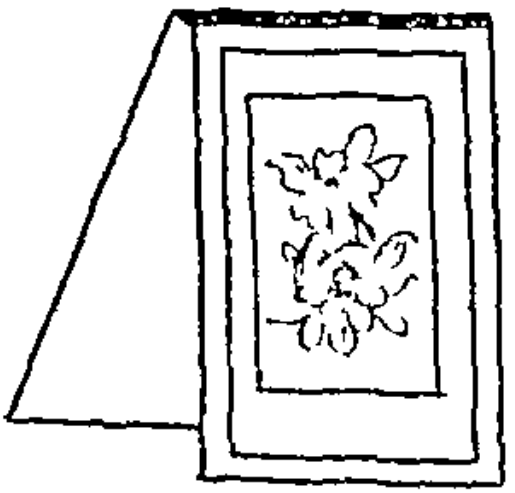

१०७ स्टैंड वाली तस्वीर मढ़ना

दूसरे प्रकार में सारी फ्रेम पहले प्रकार की भांति बना लेना चाहिए परन्तु गत्ते के पीछे कागज चिपकाने से पहले गत्ते के पीछे एक गत्ते की पट्टी चित्र नं० १०७ के आधार पर काटकर और उसके ऊपर बाइंडिंग क्लाथ का कपड़ा चढ़ा कर उसके एक सिरे को गत्ते के पीछे सरेश द्वारा चिपका देना चाहिए। यह गत्ते की पट्टी फ्रेम को मेज पर रखते समय उसके स्टैण्ड का काम देगी।

तीसरा प्रकार

यह एलबम या बटुवे के आकार का फ्रेम होता है। इसमें चित्र अन्दर की ओर लगे रहते हैं। इसके बनाने के लिए एक पौण्ड वाले गत्ते को उसी प्रकार बीच में से काट कर उसके ऊपर सनेटी कागज चिपका देना चाहिये और उस बढ़े हुये कागज को चारों किनारों का इसी गत्ते के पिछली ओर मोड़ देना चाहिये। इसी साइज का एक और गत्ता लेकर उसे भी इसी प्रकार बना लेना चाहिये और फिर चार पौण्ड के दो गत्ते चौड़ाई में पतले गत्ते से आध इंच अधिक हों, को लेकर फुल बाईंडिंग कवर के प्रकार उन दोनों गत्तों के ऊपर बाईंडिंग क्लाथ चढ़ा देना चाहिए।

खेंच कर उसके फालतू कागज को काट कर उन पर लई लगा कर डब्बे और ढक्कने के अन्दर चिपका दो। डब्बा तैयार है।

दूसरी प्रकार के डब्बे बनाने की विधि

दूसरी प्रकार के डब्बे बनाने के लिये ढकने वाले भाग का गत्ता 4½ इंच चौड़ा लेना चाहिये और उस पर रेखायें खेंच कर तथा फालतू गत्ते को काट कर ढक्कना बना लेना चाहिए और इसके बाहिर का कागज भी टुकड़ों के स्थान पर एक टुकड़ा ही लम्बा लेना चाहिए अर्थात् 11 × 14 इंच और अन्दर लगाने वाला सफेद कागज भी एक ही 10 × 12 इंच लेकर डब्बे के ऊपर और नीचे लगाना चाहिए। ऊपर वाला कागज लगाते समय ढकने को डब्बे के ऊपर रख कर ऊपर का कागज चिपका देना चाहिये ताकि ढक्कना और डब्बा कागज द्वारा मिल जाए और फिर अन्दर का कागज भी इसी प्रकार चिपका देना चाहिये।

चौरस डब्बों के अतिरिक्त गोल और त्रिकोन डब्बों के बनाने का रिवाज भी है हर प्रकार के डब्बों के बनाने के लिये गत्तों को काटने की विधि भिन्न है अन्य सारे कार्य पहले डब्बा के आधार पर ही किये जाते हैं। ~ समाप्त ~

देहाती पुस्तक भंडार
चावड़ी बाजार देहली 6

मु० क—यूनिटी प्रिंटिंग प्रेस, बाजार सीताराम, देहली।

व्यापार दस्तकारी अथवा कला व्यापार दर्पण

(ले० श्री शिवानन्द शर्मा भास्कर) शुद्ध तथा संशोधित तीसरा संस्करण

यदि आप चाहते हैं कि संसार के हर क्षेत्र का ज्ञान हो जाये तो यह पुस्तक पढ़िये। इसका प्रत्येक पृष्ठ खजाने की कुंजी है। किसी एक कार्य को हाथ में लेकर आप मालामाल हाजायेंगे। तेल, साबुन, छपाई, रंगाई, बुनाई दवा, चित्र आदि सब कुछ बनाने की विधि दी गई है यूरोप, अमरीका आदि देश धनवान हैं मगर भारत में लाखों मनुष्य बेकारी के कारण रात को भूखे सो रहते हैं। लाखों को भर पेट खाना नहीं मिलता। इसका एक मात्र कारण अपने समय को नष्ट करना है। अगर भारतवासी भी इसी व्यापारिक तरीके को अपनाए तो हमें आशा है कि हम भी निरन्तर धनवान बनते चले जायें, व्यापार से प्रेम रखने वाले भाइयों को इस पुस्तक का अध्ययन जरूर करना चाहिये। मू ॥। डाक व्यय ।।।=

इलैक्ट्रिक बैट्रीज

अब बिजली की रोशनी से कोई घर खाली नहीं रहेगा क्योंकि इलैक्ट्रिक बैट्रीज ले० नरेन्द्र नाथ नामक पुस्तक ने हर एक मनुष्य के लिए बिजली की रोशनी पैदा करने का सस्ता और आसान तरीका बता दिया है। इस पुस्तक की मदद से हर एक हिन्दी जानने वाला हर प्रकार की बिजली की बैट्रियां बनाना सीख सकता है और अपनी दुकान, मकान और बैठक आदि में थोड़ी लागत से बिजली की रोशनी, पंखे, बिजली की घण्टी रेडियो, मोटर के काम में लाउड स्पीकर आदि चला सकता है। हर किस्म की बिजली का काम सीखने वाले विद्यार्थी, हर प्रकार की बत्ती, टार्च सैल, टार्च लाइट, पाकेट लैम्प की मरम्मत करने वाले और प्रयोग में लाने वाले इलैक्ट्रिकल इन्स्टरुमैंट तथा टैलीफोन, वायरलैस व टैलीग्राफ के कर्मचारी और घर पर साइंस के तजुर्बे करने वालों के लिये लाभदायक पुस्तक है मूल्य ।।) डाक व्यय ।।।=)

प्रैक्टिकल फोटोग्राफी शिक्षा (सचित्र)

लेखक—राजेन्द्रगुप्त मिनि डायरेक्टर हालीवुड (अमरीका)

इस पुस्तक की मदद से साधारण मामूली पढ़ा लिखा आदमी एक पक्का और अनुभवी फोटोग्राफर बन सकता है इस पुस्तक को अमरीका इंगलैंड और हिन्दुस्तान की फोटोग्राफी से सम्बन्ध हजारों पुस्तकों में पांच साल की मेहनत के बाद तैयार किया गया है जगह २ समझाने के लिए सैकड़ों चित्र भी दिये गये हैं। मूल्य १॥) डेढ़ रुपया डाक खर्च ॥।-) चौदह आने।

बच्चों का वायरलैस—यह पुस्तक दिलचस्प प्रश्नवाचक रूप में बच्चों को वायरलैस रेडियो प्रोग्राम सुनने के लिये लिखी गई है यह खेल का खेल है और बच्चों का ध्यान खाम शरारतों से हटा कर अच्छे लाभदायक कामों में लगाने का उत्तम ढंग है वायरलैस टेलीग्राफी कोड इत्यादि भी सम्मिलित हैं स्वतन्त्र देश के बच्चों में टेक्निकल काम की धुन पैदा करने की पहली सीढ़ी है मूल्य केवल १।) सवा रुपया डाक व्यय ।।।) अलग।

बच्चों का टेलीफोन बनाना (ले०—चन्द्र प्रकाश मारुन)

इस पुस्तक में प्रत्येक प्रकार के टेलीफोन बनाने की विधियां बतलाई हैं। यदि आप ऐसी एक पुस्तक अपने बच्चों को ले देंगे तो आप देखेंगे कि वह टेलीफोन बनाकर अपने दोस्तों से गप शप लगा रहे होंगे। इस प्रकार उनका नया ज्ञान भी मिल जायगा और वे इस तरह के दूसरे अच्छे कामों में भी अपने को लगा सकेंगे। इस तरह उन्हें खेल में काम और काम में ज्ञान मिल जायगा। कीमत १।) सवा रुपया डाक व्यय सहित।

पता—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, देहली ६।